सरोकार

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 11 गोट चयनित कथाक संकलन)

सरोकार

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 11 गोट चयनित कथाक संकलन)

चयन एवम् संयोजन

नारायण प्रसाद सिंह

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

SROKAR

Collection of 11 selected stories of Jagdish Prasad Mandal compiled by Narayan Prasad Singh, Pallavi Publication, Nirmali, Supaul (2025)

ISBN: 978-93-48865-00-7
दाम: 290/- (भा.रु.)
स्वत्वाधिकार: © प्रकाशक
पहिल संस्करण: 2025

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: मानव आर्ट (पल्लवी प्रकाशन)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: सुश्री अनिका झा, उमरी (मधुबनी), बिहार: 847403
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। स्वत्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समस्त शिक्षक एवं शिक्षिका, उत्क्रमित मध्य सह +2 उच्च माध्यमिक विद्यालय, केवटना, घोघरडीहा, मधुबनी

समस्त शिक्षक एवं शिक्षिका, उत्क्रमित +2 उच्च माध्यमिक विद्यालय, केवटना, घोघरडीहा, मधुबनी

अनुक्रम

प्रस्तावना	**viii-xviii**
कथामे सामाजिक सरोकार	**xix-xxxix**
सपना	40
बीस बर्खक बाद	49
हकार	56
पनचैती पनपना गेल	64
लेहाज	68
पटियाबला	76
पछुआ गेलौं	86
बाबी	93
केकरा-ले केलौं	102
सुखाइत जीवनमे नव कलश	108
पीपरक गाछ	114

प्रस्तावना

सरोकार एक ओहन भावना थिक जे हमरा जीवनक विभिन्न पहलूकेँ प्रभावित करैत अछि। 'सरोकार'क शाब्दिक अर्थ होइत अछि लगाव, मतलब, जुड़ाव। सरोकारेक चलैत हम कोनो व्यक्तिसँ, समाजसँ, साहित्यसँ, गामसँ आकि माटि-पानि इत्यादिसँ जुड़ल रहैत छी। एकरा एहुना बुझल जा सकैए जे जइ चीज-वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान आदिसँ हमरा सरोकार अछि ओइसँ स्वत: हमर लगाव भऽ जाइत अछि आ हम ओइ चीज-वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान आदिसँ जुड़ि जाइत छी। एकर अगिला सोपानकेँ प्रश्न रूपमे- गाम-समाजसँ केहन लगाव अछि, केहन सरोकार अछि अहाँक? अर्थात की मतलब रखैत छी अहाँ अप्पन गाम-समाजसँ? एही तथ्यक व्याख्या 'गाम-समाजक संग अहाँक सरोकार' शीर्षक अन्तर्गत होइत अछि।

प्रस्तुत पोथीक नाओं 'सरोकार' अछि जाहिमे एगारह गोट कथा संकलित अछि। ई कथासभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसारसँ संग्रहित कएल अछि। मण्डलजीक रचनामे सामाजिक सरोकारक अद्भुत दृश्य हमरा देखि पड़ल आ तेँ हम एहि कार्यकेँ करैत संग्रहक नाओं सेहो 'सरोकार' राखलौं अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ जेँ गाम-समाजसँ सरोकार छलनि तेँ ओ राजनीति शास्त्र विषयमे एम.ए. केलाक बाद अप्पन गाम-समाजक संग रहय लगलाह। तहिना, जेँ हुनका साहित्यसँ लगाव छलनि तेँ ओ हिन्दी विषयमे एम.ए. सेहो केलनि आ वैचारिक-व्यवहारिक दौड़मे साहित्यक माने 'सबहक हित' बुझैत साम्यवादी सोचकेँ अंगिकार करैत समय पाबि सएह लिखौ लगलाह। जेँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ ग्रामीण समाजसँ, पिछड़ल ओ पछुआएल लोकसँ, मजदूर, श्रमिक, किसानसँ प्रेम छलनि तेँ ओ हुनका सबहक संगे रहवाक लेल अप्पन जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यकेँ सिरोधार्य केलाह। हलाँकि एहिमे एकटा बात आरो अछि, ओ ई अछि जे हिनक पिताजी आ तिनकर पिताजीक पिता सेहो

किसानीए कार्यसँ जुड़ल छलनि। कहवाक माने कृषि आत्मनिर्भर संस्कृति जगदीश प्रसाद मण्डलजीक खानदानी रहलनि अछि। जहिया कहियो अपने निर्मली अबैत छथि तँ हम हुनका संग बैसैत छी आ भरि मन गप-सप्प करैत छी। हम एकरा अप्पन सौभाग्य मानैत छी। जहिया जे मन भेल हुनकासँ पुछि लइ छिऐन आ ओहो बिनु लागि-लपेटिक सभ बात सोझराकऽ कहबे करैत छथि। सोझरा कऽ माने भेल शुद्ध-शुद्ध। झूठ-फुसिक कोनो दरस नहि। आहि-आलमक मिसियो छुइत नहि। बीचमे एकटा बात, एतेक जे हम बाजि रहल छी तकर एकटा अर्थ ईहो अछिए जे हम सूर्यक आगू दीप देखवैक प्रयासक करैत होइ। किएक तँ जाहि मैथिल समाजक बीच जातिए आधारित माथबला आ बिनु माथबलाक निर्णय होइत रहल अछि आ ओहि आधारपर श्राद्ध-विटारिक एकसंग परम्परा रहल अछि, माने ई जे 'जनिका हमरालोकनिक द्वारा नीक रचनाकार कहल जएतन्हि सएह नीक रचनाकार होएताह' आदि दम्भक जे संकेत अदौसँ चलैत आबि रहल अछि ताहिठाम मण्डलजीक संग से नहि भेलनि। मुदा से नहि, हम अप्पन काज कऽ रहल छी आ अपना लेल कऽ रहल छी। कियो अप्पन भागी अपनहि होइत छथि। जहिना कियो अप्पन परिचय पहिनहि दइ छथि तहिना अपना लेल अपनहि करवाक अधिकारो आ कर्तव्यो छन्हे। हमहूँ सएह कऽ रहल छी। अप्पन बात बजवाक आ लिखवाक कोशिश कऽ रहल छी तेँ अपनेलोकनि अन्यथा नहि ली।

जाहि समयमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी एम.ए. केलनि ताहि समयमे एम.ए. पास अभ्यर्थीकेँ महाविद्यालयी अध्यापन हेतु ताकल जाइत रहनि, माने तकलोपर नहि भेटैत छलाह। मुदा, जगदीश प्रसाद मण्डलजी अप्पन ध्यान ओमहर नहि केन्द्रित कऽ कृषि कार्य दिस उन्मुख भेलाह, कृषक लोकनिक संग धेलनि। ग्रामीण लोकक बीच, माने किसान सभक बीच जाइते देखलनि जे एहिठाम तँ अनेक दुखसँ जीवन ग्रसित अछि। गौर केलाह तँ देखलनि जे ई तँ दू तरहक ओरिजिनिक अछि। एक तरहक दुख अछि मानव निर्मित, दोसर अछि प्रकृतिक प्रकोपसँ सम्बन्धित दुख। मानव निर्मितकेँ शोषण-दोहन रूपमे जानल जा सकैए। जगदीश प्रसाद मण्डलजी ओहि दुखकेँ बिटियाकऽ भँजियाबए लगलाह। जाहि पाछू हिनकर जीवनक अधिकांश समय व्यतीत भऽ गेलनि।

पछाति, लिखब शुरू केलाह जे अद्यतन लिखिये रहलाह अछि।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केर जन्म 5 जुलाइ 1947 इस्वीमे भेलनि। 1960 इस्वीमे मिडिल पास केलाक बाद उच्च शिक्षाक हेतु झंझारपुर स्थित केजरीवाल हाइस्कूलमे नामांकन करौलनि। एहीठामसँ माने केजरीवाल हाइस्कूल, झंझारपुरहिसँ 1965 इस्वीमे मण्डलजी हायर सेकेण्डरी परीक्षा सेहो पास केलनि। तहियाक समाज सामन्ती ताना-वानाक बीच चलि रहल छल। देशकेँ स्वतंत्र भेना किछुए साल भेल छेलइ। समाजमे गरीबी चरमपर छल। गामक अधिकांश परिवार ओहन छल जाहि परिवारमे दुनू साँझ चुल्हि नहि पजरैत रहइ।

एक दिस देश स्वतंत्र भेल आ दोसर दिस अत्यन्त गरीबी छल। ततबे नहि, कहैले किसानक देश भारत, मुदा साधनक अभावमे किसानी सोल्होअना चौपट्ट छल। ने खेतीक लेल नव तकनीक छलैक आ ने नव ज्ञान। ताहिपर बाढ़ि-रौदीक प्रकोप सेहो बेसीकाल होइत रहैत छेलइ। दसक भरिमे गोटेक साल समगम समय होइत छलइ। जाहि कार्य लेल माने खेती-किसानीक लेल सिंचाइ केर व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक अछि, ओ सोल्होअना मौसमपर आश्रित छल। मौसमक कोनो ठेकान नहि, जइ साल अधिक बरखा होइत रहै तइ साल नमहर बाढ़ियो आबि जाइत रहै आ जाहिसँ गाम-गामक फसिल धुआ-पोछा जाइत रहय आ जइ साल कम बरखा होइत रहै ओइ साल रौदी वा सुखार भऽ जाइत छल। हँ, गोटे-गोटे साल एहेन होइत छल जइ साल समगम समय भऽ जाइत छल जाहिसँ खेतमे अन्नक उपज आन सालक अपेक्षा नीक होइत छल।

गामक समाज सामंती व्यवस्थानुकूल चलि रहल छल। गाम-गामक लोक जाति-जातिमे बँटल छलाह आ अखनो छथि। जाति-जातिक बीच मैनजन-देवान छलाह जे विवाह-श्राद्ध सदृश कार्यमे हस्तक्षेप करैत रहथि। गाम-समाजक जमीन दरभंगा राजक मालगुजारी कानूनक तहत छिनाकऽ जमीन्दारक हाथमे चलि गेल। अनेको सूदिखोर महाजनक महाजनी गाम-समाजमे चलि रहल छल। तेतबे नहि, हुनके सभक जुतिमे समाज बहि रहल छलाह।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी एम.ए. केलाक बाद जखन गाम एलाह आ

गामक दशा, अर्थात गामक लोकक दशा देखलनि तखन हिनका अनुभव भेलनि जे जाबत धरि बाहरी जमीन्दारक शोषणकेँ नहि रोकल जाएत, ताबत धरि गामक लोकक जीवनमे सुधार सम्भव नहि अछि। मुदा ई कार्य धिया-पुताक खेल तँ छी नहि जे घन्टे भरिमे खेलि लेब। एहि लेल आम लोकक धारणामे परिवर्तन होएब अनिवार्य अछि। जे सभ एहि समस्यासँ ग्रसित छथि, ओ जाधरि अपन समस्याकेँ बुझता नहि ताधरि ओहिसँ हुनका छुटकारा कोना भेटतनि? अत: मण्डलजी समर्पित भऽ कऽ जमीनपर काज करय लगलाह। समाजकेँ जगेबाक हेतु अनेको भेँटवार्ता, गोष्ठी-संगोष्ठी, विचार-विमर्श आदि-आदि कार्यकेँ अपन जिम्मा बुझि ओहि पाछू मनोयोगसँ क्रियागत भेलाह। एहि क्रममे, माने आख्यानकेँ बुझै आ बुझबैक क्रममे हुनका विभिन्न प्रकारक संघर्ष सेहो करय पड़लनि।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक स्वभावमे आत्मनिर्भर संस्कृतिक श्रेष्ठ स्थान रहलनि जकर प्रमाण अछि जे ओ कृषि कार्यकेँ जीविकोर्पाजनक साधन बनौलाह। हुनका अप्पन कल्याणक संग समाजक सभ वर्गक लोकक कल्याणसँ सरोकार छलनि, तेँ ओ जहिना अपने कृषि कार्यकेँ अपनाय आत्मनिर्भर भेलाह तहिना दोसरोकेँ आत्मनिर्भर होएबाक प्रेरणा दैत रहलाह अछि, कृषिक नव-नव आयामकेँ बुझै-बुझबैक कोशिश सेहो करैत रहलाह अछि। ई स्वभाव हिनका हृदयमे आइयो व्याप्त छनि। साहित्यजगतमे सेहो एहि तरहक कार्य मण्डलजी करिते छथि।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रग-रगमे सामाजिक सरोकार देखल जा सकैछ जे ओ अप्पन गाम-समाज, किसान-समाजक बीचक समस्याकेँ चिह्नित कय ओकरा दूर करबाक प्रयासमे संलग्न भऽ गेलाह। एहि लेल ओ विभिन्न स्तरपर संघर्ष सेहो करैत रहलाह अछि। कतेको लड़ाइ हुनका लड़य पड़लनि, केस-मोकदमा झेलय पड़लनि, कतेको बेर जहलक यातना सेहो सहय पड़लनि। समाजक प्रति ई सभ हुनक वास्तविक सरोकारक परिचायक थिक। किएक तँ जतेक केस-मोकदमा जगदीश प्रसाद मण्डलजी लड़लाह ओ सभ मोकदमा सामाजिक मुद्दासँ सम्बद्ध छल, माने सभ मोकदमा सामाजिक छलनि, बेकतीगत एक्कहु टा नहि। यएह कारण अछि जे हिनका विचारमे, स्वभावमे आ व्यवहारमे

सेहो समाजक प्रति सरोकारक अद्भुत रूप देखल जा रहल अछि। एहिसँ ओ कहियो घबड़ेला नहि, बल्कि रुचिपूर्वक अप्पन जीवनक अधिकांश समय ओहीसभमे अर्थात समाजेक सेवामे लगा देलनि। एहि प्रसंग मैथिलीक प्रसिद्ध सम्पादक ओ जीवनीकार श्री गजेन्द्र ठाकुर लिखलनि अछि- “एक दिन जगदीश प्रसाद मण्डलजी जखन सभ केसकेँ मोन पाड़ि आइ.पी.सी.सँ मिलेलैन तँ बुझि पड़लैन जे जौं शुरूहे सँ सजाए होइत अबैत रहितैन तँ भरिसक सभ दिन जहलेमे ऐगला केसक फैसला सुनितैथ। मुदा केहेनो फड़ल आमक गाछ किए ने हुअए मुदा पकलापर वा बिहाड़िमे हहैर कऽ खसलापर एक्की-दुक्की गिनतीमे चलि अबैए तहिना भेल रहैन। भीम जखन अभिमन्युकेँ सातम फाटक तोड़ैक भार लऽ लेलैन तेहने मनमे उठलैन। फेर ठमकल सभ केसक सजाए जोड़लैन तँ 107 बरख पुरैत रहैन। जिनगी दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे साए बर्खक काज तँ पुरिये गेलैन। जौं नै केने रहितैथ तँ दोखी केना भेला?” (सन्दर्भ: ‘जगदीश प्रसाद मण्डल: एकटा बायोग्राफी, गजेन्द्र ठाकुर, 2012, श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, चारिम संस्करण, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली, पृ. सं.: 122)

दिनांक 5 मई 2005 इस्वीमे आबिकऽ हुनक, माने श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक ऊपरमे जमीन्दार सभक द्वारा कएल मोकदमामे अन्तिम मोकदमाक फैसला भेलनि। जीत हाँसिल भेलनि। समाजक प्रति वास्तविक सरोकार आ समाजक प्रति वास्तविक सेवा भाव रहने हुनका ऊपरमे भेल सभटा मोकदमा निराधारा सिद्ध भेलनि। जगदीशबाबूक हृदयमे जेँ समाजक हित, समाजक कल्याण छलनि तेँ ओ कहियो घबड़ेला नहि आ ने हुनक मन:स्थित गड़बड़ेलनि। प्रमाणक लेल हुनक जीवनक क्रिया-कलाप हमरालोकनिक समक्ष अछिए। मण्डलजी अप्पन जीवनक उत्तरार्द्धमे आबि साहित्य लेखनकेँ अनुकूल कार्य मानि अप्पन दायित्वक निर्वहनमे लागि गेलाह। प्राय: 2000 इस्वीमे मैथिली साहित्य लिखब शुरू कएलनि। हिनक अनेक रचना हमरालोकनिक समक्ष अछिए। मण्डलजीक दृष्टि, समाजक प्रति प्रेम, लगाव, सरोकार केहन छनि ताहिपर साहित्य जगतमे बेर-बेर विचार करबाक आवश्यकता कएलो जाइत रहल अछि आ करबोक आवश्यकता अछिए। अनेक विद्वज्जन अप्पन विचार करबो केलाह अछि आ आगूओ करताह।

मैथिली साहित्य जगतमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पहिचान बेछप छनि। एहि प्रसंग डॉ. योगानन्द झा ‘दीपवर्तिका’ नामक अप्पन पोथी लिखलनि अछि: “कर्मवीर, सुधी, सविद्य ओ पुरुषार्थवान साहित्यकारक रूपमे प्रख्यात श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी मिथिला-महीक एहन वरद सुपुत्र थिकाह जनिक जीवनक पूर्वार्द्ध संघर्षशीलताक पर्याय बनल लोककल्याणक मार्गकेँ प्रशस्त करबामे दत्तचित्त रहल तँ उत्तरार्द्ध बहुआयामी साहित्य-सृजनक माध्यमे समाज, राष्ट्र ओ अखिल मानवताक उन्नयन दिस अभिमुख देखि पड़ैत अछि। एहन लोक सहजहि अपन कर्म, शौर्य, आदर्श ओ ऐश्वर्यक द्वारा लोकजगतमे लोकनायकक अभिधानसँ विभूषित होइत रहल छथि तथा वन्दनीय ओ अभिनन्दनीय मानल जाइत रहल छथि। जनसामान्य एहन लोकनायकक आदर्शक अनुपालन द्वारा कृतकृत्य तँ होइतहि छथि, हुनक जीवन-चरितक अनुगायन द्वारा सार्थक जीवन-पद्धतिक मार्गक अन्वेषण सेहो करैत देखि पड़ैत छथि। कृती-व्यक्तित्व श्रीमण्डलजी मानव मात्रक समता, स्वतंत्रता ओ बनधुत्वक स्थापनाक हेतु प्रतिबद्ध तँ छथिहे, ‘तमसो मा ज्योर्तिममय’क भावनाकेँ प्रतिबद्धताक संग अंगीकृत करैत लोकजगतकेँ अज्ञानान्धकारसँ प्रकाश दिस उन्मुख करयबाक उद्देश्यसँ नहि केवल चिन्तनशील रहैत आयल छथि अपितु लेखन ओ कर्म दुनूमे समन्वय स्थापित कऽ एकटा विशिष्ट उदाहरणे सावित भऽ गेल छथि। आधुनिक मैथिलीक साहित्योद्यान हिनका द्वारा प्रणीत विविध ओ विपुल पुष्प-पादपक सम्मिलित सुवाससँ महमहाइत रहल अछि।”

जगदीश प्रसाद मण्डलजी जहिना कथा लिखबामे दक्ष छथि तहिना उपन्यास लिखबामे सेहो निपुण छथि। जहिना हिनक ‘गामक जिनगी’ कथा संग्रह ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’ लेल 2011 इस्वीमे चयनित भेलनि तहिना हिनक ‘पंगु’ उपन्यास सेहो 2021 इस्वीमे ‘साहित्य अकादेमी पुरस्कार’ लेल चयनित भेलनि। क्रमश: दुनू पुरस्कार-सम्मानसँ पुरस्कृत-सम्मानित भेलाह।

साहित्यक विभिन्न विधामे मण्डलजीक रचना प्रकाशित भऽ चुकल छनि। गीत, नाटक, एकांकी, उपन्यास, प्रबन्ध-निबन्ध, कविता ओ कथा आदि सभ विधामे ई नियमित रूपेँ रचना करैत रहलाह अछि। अन्य विधाक अपेक्षा हिनक कथा विधाक रचना संसार व्यापक छनि जाहिमे हजारसँ बेसी कथा महमह करैत

छनि।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ लिखबाक विचार 1998 इस्वीक पछातियेसँ अर्थात् अप्पन माइयक देहावसानक पश्चातहिसँ आबि गेलनि। माता श्रीमती मकोबती देवीक मृत्यु 7 मार्च 1998क भेल छलनि तकर बादहिसँ, मुदा से मात्र योजना भरि रहलनि लेखनी चलए लगलनि 2000 इस्वीसँ। शुरूमे जहिना लिखब शुरू केलनि तहिना नित्य-नियमित एखनहुँ लिखिए रहलाह अछि। साहित्यक प्रति हिनक ई अनुराग अद्वितीय छनि। एहि बीस वर्षक समयावधिमे साहित्यक विभिन्न विधाक लगभग 125 पोथीक प्रणयन कएलनि अछि। साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पछाति हिनक लेखनी आरो गतिशील भेलनि। 2021 इस्वीमे हिनका 'पंगु' उपन्यास लेल पुरस्कृत कएल गेलनि। 'पंगु'क पछाति 'आमक गाछी', 'सुचिता', 'मोड़पर' आदि सात गोट उपन्यास आ चारि दर्जन कथा संग्रहक प्रणयन सेहो कएलनि अछि। उक्त सभ पोथी प्रकाशित भऽ चुकल छनि। लोकार्पणकर्ता सहित विवरण नीचाँमे उद्धृत अछि। ओना, हिनक सम्पूर्ण रचना संसारक संक्षिप्त परिचय छनि- 20 गोट उपन्यास, दर्जन भरि नाटक-एकांकी, दर्जन भरि गीत-कविताक पोथी, निबन्ध संग्रह आदिक अलाबे गोटेक हजार कथा, जे लगभग 90 गोट पुस्तकमे संग्रहित भऽ प्रकाशित भेल छनि। हिनका अनेको संस्थासभ द्वारा अनेको पुरस्कार ओ सम्मान सेहो भेटैत रहलनि अछि, जेना- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साक्षर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योगदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सेमिनरी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक क्षेत्रमे अमूल्य योगदान हेतु ज्योत्स्ना-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान- 2018',

चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021', साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022', मिथिलांचल विकास परिषद्, लहेरियासराय, दरभंगा द्वारा 'यात्री सम्मान- 2022', साहित्य, संस्कृति, सामाजिक आ मिथिलांचलक सर्वांगीण विकासक क्षेत्रमे उल्लेखनीय योगदान हेतु मिथिलांचल सर्वांगीण विकास संस्थान, बेनीपट्टी द्वारा 'मिथिला शिखर सम्मान- 2022' तथा अपन परिश्रम, संकल्प एवं मिथिला-मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे अमूल्य योगदान हेतु महाकवि पण्डित लाल दास जयन्ति सह स्मृति पर्व समारोह समिति, खड़ौआ द्वारा 'महाकवि पण्डित लालदास साहित्य गौरव सम्मान- 2023'

एकर अतिरिक्त हिनका आरो-आर सम्मान सभ विभिन्न संस्था द्वारा भेटैत रहलनि अछि। जेना, झारखण्ड मैथिली मंच, राँची द्वारा सम्मान, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा द्वारा सम्मान आदि।

एक दिन हमर एक मित्र कहलनि जे जगदीश प्रसाद मण्डलजी बहुत लिखलनि आ लिखियो रहलाह अछि। बड़ नीक बात, मुदा ओइसँ समाजकेँ की भेटलैक आ समाजमे कथी बदलाव आएल? ..कहब ने किए, हम अपना मित्रक प्रश्नक जवाबमे ओइ दिन किछु नहि बाजि सकलौं। मुदा हमरा माथमे ई प्रश्न सदिखन घुरियाइते रहल। अप्पन मित्रक प्रश्नक जवाबमे हम जगदीशबाबूक अनेको पोथी पढ़ए लगलौं, ई सोचिकऽ जे आखिर बात की अछि।

जगदीशबाबूक पोथी पढ़लासँ हमरा दूटा लाभ भेल। एकटा लाभ तँ सभसँ पहिने ई भेल जे मानवीय सरोकारक विभिन्न स्वरूप नजरिपर आएल। विभिन्न स्वरूपक माने विभिन्न पक्ष, जाहिमे ओकर टुटैट-जुटैत स्वरूपक संग वर्तमान स्वरूप, बदलैत स्वरूपसँ लऽ कऽ ओकर नीक-बेजा पहलूक संग नीक तँ किए नीक, केना नीक आ बेजा तँ किए बेजा, केना बेजा इत्यादि। लिखवाक शैली एहन जेना बायोग्राफीक होइछ। अभिप्राय ई जे बायोग्राफीमे लिखबा काल

जहिना लेखकक धियानमे पाठककेँ रोचक लगौ, एहि बातक धियान नहि राखल जाइछ तहिना जगदीश प्रसाद मण्डलजी ओहिसभपर धियान प्राय: नहियेँ दैत छथि। ओ मानैत छथि असली हँसी आ खुशी जीवनक हँसी खुशी थिक। जँ जिनगी हँसैत चलए तँ ओ भेल असली हँसी आकि खुशी।

दोसर जे लाभ भेल जगदीश बाबूक कथासभ पढ़िकऽ ओ ई जे सरोकारसँ परिचित भेलौं। सरोकारक व्यापक स्वरूप आ फलकसँ परिचित भेलौं। सामाजिक सरोकारकेँ सेहो किछु-किछु बुझबाक मौका भेटल जाहिसँ हमर मित्रक प्रश्नक जड़िमे गड़बड़ी केतए छनि सेहो हमरा बुझबामे आबि गेल।

असलमे ई सामंतवादी संस्कारक तहत उपजल प्रश्न छल। ई बात सोल्होअना सत्य अछि जे जगदीशबाबू अनेक सम्मानसँ सम्मानित साहित्यकार छथि। सरकारी स्तरपर सेहो आ गैर सरकारी स्तरपर सेहो, अर्थात् सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थासभक द्वारा सेहो ई सम्मानित होइत रहलाह हैं। मुदा ओ सम्मान की भेटल छनि तँ मात्र एकटा सामाचार बनल छनि। आइ धरि, जहाँ तक हमरा बुझल अछि, मिथिला-मैथिलीक विकास लेल प्रतिबद्ध जे कोनो संस्थासभ अछि ओ हिनका ऊपर, माने श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचनाक ऊपर की सभ केलकैन अछि? कहबाक माने, हिनकर कोनो रचनापर, कोनो पोथीपर आइ धरि ने एक्को गोट परिचर्चा, ने कोनो संगोष्ठी आ ने कोनो विचार-विमर्श। ततबे नहि, कोनो वर्गक पाठ्यक्रममे सेहो हिनकर कोनहुँ पोथी आकि कोनो रचनाकेँ सन्निहित नहि कएल गेलनि अछि। तखन हिनकर रचनाक प्रति लोकमे आकर्षण कोना आओत? आम पाठक कोना हिनकर लिखल साहित्यकेँ पढ़ता-गुनता आकि विचार-विमर्श करताह? अहाँ किएक सम्मानित केलियनि जँ तकरो खोलिकऽ समाजक समक्ष रखबैक तखनहि ने समाज हुनका आकि अहींकेँ जनताह। ओना, समाज सभकिछु जनैत छथि। माने ई जे सभ रंगक लोक समाजमे होइत छथि, जननिहार जनैत छथि।

यएह बात हम अप्पन मित्रकेँ कहलिऐन जे कोनो रचनाकारक कार्य रचना करब छिऐन, सभक कार्य अलग-अलग अछि, जिनकर जे कार्य छिऐन हुनका ओ कार्य करक चाहिऐन आ अहाँ सन हिसाब लेनिहारक सेहो ई दायित्व बनैत अछि जे जाहि कार्यक जे जिम्मेदार छथि ताहि कार्यक हिसाब तिनकहिसँ लिऐन।

जगदीशबाबू दिन-राति लिखैत छथि, हिनका सन अवाध गतिये नियमित लिखएबला लेखक असगरे छथि। ओ अप्पन कार्य इमानदारीसँ कऽ रहल छथि। पाठक कोना हुनका रचनाकेँ पढ़थि, समीक्षा-आलोचना कोना हुनकर सचनासभ पर हुअए, गोष्ठी-संगोष्ठी, विचार-विमर्श आदि कोना हुअए। एहि कार्यक लेल जे प्रतिबद्ध अछि, जवाब तिनका देबक चाहिऐन। तेतबे नहि, विद्यालय-महाविद्यालय आकि विश्वविद्यालय स्तरपर कोनो रचनाकारक रचनापर परिसंवादक आयोजन कोना होएत, पाठ्यक्रममे कोना सम्मिलित कएल जाएत इत्यादि। ई सभ काज रचनाकारक नहि छिऐन, माने ई काज जगदीशबाबूक नहि छिऐन। जगदीशबाबूक जे कार्य छिऐन ताहिमे ओ तन-मन-धनसँ लागल छथि। हुनक अपन जिम्माक काजमे कोन तरहेँ समर्पित छथि से किनकहुसँ नुकाएल सेहो नहियेँ अछि। मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक समर्पणक जोड़ अछि? ओ तँ अद्वितीय छथि। जहियासँ लिखब शुरू केलाह तहियासँ आइ धरि नियमित रूपेँ लिखैत रहलाह अछि। अत: जिनकर जे कार्य छिऐन, हुनका अप्पन कार्य करक चाहिऐन। समाजमे सभ तरहक लोक छथि, सभ तरहक कार्य सेहो अछि आ सभ तरहक जिम्मा आ जिम्मेदार सेहो छथिए। हम एकटा साधारण अध्यापक छी। नित्य-नियमित अप्पन कार्यमे लागल रहैत छी, अप्पन कर्तव्यक पालनमे कोना समय बीति जाइत अछि से नहि बुझि पबैत छी। तथापि, निर्मलीक आसपासमे जे कोनो साहित्यिक संगोष्ठी होइत रहल अछि, खास कए ‘सगर राति दीप जरय’क कथागोष्ठी, तँ हम ओइमे जरूर भाग लैत रहल छी। पहिल बेर 2013 इस्वीमे भाग लेने रही। ओ संगोष्ठी निर्मलीमे भगत सिंह चौक स्थित माणिक राम बजाज धर्मशालामे समाजक सहयोगसँ आयोजित भेल छल। ओना, निर्मलीमे आरो कतेको बेर ई साहित्यिक संगोष्ठी होइत रहल अछि, प्राय: प्रत्येक आयोजनमे उपस्थित होइत रहलौं अछि। ताहि संग, निर्मलीसँ बाहर सेहो कएक ठाम गेबे केलौं अछि। जेना, भागलपुरमे आयोजित कथा गोष्ठीमे सेहो भाग लेने रही। ओ संगोष्ठी श्री ओम प्रकाश झाक संयोजकत्वमे आयोजित भेल छल। एहिना श्री राजदेव मण्डल ‘रमण’जीक संयोजकत्वमे लकसेना (अंधराठाढ़ी)मे ‘सगर राति दीप जरय’क कथागोष्ठीमे सेहो भाग लेने छी। ई तँ भेल निर्मलीसँ बाहर, मुदा निर्मली आ निर्मलीसँ सटल जतेक संगोष्ठी होइत रहल अछि ताहूमे

हम अवश्य भाग लैत रहलौं। यएह कारण थिक जे हमरा मैथिली साहित्यसँ थोड़-बहुत लगाव बढ़ैत गेल।

अखन तँ भिनसरसँ साँझ कोना भऽ जाइत अछि से नहि बुझि पबैत छी मुदा जखन स्कूलसँ अर्थात् अध्यापन कार्यसँ निवृत्त होएब तँ अवश्य माँ मैथिलीक सेवामे किछु-ने-किछु करबे करब। तत्काल हम जगदीशबाबूक रचनासभकेँ पढ़बाक लेल जे समय निकालि सकलौं आ ताहिसँ जे हमरा आवश्यक बुझि पड़ल, जे कि हम कऽ सकैत छलौं, से कए अपने सभक समक्ष उपस्थित छी। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 11 गोट कथाक एहि संकलनक प्रति हमर एतबे ध्येय अछि जे हिनका रचनामे सामाजिक सरोकारक जे रूप-रेखा छनि ताहिपर हमर-सभक नजरि जाए।

अगिला 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन करबाक अवसरि हमरे प्राप्त भेल अछि जे एही मासक 28 तारीख-के, अर्थात् 28 जून 2025-के केवटनामे आयोजित करबाक नियार अछि। अपना मनमे ईहो एक बिन्दु छल जे जखन एहि तरहक कार्य करय जा रहल छी, अवसरि भेटल अछि तखन किएक ने किछु कार्य आरो करी जाहिसँ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे हमरो द्वारा एक कड़ी जुड़ि सकय। एही भावनाक संग अपनेलोकनिक प्रति सादर आभार व्यक्त करैत हम अपन बातमे विराम लगा रहल छी। जय मैथिली, जय मिथिला..

- नारायण प्रसाद सिंह

कथामे सामाजिक सरोकार

प्रस्तुत कथा संग्रहक पहिल स्थानपर ‘सपना’ शीर्षक कथा अछि। एहि कथामे मिथिलाक कमलपुर गामक दू गोट परिवारक तुलना कथाकार जगदीश प्रसाद मण्डलजी कएलनि अछि। रघुवंश ओ श्यामलाल कमलपुर गामक निवासी छथि। रघुवंशक तँ सामान्य परिवार छनि मुदा श्यामलालक परिवारकेँ नामी-गरामी परिवारमे गानल जाइत अछि। कमलपुरक संग अगल-बगलक गामसभमे सेहो श्यामलालक परिवारकेँ आर्थिक रूपेँ सम्पन्न परिवारमे गिनती होइत रहलनि अछि।

जहिना मिथिलांचलक लोकक अवधारणामे धिया-पुताकेँ पढ़ाएब-लिखाएब अनिवार्य कार्य मानल जाइत अछि जे अपने भुखलो-दुखल रहि जाइ मुदा धिया-पुताकेँ अर्थात् बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब-लिखाएब जरूरी अछि, तहिना रघुवंशकेँ सेहो अपन बेटाकेँ अर्थात पुष्पलालकेँ पढ़बैक इच्छा छनि। एही क्रममे पुष्पलालकेँ रघुवंश कहलथिन जे बौआ तूँ नीक जकाँ पढ़ह-लिखह, अखन तोहर मूल कार्य पढ़ब छह। पढ़ि-लिखि लेबह तँ नीक मनुक्ख बनबह।

पुष्पलालक पिता जहिना कहलखिन तहिना पुष्पलाल मोन लगाकऽ पढ़ब शुरू केलक। पढ़ैत-पढ़ैत पुष्पलाल बी.ए. पास केलनि आ पछाति उच्च विद्यालयमे शिक्षक बनि गेलाह।

सात्विक विचारक लोक पुष्पलाल बच्चेसँ रहलाह। बच्चेसँ एहन विचार पुष्पलालमे अबैक कारण भेलनि जे एक तँ परिवारक प्रभाव हिनका ऊपरमे पड़ल रहनि आ दोसर, विद्यालयेक समयसँ अपनो जीवन ओहन बनैत गेलनि जे दिनानुदिन सात्विक प्रवृति दिस बढ़बैत गेलनि। शुरूहेसँ पुष्पलाल अपने परिवार जकाँ दोसरो-तेसरो परिवारक लोकक संग सम्बन्ध बनौने रहलाह जाहिसँ हाइ स्कूलक शिक्षक रहितो समाजक लोक हिनका शिक्षक तँ बुझिते छलनि जे सामाजिक व्यवहार सेहो पुष्पलालक संग करैत रहलनि। पुष्पलाल सेहो मात्र विद्यालय टामे अपनाकेँ शिक्षक बुझैत एक शिक्षकक दायित्व निमाहैत रहलाह,

बाँकी समयमे सामाजिक दायित्वक बीच अपनाकेँ बुझि समाजक एक अंग मानि अप्पन कर्तव्यक पालन करैत रहथि। जाहिसँ पुष्पलालक व्यवहारमे सामाजिक सरोकार ओहिना बनल रहलनि जेना समाजक आन-आन लोकक संग बनल रहैए।

कमलपुरे गाममे एकटा परिवार श्यामलालक सेहो अछि। श्यामलालक सम्पन्न परिवार। असगर भैयारीमे हिनका पच्चीस बीघा जमीन छनि। अपने तँ मात्र दसे बीघा खेती करैत छथि सेहो जन-बोनिहारक हाथे, बाँकी पनरह बीघा बटाइये लगौने छथि। केतबो रौदी-दाही होइत छैक तैयो ओतेक ऊपज हिनका भइये जाइत छनि जे अप्पन परिवारक खर्चासँ बेसीए भऽ जाइत छनि। ओना, हिनकर अन्न-पाइनिक महाजनी सेहो चलैत छनि आ ताहि संग पच्चीस बीघा जोतसीम जमीनक अतिरिक्त दू बीघाक एकटा पोखरि आ पाँच बीघामे गाछी-कलम, बेख-बुनियादि सेहो छनि। तेतबे नहि, बीघा भरिक बँसवारि ओहन छनि जाहिसँ दस हजार रुपैआसँ ऊपरेक आमदनी सालमे भऽ जाइत छनि। ओना, गाछीयो-कलमसँ साले-साल पनरह-बीस हजार रुपैआक आमदनी भइये जाइ छनि।

श्यामलालक छोट बेटा सौरभलाल। सौरभलाल बच्चेसँ पढ़ै-लिखैमे जहीनगर। सौरभलाल सेकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलाक बाद सी.एम. कॉलेजमे नामांकण करबौलक। ओना, सौरभलाल छल आर्टेक विद्यार्थी, मुदा पढ़ै-लिखै दिस बेसी झुकाउ रहइ। आर्थिक कोनो समस्या एकरा कहियो भेबे ने केलइ। एक तँ अपनो पढ़ैमे सौरभलालकेँ खूब मोन लगैत रहैक आ दोसर, पिताक विचार सेहो रहबे करनि जाहिसँ जखन जे खगता होइत रहनि ओ तखनहि सौरभलालकेँ पूर्ति भऽ जान्हि।

सामाजिक परिवेशमे आर्थिक सम्पन्नता सेहो अहं भावनाक जन्म दइते अछि। सौरभलालकेँ कॉलेजमे प्रवेश लइते अहं भावना नीक जकाँ पकड़ि लेलक। तहूमे अपना मनमे रहबे करैक जे एम.ए. केलाक बाद कोनो कॉलेजमे प्रोफेसर बनबे करब। एक तँ सम्पैतिक प्रभाव आ दोसर, कुटुमो-परिवार सौरभलालकेँ ओहन रहबे करैक जाहिमे अनेको प्रोफेसर, डॉक्टर आ इंजीनियर रहथिन। तँ, सौरभलालक मनमे एहन विश्वास बनले रहैक जे अपनो प्रोफेसर बनबे करब।

समाजोमे, माने गामक समाजमे सेहो अप्पन ओहन बेवहार सौरभलाल बनौनहि रहय जइसँ समाजोक लोक पैघ बुझैत रहनि आ अपनो अपनाकेँ सौरभलाल पैघ बुझबे करैत छल।

समय बीतैत गेल। सौरभलाल अर्थशास्त्र विषयसँ एम.ए. पास केलक। अपना मनमे सौरभलालकेँ ई विश्वास रहबे करैक जे कोनो कॉलेजमे प्रोफेसर बनबे करब। एम.ए. केलाक तीन सालक बाद तक जखन सौरभलालकेँ कोनो कॉलेजमे नोकरी नहि भेलैक आ पिताक शरीर सेहो रोगा गेलनि, तखन अपना ऊपर नजरि पड़ए लगलैक। जहिना अधिकांश लोक आनक जीवनकेँ जरूरतसँ बेसीए देखैए आ अपना जीवनकेँ जरूरतो भरि नहि देखि पबैए, तहिना सौरभलालकेँ सेहो हुअ लगलैक।

कमलपुरक समाजमे नव जागरण आएल। बटाइ केनिहार बटेदार बटाइ जमीनक ऊपजक बँटवारामे अप्पन हिस्सा अधिक बुझि जहिना उठिकऽ तैयार भेल, तहिना बोनिहार सेहो अखन तक अबैत बोइनिक प्रथाक विरोधमे उठिकऽ ठाढ़ भेल, जेकर प्रभाव श्यामलालक परिवारपर जबर्दस्त रूपमे पड़ल। एक तँ शारीरिक रोगसँ रोगाएल शरीर छेलै आ ताहिपर सँ समाजक विरोधक तेबर देखि श्यामलालक रोग दिनानुदिन बढ़ैत गेलनि। एमहर सौरभलालकेँ तीन सालक ठोकरसँ, माने नोकरीक आशा टुटने, मन विचलित भइये गेल रहैक जाहिसँ एकरा मोनमे जे आशा अखन धरिक बनल छेलै जे कोनहुँ कॉलेजक शिक्षक बनबे करब, ओ राँइ-बाँइ भऽ कऽ छँहोछित भऽ टुटि गेलैक।

जहिना जीवनमे आशा, आगू बढ़ैक आशा, आगू बढ़ने जीवन आशान्वित होइए तहिना निराशा एलासँ जीवन पतनोन्मुख सेहो होइते अछि। एकाएक सौरभलालक विचार निच्चाँ मुहेँ उतरए लगल। जाहि कुटुम परिवारक आशा सौरभलालक मोनकेँ अखन तक पकड़ने छेलै ओ तीनियेँ वर्षक परिचयमे राँइ-बाँइ भऽ टुटि गेलैक, जाहिसँ विचारमे बदलाउ आबए लगलैक। आब सौरभलालक मन कॉलेजक प्रोफेसरसँ उतैर हाइ स्कूलक शिक्षकपर आबि अँटैक गेलैक। माने ई जे जँ कॉलेजक प्रोफेसर नहि बनि सकलौं तँ हाइयो स्कूलक शिक्षक बनि सकी। आब हाइ स्कूलक शिक्षक बनैक लेल सौरभलाल प्रयास करय लगल। मुदा सेहो प्रयास असफल भऽ गेलैक।

समाजक बीच, माने गामक बीच, श्यामलालक जे इज्जत काल्हि धरि छल ओ एकाएक टुटि-टुटि निच्चाँ खसए लगल जाहिसँ अखन धरिक जे रोब लोकक बीच छेलै ओ धीरे-धीरे मेटाए लगलैक। बँटेदार आ बोनिहारक विरोधसँ परिवारक काम-काजमे बाधा-रूकावट सेहो शुरू भेलैक। पाँच बर्खक परियाससँ सौरभलालकेँ जखन हाइयो स्कूलमे नोकरी नहि भेलैक तखन हारि-थाकिकऽ ओइ सिमानपर पहुँच गेल जे जीवनमे अपने तँ कहियो खेती-पथारी दिस गेलौं नहि, आब जँ खेती-पथारी करब तँ समाजक लोक दुसबे करत। जे काज, माने खेती-पथारी, समाजक अशिक्षित लोक आइ धरि करैत आबि रहल अछि से काज जँ पढ़ि-लिखिकऽ अपने करब तँ लोक पीहकारी मारि कहबे करत ने जे 'पढ़ै फारसी बेचै तेल, देखू भाइ करम-के खेल'।

जहिना शरीरमे शक्ति रहितो कोनो घटना विशेषक कारणेँ वा मनमे सोग-पीड़ा भेने शरीरक शक्ति क्षीण हुअ लगैए तहिना सौरभलालकेँ सेहो हुअ लगलैक। अन्तमे सौरभलाल विचारक ओइ सिमानपर पहुँच गेलैक जे शिक्षण संस्थानक अतिरिक्तो जँ कतौ, माने कोनो विभागमे नौकरी भेटत तँ सएह करब। संयोगसँ ताहि बीच कोसी नहर बनैक योजना बनल आ नव-नव पदक सृजन भेल। सौरभलालकेँ सेहो कोसी प्रोजेक्टमे किरानीक पदपर बहाली भेलैक।

अखन धरिक जे जीवन सौरभलालक रहल ओ बसन्तक पतझाड़ गाछ जकाँ भऽ गेल। माने, सौरभलालक मनक सभ सपना मटियामेट भऽ गेल। ओना, सपना मटियामेट भेने सौरभलालक मनमे नव विचारक उदय सेहो भेल। नव विचारक उदय भेने अखन तक जे पुष्पलाल मास्टर सहाएबक प्रति सौरभलालक धारणा छल ओ बदलि गेल। आब, पुष्पलाल मास्टर सहाएबक अस्सल रूप, माने वास्तविक रूप, सौरभलालक मनमे जगैत-जगैत एतेक जागि गेलैक जे घृणाक जगह आदर लऽ लेलकैक। सौरभलालक हृदय परिवर्तनक पश्चात सोचै-विचारैक तरीकामे सेहो बदलाउ आएल। हठात् एक दिन ओ विचार केलक जे से नहि तँ पुष्पलालसँ भेँट कए हुनकासँ माफी मांगि ली। हुनका विरोधमे जे किछु हम बाजल छी ओ गलती बाजल छी। जीवन जीवन छिऐक, जीवनक हिसाब अन्तिम समयमे आबि कऽ होइत छैक। वर्तमानमे जे अप्पन

जीवन बनि गेल अछि आ जाहि तरहेँ पुष्पलालक जीवन उत्तरोत्तर आगू मुहेँ बढ़ि रहलनि अछि ताहि बीच कोनहुँ तुलना नहि अछि। बहुत बेसी दूरी दुनू गोटाक बीच भऽ गेल अछि। जखन सौरभलाल पुष्पलालक दरबज्जापर पहुँचला आ घटी मानि गप-सप्प केलनि तँ सौरभलालकेँ पुष्पलाल कहलथिन- “सौरभ, शारीरिक शक्तिकेँ जगाएब अछि। जखने शारीरिक शक्ति जागत तखने मनसिक शक्ति सेहो जागत, आ जखने मानसिक शक्ति जागत तखने संकल्प शक्ति सेहो जागए लगत। जखने संकल्प शक्ति जागत तखने आत्म-शक्ति, माने भावात्मक शक्ति सेहो जागत, जइसँ धियान एकाग्र हएत। फलाफल नव-नव काज जीवनमे अबैत जाएत जे नव जीवनक सृजन करत। जइसँ असंयमित जीवन संयमित बनत आ योजनाबद्ध जीवन बनि आगू बढ़त।”

कथाकार एहि कथाक माध्यमसँ सामाजिक सरोकारक महत्वकेँ एहि रूपमे देखेबाक प्रयास केलनि अछि जे कोना पुष्पलालक जीवन सुन्दर ढंगसँ सफलतापूर्वक आगू मुहेँ बढ़ि रहलनि अछि आ कोना सौरभलालक जीवन गर्तमे पड़ि गेलैक। एकर मूल कारण की थिक? यएह एहि कथामे स्पष्ट रूपेँ देखार भेल अछि। कोनहुँ व्यक्तिमे जँ समाजक प्रति सद्भावना रहैत अछि, मानवीयता रहैत अछि तँ ओइ व्यक्तिक जीवनमे कोनहुँ प्रकारक अहं भावना नहि जन्म लऽ पबैछ। मुदा एकर ठीक विपरीत जँ कोनहुँ व्यक्तिमे सामाजिक सरोकारक भावना नहि रहैत अछि, मानवीयताक अभाव रहैत अछि, जेना कि सौरभलालक चरित्रमे प्रस्तुत कथामे देखाओल गेल अछि, तँ ओहन व्यक्तिक जीवन महान नहि बनि पबैछ। ओकर चिन्तन न्यून रहि जाइछ।

एहि कथाकेँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी दिसम्बर 2024मे लिखलनि अछि। 2025 इस्वीमे प्रकाशित हिनकर पहिल पोथीमे, वर्षक पहिल पोथीमे, प्रथम स्थानपर ई कथा संग्रहित छनि।

बीस बर्खक बाद: प्रस्तुत कथा ‘सहोदर भाय’ नामक कथा संग्रहक एक गोट अनुपम कथा थिक ‘बीस बर्खक बाद’। एहि कथामे मात्र दू गोट पात्र अछि। पहिल पात्र अछि रहमत ओ दोसर पात्र कथाकार स्वयं अपनहि छथि। रहमत अपन बेटीक ओइठाम गेल छलाह। रहममतक बेटी ताजपुर गाममे बसैत छनि।

ताजपुरसँ रहमत अपन गाम 'दीप' वापस आबि रहल छलाह। उमेरगर हेबाक कारणेँ रहमत थाकि जाइ छथि। दीपसँ पहिने जे गाम अछि ताहि गाममे प्रवेश करैत-करैत रहमतकेँ बहुत बेसी थकान बुझि पड़ए लगैत छनि। तखन ओ हिनका ओतए, माने कथाकारक दरबज्जापर आबि पड़ि रहै छथि।

रहमत जहिया पटिया बेचैत छलाह तँ हिनका ओतए पाँचो मिनट खातिर एक बेर अवश्य रूकबे करथि। मुदा बात आइसँ बीस वर्ष पूर्वक थिक। चौकीपर पड़ल देखि कथाकार हिनका चिन्हि नहि पबै छनि। खेनाइ खाइक बेर बुझि हिनका उठबैत पुछलकैन। पछाति अपन परिचय दैत रहमत खेनाइ खेबासँ मना करैत कहलखिन जे बेटी ओइठामसँ अखने खेनाइ खा कऽ आबिये रहल छी।

दुनू गोटामे गप-सप्पक क्रम चलैत अछि। रहमतक सम्पूर्ण जीवनक बात-चीत क्रमश: सोझमे अबैत अछि। रहमत पहिने कपड़ा बुनैत छलाह। पछाति जखन खादी भण्डार बन्द भऽ गेल तेकर पश्चात पटिया बूनब आ बेचब शुरू केलाह। कालक्रमे जखन प्लास्टिक बला पटियाक आगमन भऽ गेल, जाहिसँ मोथीक पटिया (बिछान) क मांग सेहो कमि गेल। एवंक्रमेँ रहमतक कारोबारपर एकबेर पुन: ग्रहण लागि गेल। ओना, ताहि बीच रहमतक दुनू बेटा जुआन भऽ गेलनि आ ओ दुनू भाँइ सेहो बाहर जा कऽ किछु अर्जण करय लगलनि। अत: रहमत दुनू परानीक जीवन-यापनमे कोनो दिक्कत नहि होइ छनि आ खुशीसँ जीवि रहलाह अछि। बेटीक विवाह अपना गामसँ लगभग 7 कोस उत्तर ताजपुर गाममे केने छथि। बेटी-जमाए सेहो नीक जकाँति जीवि रहलनि अछि। आइ ओहीठामसँ खेनाइ खेलाक बाद विदा भेलाह। आदि-आदि। रहमत ओ कथाकारक बीच विभिन्न प्रकारक गप-सप्प चलैत अछि। ताहि संग कथाकारक मौसी सेहो रहमतेक गाममे तेँ हुनकहु सबहक विषयमे कतोक बात चलैत अछि।

रहमत ओ कथाकारक बीच उपरोक्त आत्मीय वार्तालापसँ ने मात्र दू व्यक्तिक बीचक सम्बन्ध परिलक्षित होइत अछि अपितु दू सम्प्रदायक बीचक एतेक दीर्घ ओ आत्मीय सम्बन्ध सेहो देखार होइत अछि। जगदीशबाबूक यथार्थवादी लेखनक ई विशेषता रहल छनि जे ओ सभकथुकेँ यथावत लिखै छथि माने प्रसंगकेँ इमानदारीसँ रखै छथि। मिथिलाक समाजमे एहि तरहक सम्बन्धक

लाखो उदाहरण आजुक परिवेशमे सेहो देखल जाइत अछि।

प्रस्तुत कथामे आएल विभिन्न पहलूकेँ आकलन केलाक बाद ई स्पष्ट होइछ जे मिथिलामे अखनो सामाजिक सरोकारक अद्भुत दृश्य देखल जा रहल अछि।

हकार: एहि कथामे सुशील एकठाम लाल काकाकेँ कहैत छनि, "काका, हमरा कि कखनो अप्पन काज छुट्टी दइए जे अनेरे लोकक पाछू पड़ल रहब। तखन तँ समाजोक अपन गति-विधि छै, जैबीच सभ बसै छी, तेँ ओहूपर धियान नइ राखब तँ समाजमे अराजकताक स्थिति बनियेँ जाएत।"

उपरोक्त कथोप-कथनमे 'समाजक गति-विधिपर ध्यान राखब सेहो जरूरी अछि नहि तँ समाजमे अराजकताक स्थिति बनि जाएत'।

उपरोक्त कथनमे स्पष्ट रूपेँण सामाजिक सरोकारक दर्शन होइत अछि। सुशील आ लाल काकाक बीच उपरोक्त वार्तालापक परिवेश विचारणीय अछि।

प्रस्तुत कथाक पात्र 'सोनेलाल'क ओइठाम कोजगरा छियनि। एहि प्रसंग लाल काका ओ सुशीलक बीच वार्त्तालाप होइत अछि। तीस वर्ष पूर्व सोनेलालकेँ जे लोक सभ घराड़ीपर सँ भगा देने छलनि, आइ वएह लोक सभ कोजगराक व्यवस्थामे अगुआ बनल छनि। जखन कि लाल काका आ सुशील दुनू गोटे सोनेलालकेँ मदैत केने रहथिन। सोनेलालक खातिर ई दुनू व्यक्ति जहल सेहो गेल छलाह। मुदा आइ अर्थात् तीस वर्षक पश्चात, कोजगरामे हिनका दुनू व्यक्तिकेँ सोनेलाल बिसरि गेलनि, हकार नहि देलकैन अछि।

एही तरहेँ दुनू व्यक्तिमे गप-सप्प होइत अछि। एही गप-सप्पक क्रमसँ कथा आगाँ बढ़ैत अछि। सुशील लाल काकाकेँ कहैत छथि-

"काका, तीस बर्ख पूर्वक जे काज दुनू बापूत सोनेलालकेँ संगी बना संगे चलैत सपना देखने रही ओ रसे-रसे धुमिल होइत गेल। तेँ आजुक तारीकमे जँ होशियारी नइ राखब तँ कखनो आसीन मासक खेतक धान जकाँ ऊपरेसँ छोपा जाएब।"

सुशीलक बात लाल काकाकेँ नीक लगलनि, तहिना मनमे खुशी हुअ

लगलैन। पुछलखिन- "बौआ, तूँ की सभ अनुभव सोनेलालक सम्बन्धमे केलह अछि?"

ताहिपर सुशील अपन विचार व्यक्त केलक। एहि तरहेँ दुनू गोटाक बीच उक्त बिन्दुपर अनेक बात होइ छनि।

सुशील ओ लाल काकाक मध्य सोनेलालक क्रिया-कलापक सम्बन्धमे जतबा विमर्श होइत अछि ओकर परिधिमे आर किछु नहि मात्र सरोकारी विचार महत्वपूर्ण रहैत अछि। जीवनमे अहिना उतार-चढ़ाव होइत रहैत अछि। गाम-घरमे एक कहावत अत्यन्त लोकप्रिय अछि जे 'कखनो गाड़ीपर नाह तँ कखनो नाहपर गाड़ी'। नीक-बेजा सभ तरहक बिन्दुपर दुनू गोटाक बीच गप-सप्प करबैत कथाकार एहि कथाकेँ अन्त केलनि अछि। कथा अन्तो-अन्त सरोकारहिक चारू कात चक्कर लगबैत रहैत अछि। जाहिसँ पाठककेँ ई भान होइ छनि जे मनुक्खक बीच सरोकार कखनो कमैत-कमैत टुटबो करैत अछि तँ कखनो जुटैत-टुटैत नव-नव ढंगसँ निर्माण सेहो होइत अछि। कथाकारक ई विशेषता छनि जे हिनक सरोकारी शैली अद्भुत आकर्षक होइत छनि। तकर मूल कारण ई अछि जे हिनक लेखन जमीनी होइत छनि। कहवाक माने मण्डलजी यथार्थवादी रचनाकार थिकाह। हिनक एहि विशेषताक प्रसंग 'विदेह' ई पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर लिखनहुँ छथि- 'जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कथ्य प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर बेकतीगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचै छी, जे करै छी; सएह लिखै छी तइ कारणसँ'।

पनचैती पनपना गेल: एहि कथामे चारित्रीक रूपेँ लोभी, लालची लऽ कऽ सद्गुनी ओ इमानदार चरित्र चरचा सेहो भेल अछि। ताहि संग सामाजिक सरोकारक महत्वकेँ सेहो देखाओल गेल अछि। जाहि मनुक्खमे अपन कल्याणक संग दोसराक कल्याणक भावना सेहो रहत, ओइ मनुक्खक क्रिया-कलापमे, अर्थात काज करबाक दिशामे सामाजिक सरोकारक दर्शन हेबे करत। कथा पात्र सिंहेश्वर दू भैयारी छथि। हिनका दुनू भाँइमे बीस सालसँ भिनौजी छनि। जोतसीम जमीन बाँटि नेने छथि मुदा गाछी-कलम तथा फुलबाड़ी अखनो सम्मिलिते छनि।

ताहि पाछू दुनू भैयारीक अपन सोच-विचार छनि। सोच ई छनि जे खेती तँ सभदिना काज थिक तेँ अपन-अपन करबो करब अछि आ अपने-अपने भोगबो करब, मुदा गाछी-कलम तँ से नहि थिक। भलेँ अपनहि रोपल किए ने अछि मुदा ओकरा फड़ाएब तँ अपना हाथमे अछि नहि, सालमे एकबेर फड़त कि नइ फड़त, तहूमे जँ एक दियादक गाछ फड़ि जाए आ दोसर दियादक गाछ फड़बे ने करय, तखन तँ खाइ-पीबैमे दुनू भैयारीक बीच दू रंग भऽ जाएत।

'खाइमे दू रंग भऽ जाएत', एहि सोचमे कतेक पैघ रहस्य अछि? यएह सोच एहि कथामे कहियौ कि सिंहेश्वर भाइक विचारमे, महत्वपूर्ण अछि।

ओना, एहि कथामे उचितलाल भाय सेहो एक पात्र छथि। उचितलाल भाय सामाजिको पनचैतीमे आ पारिवारिक पनचैतीमे सेहो जाइत-अबैत छथि। मुदा आम-कटहरक पनचैतीक तँ विशेषज्ञे छथि। जे गामक सभकियो जनैत छनि। तेँ बेसी लोक हिनकहि पंच मानैत छनि। मुदा से मात्र मुँहगर लोक। हिनक चरित्रहु मुहेँ देखि मुंगबा बाँटैबला रहल छनि।

सिंहेश्वर ओ बाघेश्वर दुनू भाँइ तँ गुजरि गेलाह। दुनू भाँइकेँ तीन-तीन गोट बेटा छनि। गाछी-कलम साझी रहने आमक बटवारा करेबाक छेलइ। उचितलाल भायकेँ बजा आमक बटवारा कराओल जाइत अछि। जाहिमे दू रंगक बटवाराक कारणेँ उचितलाल भायकेँ अर्जुन तीनू भाँइ मिलिकऽ गोलिया लेलकैन। जाहिसँ मामिला बढ़ि जाइत अछि। एहि प्रसंग पनचायत भवनपर पनचैती राखल जाइत अछि। उचितलाल भाय दोषी ठहरि जाइत छथि। उचितलाल भायकेँ भरल सभामे अर्जुन कहि दैत छनि- "आम सन अदना वस्तुपर जखन अहाँक धीर्त नइ रहल तखन समाजक उचित-कल्याणमे धीर्त रहत?"

समाज तँ समाज थिक जाहिठाम सभ तरहक नजरि एकसंग कार्य करैत अछि। जहिना बिलमे जखन साँप जाए लगैत अछि तँ सोझ हुअ पड़ैत छैक तहिना समाजक सोझमे केहनो टेंढ़ लोक अछि तकरा सोझ हुअ पड़िते छनि। समाजक समक्ष वएह व्यक्ति श्रेष्ठ अछि, पूज्यनीय अछि जनिकामे मानवीय चेतना छनि, सामाजिक सरोकार छनि। यएह एहि कथाक उद्देश्य अछि जाहिमे अद्भुत सामाजिक सरोकारक दर्शन स्वत: भऽ जाइत अछि।

लेहाज: शीर्षकहि सदृश मनुक्खपनक लेहाज एहि कथाक कथानक अछि। जीवनमे जहिना वैचारिक पक्ष महत्व रखैत अछि तहिना व्यवहारिक पक्ष सेहो महत्वपूर्ण होइत अछि। मुदा कोनहुँ पक्षकेँ महत्वपूर्ण आकि महत्वहीन होमएमे बुझवाक ढंग अत्यन्त मायने रखैत अछि। जँ कोनहुँ व्यक्ति सामाजिक उत्थानक पक्षमे छथि, समाजक कल्याणक लेल ओ नीक-नीक बात बजैत छथि, भाषण करैत छथि, लोकसभकेँ जमा करैत छथि आदि-आदि। तँ एहिसँ हुनक सामाजिक सरोकारक परिचय होइत छनि। मुदा ताहि बीचमे एक विचारणीय बिन्दु ई अछि जे ओ व्यक्ति समाजक उत्थान, समाजक कल्याणकेँ बुझि क्रिया रूपमे कार्य कऽ की रहल छथि? ई महत्वपूर्ण प्रश्न अछि। महत्वपूर्ण प्रश्न ईहो अछि जे ओइ व्यक्तिक वास्तविक उद्देश्य की छनि?

एहि लेल आवश्यक अछि जे ओ समाजकेँ कोना देखि रहलाह अछि, समाजकेँ बुझि की रहला अछि आ ताहि लेल हुनक काजक दिशा की छनि? ततबे नहि, समाजक कल्याणक हेतु हुनक कार्य चयनक प्रक्रिया की छनि तथा चयनित कार्यक प्रति उद्देश्यमे निहित समाजक कतेक प्रतिशत लोकक कल्याणक संभावना देखा पड़ैत अछि। एहि सभ बिन्दुपर गौर करब आवश्यक अछि।

तात्पर्य, तखनहि सामाजक प्रति वास्तविक सरोकार देखार भऽ सकैत अछि। जाहि व्यक्तिकेँ अपन संकल्पक संग सरोकार नहि छनि, अप्पन उद्देश्यसँ कोनो मतलब नहि छनि, ओ समाजक संग की सरोकार राखि सकताह। एही बिन्दुकेँ उजागर करबाक लेल कथाकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डल ‘लेहाज’कथाक सृजन केलनि अछि।

प्रस्तुत कथामे ठक्कन ओ वरस्पैत नामक दू गोट दोस्तक बीचक ‘लेहाज’क चरचा भेल अछि। दुनू दोस्त संगहि-संग पढ़ाइ-लिखाइ केलनि। दुनू एक्कहि कॉलेजसँ बी.ए. पास केलाह। दुनू गोटे संकल्प केने छलाह जे घूस दऽ कऽ नोकरी नहि करब।

अन्तत: दुनूमे सँ किनकहु नोकरी नहि भेलनि। पछाति दुनू व्यक्ति विचार केलाह जे गाममे रहि किछु नव काज करब। संयोगवश लक्ष्मी पूजाक समय आबि

चुकल छल। दुनू दोस्तक आगुआइमे गाममे लक्ष्मी पूजाक आयोजन भेल, खूब नमहर मेला सेहो लागल। सफल पूजा व मेलाक चलैत दुनू व्यक्तिक प्रशंसा सेहो गाममे नीक जकाँ भेल। सभ साल लक्ष्मी पूजा गाममे हुअए, एकटा स्थानक निर्धारण हुअए, एहि हेतु समाजमे विचार चलए लगल। समाजक सहयोग पाबि बरस्पैत आगूक काज समाजकेँ सुमझा देलकैन मुदा ठक्कन चन्दा उगाही देखि अपनाकेँ ओइमे साटि लेलक।

वरस्पैत अपन लेहाज बँचेबाक हेतु डेग उठा अपनाकेँ बँचौलनि मुदा ठक्कन अपन लेहाज उठा, आमदनी देखि आगूक काजमे रमि गेल।

ठक्कन ओ वरस्पैत नामक दुनू पात्रक वास्तविक चरित्र उपरोक्त कथाक माध्यमसँ जे उजागर कएल गेल अछि। ताहिमे कथाकारक मूल भाव की छनि? हुनकर मूल भाव यएह छनि जे जाहि व्यक्तिकेँ अप्पन संकल्पक संग सरोकार नहि ओ समाजक संग की सरोकार राखि सकत। एहि लेल ओ ठक्कन नामक पात्रक अवतारणा केलनि अछि। मुदा ओहीठाम वरस्पैत नामक पात्रक चरित्रकेँ सेहो उजागर कएल अछि। वरस्पैत अप्पन चरित्रकेँ ध्यानमे राखि आगूक डेग उठबैत अछि।

वरस्पैतिक चरित्रमे, माने ओ जे आगूक डेग उठबैत छथि ताहिमे सामाजिक सरोकारक वास्तविक स्वरूप निहित अछि। जाहि मनुक्खकेँ अप्पन संकल्पसँ वास्तविक सरोकार रहत ओकरहि क्रिया-कलापसँ समाजक कल्याण सम्भव अछि। ठीक एकर विपरित, जकरा अपनहि जीवनसँ सरोकार नहि रहत, अपनहि संकल्पसँ सरोकार नहि रहत, ओकर क्रिया-कलापसँ कोनहुँ मनुक्ख अथवा समाजकेँ किछु लाभ नहि भऽ सकत। जहिना हुनक अप्पन जीवन अवनतिक दिशामे बढ़ि जेतनि तहिना समाजकेँ सेहो हानि छोड़ि लाभ नहि हेतनि।

पटियाबला: एहि कथामे मिथिलाक दीप गामक निवासी सुलेमानक जीवन-संघर्षक चरचा नीक जकाँ भेल अछि। सुलेमान सन-सन बहुतो परिवारक जीविका छल कपड़ा बूनब। दीप गाम 'मिथिला दीप' नामे प्रसिद्ध अछि। एहि गाममे लगभग सए परिवार जोलहा-धुनिया जातिक अछि, जनिका लोकनिक मूल कार्य कपड़ा बूनब छल। जे कि खादी भण्डारसँ सूत आनि-आनि कपड़ा बुनैत

छल आ पुन: खादी भण्डार जाकऽ ओ सभ कपड़ा बेचैत छलाह। मुदा जखन एहिठामक खादी भण्डार बन्द भऽ गेल तखन हुनका लोकनिक जीवनक आगू संकट ठाढ़ भऽ गेलनि। खादी भण्डार बन्न भेलासँ अनेको परिवारक आगू जहिना संकट ठाढ़ भेल तहिना सुलेमानक संग सेहो भेल। पछाति सुलेमान बम्बई चलि गेल आ ओतए लूम चलबए लगल। धीरे-धीरे नीक कमाइ हुअ लगलैक। मुदा किछु दिनक पश्चात ओहिठाम बिहारी-मराठीक भेद-भावक व्यवहार शुरू भेल। धीरे-धीरे जेना उधुक्का उठि गेल जाहिमे कतेको लोक अपन जान सेहो गमौलनि। सुलेमान अपन जान बँचा ओतएसँ गाम चलि आएल।

सुलेमानक परिवारमे आर कियो नहि, मात्र दुइये परानी। सुलेमान पटिया बूनब आ बेचब शुरू केलक। कमजोर शरीर तथापि सुलेमान अप्पन जीवनक संग संघर्ष करबाक लेल मिथिलाक भूमिपर तैयार अछि। जेठ मास रहैक पटिया बेचिकऽ अबैत-अबैत सुलेमानक स्थिति खराव भऽ गेलैक। दिनक तीन बजैत समय छल। अप्पन पड़ोसी गामक श्यामसुनरजीक ओतए सुलेमान पहुँचि गेल। देबालमे साइकिल अँटका दरबज्जापर पहुँचैत-पहुँचैत सुलेमान खसि पड़ैत अछि।

स्थिति सामान्य भेलाक पश्चात श्यामसुनरकेँ सुलेमान कहलकैन जे किछु खाएब? खेनाइ आ पानि आगूमे दऽ श्यामसुनर लगमे बैसैत छथि। सुलेमान खेबो करैत आ गप्पो-सप्प करैत श्यामसुनरजीकेँ कहलकैन- “भाय, माए-बापक बड़ दुलारू बेटा छेलिऐ। खाइ-पीबैक कोनो दुख-तकलीफ परिवारमे नै रहए। कपड़ाक कारोबार छल। चरखा चलबैसँ लऽ कऽ खादी भण्डारसँ हाट धरिक कारोबार छल।”

श्यामसुनरक मनमे उठलैन- मोबाइल, टी.बी, कम्प्यूटर, कपड़ा, जूतासँ घर भरल रहै छै मुदा सबुरक कतौ ठेकान नहि। भरि पेट अन्न नहि, फटलो वस्त्र नहि, मुदा छुच्छहो घरमे सबुर कोना फड़ि जाइ छैक! सुलेमानक पारिवारिक जिनगीक ललिचगर गप सुनि श्यामसुनर जिज्ञासा केलनि- “ओ कारोबार किए छोड़ि देलिऐ? मेहनतो आ आमदोक खियालसँ तँ नीके छेलए?”

अपन बामा हाथसँ चानि ठोकैत सुलेमान बाजल- “गाम-गामक बाबू-भैया सभ गरीबक कारखाना उजाड़ि देलक। खादी भण्डारकेँ लूटि लेलक। छुच्छे हाथे

की करितौं।”

फेर जिज्ञासा करैत श्यामसुनर पुछलखिन- “कोन-कोन तरहक कपड़ा बनबै छेलिऐ?”

सुलेमान- “पहिरन वस्त्रसँ लऽ कऽ ओढ़ैक सलगा धरि बनबै छेलिऐ।”

सुलेमान ओ श्यामसुनरजीक बीचक बात-विचार ओ क्रिया-कलापक संग पारिवारिक सम्बन्धसँ जे स्पष्ट होइछ ओ अपने-आपमे मिथिलाक धरोहरि थिक, मिथिलाक मानवीय सरोकार थिक। एहिठामक एहि तरहक व्यवहार ने मात्र अनुकरणीय रहल अछि अपितु विश्व प्रसिद्ध सेहो रहल अछि। प्रस्तुत कथाकेँ अन्त धरि पढ़ैत-पढ़ैत मिथिलाक श्रमजीविलोकनिक ने मात्र जीवन-संघर्षक दिग्दर्शन होइत अछि बल्कि एहिठामक सामाजिक ओ मानवीय सरोकार सेहो नीक जकाँ देखार होइत अछि।

पछुआ गेलौं: एहि कथामे दयाराम काका ओ राधेश्याम, यएह दू गोटा पात्रक भूमिकामे छथि। दुनू गोटा किसान छथि, गाम-घरक लोक छथि। हिनका दुनू गोटामे गप-सप्प होइत छनि। चिन्तित मुद्रामे दयाराम काका अपन दरबज्जापर बैसल रहैत छथि। आपसमे नित्य भेँट-घाँट ओ गप-सप्प होइत रहैत छनि मुदा एहि बीचमे आठ दिनसँ दुनू गोटामे गप-सप्प नहि भेल छलनि।

राधेश्याम उत्तरवरिया बाधक अपन खेत दिससँ घुमि-फिरि अबैत रहैत छथि। टोलमे प्रवेश करिते पहिने दयाराम काकाक घर पड़ैत छनि। राधेश्यामकेँ एकाएक इच्छा होइत छनि जे आइ आठ दिनसँ दयाराम काका भेँट नहि भेलाह अछि, से नहि तँ आइ हुनका भेँट करैत जाएब।

राधेश्याम जखन दयाराम काकाक घर सीके एलाह तँ सड़कसँ उतरि हुनका दरबज्जापर पहुँचैत छथि। दरबज्जाक चौकीपर बैसल दयाराम काकाकेँ देखिते राधेश्याम बजलाह- “काका, गोड़ लगै छी।”

दयाराम काका जवाब देलथिन- “नीके रहह। केम्हर गेल छेलह?”

एते काल दयाराम काकाक चेहरा देखि राधेश्यामकेँ बुझि पड़ल रहनि जे काका सोगाएल छथि मुदा आब हुनकर बोलीसँ सहो बुझि पड़लनि जे दयाराम

काका जरूर कोनो सोगसँ सोगाएल छथि। कोन सोग, कथीक सोग छनि, ई बुझैक जिज्ञासा राधेश्यामक मनमे बढ़ैत गेलनि। दुनू गोटाक बीच गप-सप्प चलैत अछि। ताहि बीचमे दयाराम काकाक पोती- सुमित्रा दू कप चाह लऽ कऽ अबैत अछि। राधेश्याम सुमित्राक चेहराकेँ सेहो पढ़ैत अछि। चाह पीबैत राधेश्यामकेँ बुझि पड़लनि जे दयारामा काका असकरे नहि चिन्तित छथि बल्कि हिनकर परिवारक अन्य सदस्यलोकनि सेहो सोगाएल छनि। आब आरो जिज्ञासा राधेश्यामक बढ़ि गेलनि। गम्भीर सोग दयाराम काकाक चेहरासँ राधेश्यामकेँ बुझि पड़ि रहल छलनि।

दुनू गोटक बीच कतेको प्रसंगपर गप चलैत अछि। गामक विषयमे सेहो गप चलैत अछि जे इलाकामे अपन गाम गरीब गाम अछि। गामक घर-दुआरक सन्दर्भमे सेहो गप-सप्प चलैत अछि। द्रष्टव्य अछि: "अपना गाममे कम पढ़ल-लिखल रहने गोटि-पङ्गरा लोअर प्राइमरीसँ मिडिल स्कूल तकक शिक्षक आ ऑफिसक किरानी अछि, जखन कि आन गाममे हाकिम-हुक्कामसँ लऽ कऽ डॉक्टर-वकील-प्रोफेसर सभ छथि तेँ आमदनी बेसी रहने घरो-दुआर नीक बनौने छथि। अपना गाममे ओहन चारिअना लोक अछि जे पजेबाक घर बनौने अछि। बाँकी लोक ओहने अछि जे कियो निच्चाँ काँच ईंटा वा भीतक देबालपर चदरा वा खपड़ा देने अछि आ किछु एहेन लोक सेहो अछिए जे अखनो खढ़े-नारसँ घर छाड़ने अछि। अपनो तेहीमे छी।"

राधेश्यामक मनक जे खोज रहनि ताहिपर नजरि रहनि तेँ ओ लगातार ओइ दिशामे अपन गप बढ़बैत रहथि। गप-सप्पक क्रममे एक बेर दयाराम काका अपन बाबाक कहल बात बजैत छथि- "बाबा कहै छला जे जँ माइटिक भीतघर रहए, मुदा ओइमे मूस सभपर नजैर राखी जे केतौ बिल ने करय आ नार वा खढ़सँ मोटगरसँ ऊपर छाड़ि दिऐ तँ कोठो घरसँ आरामदेह होइए। जहिना जाड़क मासमे जाड़सँ रक्षा करैए तहिना गरमी मासमे गरमी आ बरसातक मासमे बरखासँ सेहो रक्षा करिते अछि।"

क्रमश: अनेक गप चलैत-चलैत दयाराम काका अपन असली दुखकेँ खोलैत बजलाह- "राधेश्याम, कखनोकाल असगरेमे, माने एकाग्र भऽ जखन

सोचै-विचारै छी तखन बुझि पड़ैए जे बाबाक अमलदारीक समयमे हुनकर विचार जेतेक उपयोगी, नीक रहल होनि, मुदा आजुक परिवेशमे ओ अनुपयोगी भइये गेल अछि।”

मुदा तैयो राधेश्याम नीक जकाँ नहि बुझि सकलाह जे दयाराम काकाक सोगक असली कारण की छनि। तैँ गप आरो आगाँ बढ़बैक कोशिशमे राधेश्याम लागल छथि। गपक क्रम जखन आरो आगाँ बढ़ैत अछि तखन दयाराम काका बजैत छथि जे हम कालक फेरमे पड़ि गेलौं। असलमे दयाराम काकाक घर फूसिक छनि। माने जतय लोक अपना घरपर आब खपड़ा, चदरा चढ़ा लेलक अछि ओतय अखनो हिनकर घर खढ़ेसँ छाड़ल छनि। आब समय बदलिकऽ ओतय चलि आएल अछि जतय घर छाड़निहार मिस्त्री एकोटा ने गाम अछि। जेहो छल ओ मरि गेलाह। आबक लोक घर छाड़ब सीखबे किएक करता। प्राय: लोकक घर पक्का मकान बनि गेल अछि। किछु-किछु जे फूसिघर-टटघर अछियो ताहिपर चदरा-एस्बेस्टस अछि।

मिस्त्रीक अभावमे दयाराम काकाक घर पछिले सालसँ छाड़ब पछुआएल छनि। किछु दिन पूर्व जेठुआ बर्खामे समुच्चा घर चुबैत रहलनि आ सभ परानी बर्खामे भीजैत रहलाह। अही समस्यासँ ग्रसित दयाराम काका चिन्तित छथि। आब हिनका बुझि पड़ि रहलनि अछि जे अपने पछुआ गेलौं। ओ कहैत छथि हम कालक फेरमे पड़ि गेलौं। अर्थात समय आगू बढ़ि गेल आ अपने पाछू रहि गेलौं। एतावता एहि कथाक शीर्षक ‘पछुआ गेलौं’क सार्थकता सेहो एहीठाम पूर्णत: देखार भेल अछि।

निष्कर्षत: कहल जा सकैए जे एहि कथामे दयाराम काका सन मनुक्खक प्रति कथाकार अपन सरोकारकेँ नीक जकाँ स्पष्ट केलनि अछि। संगहि, राधेश्यामक भाव, क्रिया-कलाप ओ व्यवहारमे सामाजिक सरोकारक नीक दृश्य सोझामे आएल अछि। एक दिस बदलल समयक चरचा करैत दयाराम काकाकेँ पछुआ जेबाक दृश्य सोझामे आएल अछि तँ दोसर दिस एहि व्यस्त समयमे राधेश्यामक निश्चिन्तता ई स्पष्ट करैत अछि जे दयाराम काकाक प्रति, गाम-समाजक प्रति, किएक तँ अनेक बिन्दुपर गाम-समाजक चरचा होइत अछि,

हृदयमे बेस सरोकार छनि।

'बाबी' शीर्षक कथाकेँ छठि पावनिक दास्तावेज कहल जा सकैए। जेना लगैछ, कथाकार जगदीश प्रसाद मण्डलजी अप्पन आँखिक देखल सभकिछु लिखने छथि। 'छठि' मिथिलाक प्रसिद्ध पाबैन थिक। एहि कथामे 'छठि' पावनिक तैयारीसँ लऽ कऽ समापन धरिक सम्पूर्ण यात्राक दर्शन होइत अछि। मण्डलजीक अहू कथाकेँ हुनक अनुपम कृति कहल जा सकैए। प्रस्तुत कथा हुनक प्रसिद्ध पोथी 'गामक जिनगी'मे संग्रहित अछि। उक्त संग्रहमे जहिना आर-आर कथासभ गाम-समाजक दास्तावेज सिद्ध भेल अछि तहिना अहू कथाकेँ गाम-समाजक दास्तावेज मानल जा सकैछ। छठि पावनिक वास्तविक स्वरूपक दर्शन एहि कथामे तँ होइते अछि जे ताहि संग ग्रामीण समाजक आस्था आ विश्वासक दिग्दर्शन सेहो होइत अछि।

मिथिलाक लोक छठि पावनिक तैयारीमे दशमीएक बादसँ लागि जाइ छथि। एही क्रममे सिरखरियावाली बाबीसँ पुछै छनि- "बाबी, छठिकेँ केते दिन छइ?" पुछि

बाबीकेँ सभ पाबैन-तिहारक तिथि-विधि बुझल रहैत छनि। जनिका जे किछु पुछबाक रहल ओ बाबी लग आबि पुछि लैत छनि। बाबी सहज हृदयक लोक छथि। समस्त ग्रामवासीकेँ अप्पन परिवार सदृश मानैत छथि। तखनहि तँ एहन सहजता हुनकामे छनि। कियो जँ अप्पन धिया-पुताकेँ दमसबैत अछि तँ से बाबीकेँ नीक नहि लगैत छनि। बाबीक सोझमे कियो अपनो धिया-पुताकेँ एक थापर मारि नहि सकैत अछि, ततेक धाक बाबीक छनि गाम-समाजमे।

पावनिक वस्तु-जातक व्यवस्थामे किनको जँ कोनो कमी रहि जाइछ तँ ओ बाबीए लग आबि अपन समस्या रखैत अछि। एहि प्रसंग सोनरेवालीक बानगी द्रष्टव्य अछि- "बाबी, नीक की अधला तँ हिनके कहबैन किने। देखथुन जे पाइ दुआरे ने छिट्टा भेल आ ने कोनियाँ।"

सोनरेवालीक बात सुनि बाबी गुम्म भऽ गेली। कनीकाल धरि गुम्म रहि बजली- "नइ पान तँ पानक डण्टियोसँ काज चलैए। जेकरा छै ओ सोना-चानीक

कोनियाँमे हाथ उठबैए आ जेकरा नइ छै ओ तँ बाँसोक सुपतीसँ काज चलबैए। तइले मन किए ओछ केने छह। सभकेँ की सभ किछु होइते छइ। जेकरा जेते विभव होइए ओ ओते लऽ कऽ पाबैन करैए, तँ की दिनकर केकरो कुभेला करै छथिन।”

प्रस्तुत कथामे सामाजिक सरोकारक अद्भुत रूप बाबीक एक-एक क्रिया-कलापमे देखल जा सकैछ। रहमतक माए सेहो छठि पाबैनमे डाली लगबैत छथि। एहि पावनिक अवसरिपर मिथिलामे साम्प्रदायिक सौहार्दक व्यवहार सेहो देखल जाइत रहल अछि। ओना, तँ आनो-आन पाबैन-तिहारसँ लऽ कऽ कतेको मांगलिक अवसरिपर साम्प्रदायिक सम्बन्ध ओ व्यवहारकेँ देखल जाइते अछि मुदा छठि पाबैनमे हिन्दू-मुसलमानक बीचक सम्बन्धक अनुपम रूप देखल जाइत अछि। ताहूमे, सम्बन्धित दृश्यकेँ मण्डलजी आरो अद्भुत रूपेँ प्रस्तुत केलनि अछि। विषय तँ सभक आँखिक सोझहेक थिक मुदा हिनक लेखन-शैली एहन छनि जाहिमे वएह चित्र अप्पन अद्भुत आकार लऽ लेलक अछि। असलमे, कथाकारक हृदयेमे मानवीय सरोकार कुटि-कुटिकऽ भरल छनि तँ ओ एहन चित्र रचि पबैत छथि।

केकरा-ले केलौं- प्रस्तुत रचना समसामयिक विषयपर लिखल एक अनुपम कथा थिक। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जहिना आन-आन रचनासँ ई स्पष्ट होइछ जे मण्डलजी सदिखन वर्तमानकेँ लिखबाक पक्षधर छथि, तहिना एहू रचनामे देखल जा सकैछ। मण्डलजी भूत ओ भविष्यक उपेक्षा तँ नहि करैत छथि मुदा अपेक्षाकृत वर्तमानपर विशेष बल दैत छथिन ई हिनक पहिचान थिकैन।

बिहारमे अखन जमीनक सर्वेक कार्य चलि रहल अछि। नित्य-नियमित भेँट-घाँट होमएबला संगी काका आइ सात-आठ दिनसँ रूपलालकेँ भेँट-घाँट नहि भऽ रहलनि अछि। किएक ने भेँट-घाँट भऽ रहलनि अछि? तँ एकर कारण अछि जे ओ सर्वेक कार्यमे ओझराएल रहवाक कारणेँ अपन संगी काकासँ भेँट नहि कऽ पबैत अछि। ओना, रूपलालकेँ अनका जकाँ बेसी जमीन नहि छैक, तँ ई मने-मन निर्णय सेहो केने छल जे जखन सर्वे ऑफिसमे काज पतरा जाएत तखन एक दिन निचेनसँ जाएब आ अप्पन कार्य करबा लेब। मुदा तैयो रूपलाल उक्त

कार्यमे ओझराएले रहैत छथि। ओझराएल एहि दुआरे रहैत छथि जे सर्वेक कारण गामक वातावरणहिमे जेना उजैहिया उठि गेल छैक। हरिदम कियो-ने-कियो हिनका लग अबैत रहैत छनि आ किछु-ने-किछु कहैत रहैत छनि। कियो कहैत छनि जे हमर जमीनक कागजे ने भेटि रहल अछि, तँ कियो कहैत छनि जे हमर जमीनक कागज 87क बाढ़िक पानिमे सड़ि-गलि गेल, तँ कियो कहैत छनि हम अप्पन जमीनक करेंट रसीद नहि कटवौलौं तैँ हमरा लग करेंट रसीद अछिए नहि। आदि-आदि।

जखन रूपलाल अप्पन खेतक सर्वेक कार्य बादमे माने जखन सर्वे ऑफिसमे भीड़-भाड़ कमि जाएत, तखन करेवाक निर्णय लऽ चुकल छथि तेकर बादो रूपलालकेँ काफी व्यस्तता रहैत छनि। हिनकर उपरोक्त व्यस्ततासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे हिनकामे जेँ सामाजिक सरोकार छनि तैँ ओ एहि तरहेँ व्यस्त रहैत छथि। हिनकर आइ आठ दिनसँ संगी काकासँ भेँट करबाक क्रम टुटि चुकल छनि। ओ कहैत छथि- 'सर्वे-काजक धुमसाहीमे तेना फँसि गेल छी जे संगी काकासँ भेँट करैक गरे ने लागि रहल अछि।'

एहि तरहेँ प्रस्तुत कथामे रूपलालक सामाजिक सरोकारक दर्शन होइत अछि। संगहि जखन रूपलाल अप्पन संगी काकाक ओतए जा कऽ हुनकासँ भेँट करैत अछि तखनहु एक प्रकारक सामाजिक सरोकार देखल जाइत अछि।

सुखाइत जीवनमे नव कलश: एहि कथामे एकटा बालक केर जीवन-संघर्ष आएल अछि। कथाकार कुल छह गोट पात्रक माध्यमसँ एहि कथाकेँ पूर्ण केलनि अछि। ओ पात्र सभ क्रमश: 1. गणेशी, 2. अलोधनी, 3. यशोधर, 4. हेमन्त बाबू, 5. गोपीनाथ आ 6. गंगाराम अछि। ई कथा 'मौन' नामक पोथीमे संग्रहित अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक ई 'मौन' 122म पोथी छियनि।

'सुखाइत जीवनमे नव कलश' शीर्षक कथामे 'गणेशी' नामक एकटा बालक अछि जे हाइ स्कूलमे पढ़ैए। ओकर माए-बाबूकेँ बाजार जेबाक छेलै तैँ पहिने गणेशीकेँ स्कूल विदा केलाक पश्चात दुनू परानी बाजार विदा भेलैथ। कुसंयोगवश दुनू परानीक मृत्यु रोड एक्सीडेंटमे भऽ जाइत छैक। गणेशी एसगरे रहैत अछि। परिवारमे आर कियो ने छैक। एहन परिस्थितिमे गणेशीक माम अबैत

छथिन। ओ विचार करैत रहैत छथि जे आब गणेशीक लालन-पालन कोना होयत। से नहि तँ अपना ओतए लऽ जाइऐ..। ताही बीच गणेशीक ग्रामीण गोपीनाथ अपन सामाजिक दायित्वकेँ पूरा करैत अछि। गोपीनाथ मुम्बईमे रहैत छथि। ओइठाम ओ एकटा सेठक घरमे नौकरी करैत छथि। कथाकारक शब्दमे गोपीनाथक परिचय द्रष्टव्य अछि- 'गोपीनाथ गामक एकटा नवयुवक। जहिना शरीरसँ हट्ठा-कट्ठा तहिना विचारसँ सेहो कर्मठ आ इमानदार अछि। दस बर्खसँ मुम्बइमे रहैए। शुरूमे, माने पहिले-पहिल जखन गोपीनाथ मुम्बइ गेल, तखन बेसी पढ़ल-लिखल नइ रहने लिखा-पढ़ीक नोकरी तँ नइ भेलै मुदा कारखानामे श्रमिकक नोकरी भऽ गेलइ। गोपीनाथ जहिना काज करैमे पीच्छड़ तहिना चरित्रसँ इमानदार सेहो अछिए। तीन साल बीतला पछाइत गोपीनाथकेँ सेठ, माने कारखानादार, कारखानासँ अप्पन कोठीक काजमे लऽ अनलक। कोठीमे अबिते परिवारेजन जकाँ गोपीनाथ सेहो रहय लगल। अपने परिवार जकाँ गोपीनाथ काज करय लगल। सेठक एहन विश्वासपात्र गोपीनाथ भऽ गेल जे परिवारे जन जकाँ सभ किछु सेठ सुमझा देलखिन। तेसर कियो ई नइ बुझैत जे गोपीनाथ नोकर छी। आन नोकर जकाँ सेठ गोपीनाथकेँ दरमाहाक रूपमे निश्चित रकम नइ दइ छथिन। खाँहिसक हिसाबसँ मुँहमंगा दइ छथिन।'

नीक विश्वास गोपीनाथपर सेठक छनि। गोपीनाथ गणेशीकेँ अपना संग मुम्बई लऽ जेबाक बात कहैत छथिन। गोपीनाथक प्रस्तावपर गणेशीक माम राजी भऽ जाइत छथिन। गोपीनाथक संग गणेशी मुम्बई चलि जाइत अछि। ओहिठाम ओ मनोयोगसँ काज करय लगैत अछि। जे जीवन टुटि कऽ नष्ट होइक कगारपर छल, गोपीनाथक सहयोगसँ ओ जीवन उठिकऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। कथाकार एही बिम्बपर एहि कथाक शीर्षक 'सुखाइत जीवनमे नव कलश' रखलनि अछि। कथाक शीर्षकक सार्थकता एहिठाम आबिकऽ सिद्ध होइत अछि।

कथामे सामाजिक सरोकार ओहूठाम सिद्ध होइत अछि जाहिठाम दुनू परानी यशोधरक मृत शरीरक अगिला क्रिया-कर्म होइत अछि। उक्त प्रसंग कथाकारक शब्दमे- "यशोधरक मृत्यु सुनि हेमन्तबाबू जेना संवेदनशून्य भऽ गेलाह। सकदम्म भेल हेमन्तबाबूक मनमे अनेको रंगक विचार बरखा-पानिक बुलबुला जकाँ अपने उठबो करैन आ अपने फुटबो करैन। गणेशी जेना हिनका

हियमे गड़ि गेलैन। माता-पिता जहिना बच्चाक जन्मदाता गुरु होइ छथि तहिना ज्ञानदाता गुरु शिक्षक सेहो होइते छथि। मन कहलकैन, गणेशी भलेँ यशोधरक सन्तान छी मुदा अपनो तँ बेटातुल्य छात्र सेहो छीहे। आब ओइ बच्चाक की दशा हएत? घटनाक गहराइमे जेतेक हेमन्तबाबू पहुँच रहल छला तेतेक हुनकर मन उद्विग्न भेल जा रहल छेलैन। देहमे थरथरी सेहो बढ़ले जा रहल छेलैन। अन्तमे विद्यालयमे छुट्टी दऽ देलखिन। विद्यालयमे छुट्टी भेलाक बाद शिक्षको सभ आ छात्रो सभ तँ अप्पन-अप्पन घर दिसक रास्ता पकड़लैन मुदा हेमन्तबाबू गणेशी ऐठाम विदा भेलाह। ओना, अप्पन परिवारक कियो कननिहार यशोधरकेँ नहि छेलैन मुदा गाम-समाजक लोक जरूर कानि रहल छल। बाल-बोध गणेशी अदंकसँ चेतनशून्य जकाँ भऽ गेल छल। मुहसँ किछु निकैल नहि रहल छेलइ। समाजो तँ समाज छीहे। आजुक मनुक्खमे केतबो एकाकीपन किए ने आबि गेल अछि मुदा तैयो एतेक सामाजिकता तँ जीवित अछिए जे एहेन-एहेन बेर-बिपैतमे लोक एक-दोसराक आगूमे ठाढ़ होइते छथि। एक गोरे कफन आ कुर्ताक कपड़ा खातिर रुपिया देलखिन। एक गोरे कपड़ा अनैले बाजार गेलाह। एक गोरे चचरी बनबैले बाँस देलखिन। एक गोरे लहासकेँ जरबैले जरना गछि लेलखिन। ऐ तरहेँ लहास जरबैक सभ ओरियान देखिते-देखिते भऽ गेल।”

एहि तरहेँ कथामे सरोकारक विविध रूप देखबामे अबैत अछि। आजुक परिवेशमे भलहिं एकाकीपन जोर-शोरसँ आबि गेल अछि मुदा मिथिलाक समाजमे अखनो सामाजिक दायित्वकेँ बुझएबला लोकक कमी नहि अछि। एहिठाम अखनो सामाजिक सरोकार नीक जकाँ जीवित अछि। जरूरत अछि मात्र देखबाक ढंग ओ दृष्टिक।

पीपरक गाछ: ‘पीपरक गाछ’ नामक एहि कथामे रविकान्त बाबू अवकाश ग्रहण कए गाम अबैत छथि। आइसँ डेढ़-दू वर्ष पूर्वहिमे गाम आबि मकान बनबौने छलाह। घरक सटले एक गोट पीपरक गाछ जनमि जाइत अछि। घरमे ताला लागल रहने तथा लोकक आवाजाही नहि रहने ओ गाछ तेजीसँ बढ़ि जाइत अछि। पीपरक गाछक प्रति सामाजिक आस्था अछिए। लोक ओइ गाछक जड़िमे पूजा-पाठ करब शुरू कए दैत अछि। पीपरक गाछक प्रति जे आस्था अछि ओ ग्रामीण लोकमे धीरे-धीरे बढ़ैत गेल। धीरे-धीरे ओइठाम मेला-लागए लगल।

रविकान्त बाबू जखन गाम अएलाह आ देखलनि जे ई गाछ तँ आगाँ चलि कऽ विशाल रूप लऽ लेत। घरक सटल कोनो पैघ वृक्ष तँ नीक नहि होइत अछि। ओ ओइ गाछकेँ काटए चाहलनि। गाछकेँ काटैसँ हुनक पत्नी 'अपराजित' मना केलथिन। हुनका नजैरमे जे धार्मिक आस्था पीपरक गाछक प्रति रहनि ताहि कारणेँ बजली- "पीपरक गाछ छी, ऐ गाछपर देवी-देवता रहै छथि। तेँ नीक छोड़ि अधला थोड़े हएत। देखिते छी जे लोक देवी-देवताकेँ अपना घरमे पीरी बना पूजै छथि, अपनोसभ पूजब।"

अन्तमे रविकान्त बाबू वनविभागक कार्यालय पहुँचैत छथि। आग्रह केलापर वन विभागक कर्मचारी आबि ओइ गाछक निरीक्षण करैत छनि। एहिठामक परिस्थिति देखि कर्मचारी ओइ गाछकेँ काटवसँ मना करैत अछि। अनुमण्डलसँ जिला कार्यालय धरि दौड़-बड़हा केलाक बावजूदो जखन रविकान्त बाबू निराश भऽ गेलाह तखन मकशूदनसँ भेँट करैत छथि। मकशूदन ग्रामीण छथिन, नेतागिरी सेहो करैत छथि। रविकान्त बाबू मकशूदनसँ भेँट कए अप्पन समस्याक जनतब देलखिन। विचार-विमर्श करैत मकशूदन कहलकैन जे मंत्रीजी लग चलू पटना। ओहूठाम दुनू गोटा पहुँचलाह। ओतए हिनका माने रविकान्त बाबूकेँ आश्वस्त तँ कएल गेलनि मुदा व्यवहारिक रूपमे समस्या यथावत रहलनि। पछाति रविकान्त बाबू खिन्न रहय लगलाह। पत्नीक संग सेहो नोक-झोक शुरू भऽ गेलनि।

एहि तरहेँ कथा समाप्त होइत अछि। एहि कथामे सरोकारक विविध रूप देखल जाइत अछि। जहिना जीवनक प्रति सरोकार रविकान्त बाबूक मन:स्थितिसँ अनुगुंजित भेल छनि तहिना पीपरक गाछक प्रति धार्मिक आस्था तथा धार्मिक सरोकार ग्रामीण लोकनिक व्यवहारमे आ मकशूदनक व्यवहारमे सामाजिक सरोकारक झलक देखि पड़ैत अछि।

- नारायण प्रसाद सिंह

निर्मली (सुपौल)

20 मई 2025

सपना

हर मनुक्खकेँ, माने जे सभ जीवन धारण केने अछि, अप्पन जीवनमे अप्पन-अप्पन सपना होइते अछि। सपना, माने जीवनक लक्ष्य। सपना हेबोक चाही। जाधैर जीवनक अप्पन-अप्पन सपना नइ हएत ताधैर जीवनक कोनो उद्देश्य मनमे स्थापित नइ हएत, तँए जीवनक लेल सपना हएब सिर्फ उद्देश्ये नहि, अनिवार्य सेहो अछिए। जखने जीवनमे सपना स्थापित होइए तखने मनुक्ख ओइ सपनाकेँ पूर्ति करैले नव-नव योजना सेहो अपना मनमे स्थापित करैए आ ओइ योजनाक पूर्ति लेल नव-नव विचारो आ बेवहारोकेँ अपनामे आनैक परियास करैए।

ओना, समाजक जे रूप-रेखा बनि गेल अछि तइसँ मनुक्खक जीवन दिशाहीन सेहो भइये गेल अछि। से दिशाहीन सिर्फ कर्मगते नहि, विचारगत आ बेवहारगत सेहो भऽ गेल अछि। सभक मनक सपना तँ उच्च कोटिक होइते अछि मुदा दिशाहीन भेने, माने अपनो जीवन आ सामाजिक परिवेश सेहो दिशाहीन भेने, सभक मनक सपना मनेमे चकनाचूर भऽ जाइए। मिथिलांचलक बीच कमलपुर एकटा मध्यम श्रेणीक गाम। ओना, अनेको रंगक गाम मिथिलांचलमे अछिए। माने, कोनो गाम नमहर अछि, कोनो गाम छोट अछि। कोनो गाममे बेसी जाइतिक बास अछि आ कोनो गाममे कम जाइतिक बास अछि। कोनो गामक माटि उपजाउ अछि तँ कोनो गामक माटि उसराह अछि। कोनो गाममे अनेको धार बहैए तँ कोनो गाम धार विहीन अछि। ओना, मिथिलांचलमे दू दर्जनसँ बेसी धार उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ बहिते अछि, जइमे किछु धार एहेन अछि जे सालो भरि, माने बारहो मास बहैए आ किछु धार बरसातमे तँ बहैए मुदा बाँकी समयमे सुइख जाइए। कमलपुरमे सेहो एकटा धार अछि जेकर नाओं बागमती छिऐ। कोसी-कमला धार जकाँ बागमती उपद्रवी नहि अछि, माने कोसी-कमला जकाँ बागमती काट-छाँट नहि करैए, मुदा बहैए कोसीए-कमला जकाँ बारहो मास।

कमलपुर गाम ने बड़ नमहर अछि आ ने बड़ छोट अछि। 1951 इस्वीक जनगणनाक अनुसार कमलपुर गामक आवादी आठ हजार छल जे अखन पनरह हजारसँ ऊपरक भऽ गेल अछि। कहब जे मिथिलांचलक लोक गाम छोड़ि-छोड़ि देशक आनो-आन शहर आ विदेशोमे जा-जा कऽ बसि गेला अछि आ कमलपुर गामक लोकसभ गामेमे रहि गेलैथ जे एतेक जनसंख्या बढ़ि गेल अछि? कमलपुर गामक लोक सेहो परदेशोमे आ अपनो देशक आन-आन शहरमे जा नोकरियो करै छैथ आ घरो बना लेलैन अछि, मुदा कमलपुरक माटि-पाइनिक एहेन गुण अछि, माने आन-आन गाम जकाँ ने नदीक कटावसँ गाममे पड़ाइन लागल अछि आ ने रौदी-दाहीक ओतेक प्रभाव पड़ैए जेते आन-आन गाममे पड़ैए। जइसँ कमलपुर गामक गिरहस्ती, माने खेती-पथारी, जहिना शुरूसँ होइत आबि रहल अछि तहिना अखनो अछि। कमलपुर गामक तीन चौथाइ लोक, माने आवादीक तीन हीस लोक अखनो गिरहस्तीकेँ आधार बना जीवन-यापन कइये रहला अछि।

रकबाक हिसाबसँ सेहो कमलपुर मध्यम श्रेणीक गाम अछिए। तीन हजार बीघा गामक रकबा छइ। आन गाम जकाँ धार-धूरक कटाव नइ भेने गामक एको धुर जमीन मारल नहि गेल अछि। जहिना पूर्वमे, माने साए बरख पूर्वमे गाछी-कलम, पोखैर-झाँखैर इत्यादि छल तहिना अखनो अछि। तैसंग ईहो भेल अछि जे दर्जनो बोरिंग सेहो गिरहस्त सभ अप्पन करौने छैथ आ सरकारी स्टेट बोरिंग सेहो छइ। जइसँ परोपट्टाक सभ गामसँ नीक कमलपुरमे खेतियो-पथारी अछि आ गिरहस्तक स्थितियो, आर्थिक स्थिति, नीक अछि। जहिना आन-आन गाममे चपरासीसँ लऽ कऽ सरकारी अफसर तक छैथ, लोअर प्राइमरी स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेज धरिक प्राध्यापक छैथ, तहिना कमलपुरमे सेहो छैथ। पुष्पलाल सेहो हाइ स्कूलक शिक्षक छैथ। ओना, हाइयो स्कूलमे तीन तरहक, माने साइंस, कॉमर्स आ आर्ट–तीन फैकल्टीक शिक्षक होइते छैथ, तइमे पुष्पलाल आर्टक शिक्षक छैथ। पुष्पलालक पिता रघुवंश साधारण पढ़ल-लिखल लोक छला, मुदा अपना पाँच बीघा जमीन रहने जीवन भरि खेतीए-गिरहस्ती करैत रहला। जहिना मिथिलाक लोकक संस्कारमे अछि जे अपने भूखो-दुख काटि बाल-बच्चाकेँ दू अक्षरक बोध कराएब, माने बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब-लिखाएब, तहिना रघुवंशक मनमे सेहो छेलैन जे बेटाकेँ पढ़ाएब। ओना, तइ समयमे बेटीकेँ पढ़बैक चलैन

एहेन नहि छल जेहेन आजुक परिवेशमे बनि रहल अछि।

एक तँ पिताक विचार आ दोसर, पुष्पलालकेँ सेहो अप्पन इच्छा जगलैन जे जखन पिताजी पढ़ैक खर्चो दइले तैयार छैथ आ आन कोनो काजक भारसँ सेहो मुक्त केने छैथ, सिर्फ अपना ऊपर पढ़ैक भार अछि, तखन जँ मन लगाकऽ नहि पढ़ब तँ ऐसँ अनकर किछु थोड़े बिगड़त, बिगड़त तँ अप्पन। तहूमे जँ नीक मेहनत करि कऽ पढ़ब तँ नीक रिजल्टो हएत। जखने नीक जकाँ पढ़ि-लिखि लेब तखने ने नीक मनुक्खो बनब आ जँ नोकरीए करब तँ नीक नोकरियो हएत। यएह विचार पुष्पलालकेँ जीवनमे, माने विद्यार्थी जीवनमे प्रेरित करैत रहलैन जइसँ बी.ए. पास केलाह। बी.ए. पास केलाक बाद हाइ स्कूलक शिक्षक भेला।

सात्विक विचारक लोक पुष्पलाल बच्चेसँ रहला। बच्चेसँ एहेन विचार रहैक कारण भेलैन जे एक तँ परिवारक प्रभाव आ दोसर, अपनो जीवन ओहन बनैत गेलैन, माने विद्यालयेक समयसँ, जे दिनानुदिन सात्विक प्रवृत्ति दिस बढ़बैत गेलैन। शुरूहेसँ पुष्पलाल अपने परिवार जकाँ दोसरो-तेसरो परिवारो आ परिवारजनोक संग सम्बन्ध बनौने रहला, जइसँ हाइ स्कूलक शिक्षक रहितो समाजक लोक शिक्षक तँ बुझै छेलैन मुदा सामाजिक जे बेवहार अछि सएह बेवहार पुष्पलालक संग करैत रहलैन। पुष्पलाल सेहो मात्र विद्यालयमे अप्पन शिक्षकक दायित्व निमाहैत रहला, बाँकी समयमे सामाजिक दायित्वक बीच अपनाकेँ रखने रहला, जइसँ सामाजिक सरोकार ओहिना पुष्पलालक बनल रहलैन जेना समाजक लोककेँ बनल रहैए।

कमलपुरेमे एकटा परिवार श्यामलालक सेहो अछि। सम्पन्न परिवार। श्यामलालकेँ असगर भैयारीमे पच्चीस बीघा जमीन छैन। अपने तँ मात्र दसे बीघा खेती जन-बोनिहारक हाथे करै छैथ, बाँकी पनरह बीघा बटाइये लगौने छैथ। केतबो रौदी-दाही होइ छै तैयो ओतेक ऊपज भइये जाइ छैन जइसँ अप्पन परिवारक खर्चासँ बेसीए भऽ जाइ छैन। ओना, अन्न-पाइनिक महाजनी सेहो चलै छैन आ तैसंग पच्चीस बीघा जोतसीम जमीनक अतिरिक्त दू बीघाक एकटा पोखैर आ पाँच बीघामे गाछी-कलम, बेख-बुनियादि सेहो छैन। तेतबे नहि, बीघा भरिक बँसवारि ओहन छैन जइसँ दस हजार रुपैआसँ ऊपरेक आमदनी सालमे

भऽ जाइ छैन। ओना, गाछीयो-कलमसँ साले-साल पनरह-बीस हजार आमदनी भइये जाइ छैन।

श्यामलालकेँ दूटा बेटा। जेठका बेटा रीतलाल जखन बारह-चौदह बर्खक भेल, तखने पिता बिआह कऽ देलखिन। ओना, अखुनका जकाँ बिआह आ दुरागमन संगे नहियेँ होइ छल, बिआहक किछु सालक बाद दुरागमन होइ छल।

बिआह भेलाक बाद रीतलाल अप्पन पिताकेँ कहलकैन जे हम आब नइ पढ़ब, खेती-गिरहस्ती करब। श्यामोलालक मनमे छेलैन्हे जे अपने तेते खेतो-पथार अछि आ परिवारमे काजो-राज अछि जे अपना बुते नहियेँ सम्हरैए, तँए जँ रीतलाल नहियेँ पढ़त तँ नहि पढ़ह। ओना, रीतलाल खेलौड़िया लोक, भरि-भरि दिन ताशेक पाशापर बैसल रहैत।

श्यामलालक छोट बेटा सौरभलाल। सौरभलाल बच्चेसँ पढ़ै-लिखैमे जहीनगर। सेकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलाक बाद सी.एम. कौलेजमे नाओं लिखौलक। ओना, सौरभलाल आर्टेक विद्यार्थी, मुदा पढ़ै-लिखै दिस बेसी झुकाउ। आर्थिक कोनो समस्या सौरभलालकेँ कहियो भेबे ने कएल। एक तँ अपनो पढ़ैमे मन लगइ आ दोसर, पिताक विचार सेहो रहबे करैन जइसँ जखन जे खगता होइ से सदिकाल सौरभलालकेँ पूर्ति होइत रहल।

सामाजिक परिवेशमे आर्थिक सम्पन्नता सेहो अहं भावनाक जन्म दइते अछि। सौरभलालकेँ कौलेजमे प्रवेश लइते अहं भावना नीक जकाँ पकैड़ लेलक। तहूमे अपना मनमे रहबे करै जे एम.ए. केलाक बाद कोनो कौलेजमे प्रोफेसर बनबे करब। एक तँ सम्पैतिक प्रभाव आ दोसर, कुटुमो-परिवार सौरभलालकेँ ओहन रहबे करै जइमे अनेको प्रोफेसर, डॉक्टर आ इंजीनियर रहथिन। तँए, सौरभलालक मनमे एहेन विश्वास बनले रहै जे अपनो प्रोफेसर बनबे करब। समाजोमे, माने गामक समाजमे सेहो अप्पन ओहन बेवहार सौरभलाल बनौनहि रहए जइसँ समाजोक लोक पैघ बुझैत आ अपनो अपनाकेँ पैघ बुझबे करैत।

कौलेजे जीवनसँ सौरभलाल पुष्पलालक विरोधमे जहाँ-तहाँ अन्ट-सन्ट बाजए लगल। माने, ई जे पुष्पलाल भुसकौल शिक्षक छैथ, ने नीक जकाँ विद्यार्थीकेँ पढ़ाएल होइ छैन आ ने अपने किछु अबै छैन। ओना, पुष्पलालक

मुँहपर कहियो एहेन बात सौरभलाल नहियेँ कहैत रहैन मुदा कात-करोटमे, जहाँ-तहाँ खूब बजै छल। ओना, पुष्पलाल अपना काने कहियो ने सुनलैन मुदा दोसर-तेसर जे आबि-आबिकऽ कहैन तेकरा ओ हँसिकऽ ई कहि उड़ा दैथ जे सौरभलाल अखन बच्चा अछि, तँए बजै-भुकैक अवगैत नहि भेलैए। जखन पढ़ि-लिखि लेत तखन अपने अवगैत हेतै आ बजै-भुकैक लूरि सेहो भऽ जेतइ। आन लोक लग पुष्पलाल सौरभलालक बातकेँ बाल-बोध कहि उड़ा दैथ मुदा अप्पन मन कहैन जे धनिक लोकक मनमे जे संस्कार उपैक जाइए वएह संस्कार सौरभलालक मनमे सेहो जनैम गेल अछि। अपने हाइ स्कूलक शिक्षक छी, तँए एहेन-एहेन विचारपर ने नजैर देबा चाही आ ने किछु बाजक चाही। मनुक्ख अप्पन निर्माण स्वयं अपने करैए। जहिना अप्पन निर्माण करैक दायित्व अपना ऊपरमे अपने अछि तहिना अप्पन निर्माण करैक दायित्व सौरभलालकेँ सेहो छइहे।

समय बीतैत गेल। सौरभलाल एम.ए. अर्थशास्त्रसँ केलक। अपना मनमे सौरभलालकेँ रहबे करइ जे कोनो कौलेजमे प्रोफेसर बनबे करब। एम.ए. केलाक तीन सालक बाद तक जखन सौरभलालकेँ कोनो कौलेजमे नोकरी नइ भेलै आ पिताक शरीर सेहो रोगा गेलैन, तखन अपना ऊपर नजैर पड़ए लगलइ। जहिना अधिकांश लोक आनक जीवनकेँ जरूरतसँ बेसीए देखैए आ अपना जीवनकेँ जरूरतो भरि नइ देखैए तहिना सौरभलालकेँ सेहो हुअ लगलइ।

कमलपुरक समाजमे नव जागरण आएल। बटाइ केनिहार बटेदार बटाइ जमीनक ऊपजक बँटवारामे अप्पन हिस्सा अधिक बुझि जहिना उठिकऽ तैयार भेल, तहिना बोनिहार सेहो अखन तक अबैत बोइनिक प्रथाक विरोधमे उठिकऽ ठाढ़ भेल, जेकर प्रभाव श्यामलालक परिवारपर जबर्दस्त पड़ल। एक तँ शारीरिक रोगसँ रोगाएल शरीर छेलैन आ तैपर सँ समाजक विरोधक तेबर देखि श्यामलालक रोग दिनानुदिन बढ़ैत गेलैन। एमहर सौरभलालकेँ तीन सालक ठोकरसँ, माने नोकरीक आशा टुटने, मन विचलित भऽ गेलै जइसँ मनमे जे आशा अखन तकक बनल छेलै जे कोनो कौलेजक शिक्षक बनबे करब, से आशा राँइ-बाँइ भऽ कऽ छँहोछित भऽ गेलइ।

जहिना जीवनमे आशा, आगू बढ़ैक आशा, आगू बढ़ने जीवन आशान्वित

होइए तहिना निराशा ऐने जीवन पतनोन्मुख सेहो होइते अछि। सौरभलालक विचार निच्चाँ मुहेँ उतरए लगल। जइ कुटुम परिवारक आशा सौरभलालक मनकेँ अखन तक पकड़ने छल ओ तीनियेँ बर्खक परिचयमे राँइ-बाँइ भऽ टुटि गेल, जइसँ विचारमे बदलाउ आएल। आब सौरभलालक मन कौलेजक प्रोफेसरसँ उतैर हाइ स्कूलक शिक्षकपर आबि गेल। माने ई जे जँ कौलेजक प्रोफेसर नहि बनि सकलौं तँ हाइयो स्कूलक शिक्षक बनि सकी। हाइ स्कूलक शिक्षक बनैले सौरभलाल प्रयास करए लगल। मुदा सेहो प्रयास असफल भऽ गेलइ।

समाजक बीच, माने गामक बीच, श्यामलालक जे इज्जत काल्हि धरि छेलैन ओ एकाएक टुटि-टुटि निच्चाँ खसए लगलैन जइसँ अखन धरिक जे रोब लोकक बीच छेलैन ओ मेटाए लगलैन। बँटेदार आ बोनिहारक विरोधसँ परिवारक काम-काजमे बाधा-रूकावट सेहो भइये गेलैन। पाँच बर्खक परियाससँ सौरभलालकेँ जखन हाइयो स्कूलमे नोकरी नहि भेल तखन हारि-थाकिकऽ ओइ सिमानपर पहुँच गेल जे जीवनमे अपने तँ कहियो खेती-पथारी दिस गेलौं नहि, आब जँ खेती-पथारी करब तँ समाजक लोक दुसबे करत। जे काज, माने खेती-पथारी, समाजक अशिक्षित लोक आइ धरि करैत आबि रहल अछि से काज जँ पढ़ि-लिखिकऽ अपने करब तँ लोक पीहकारी मारि कहबे करत ने जे 'पढ़ै फारसी बेचै तेल, देखू भाइ करम-के खेल'।

जहिना शरीरमे शक्ति रहितो कोनो घटना विशेषक कारणेँ वा मनमे सोग-पीड़ा भेने शरीरक शक्ति क्षीण हुअ लगैए तहिना सौरभलालकेँ सेहो हुअ लगल। अन्तमे सौरभलाल विचारक ओइ सिमानपर पहुँच गेल जे शिक्षण संस्थानक अतिरिक्तो जँ केतौ, माने कोनो विभागमे नौकरी भेटत तँ सएह करब। तइ बीच कोसी नहर बनैक योजना बनल आ नव-नव पदक सृजन भेल। सौरभलालकेँ सेहो कोसी प्रोजेक्टमे किरानीक पदपर बहाली भेल।

अखन तकक जे जीवन सौरभलालक रहल ओ बसन्तक पतझाड़ गाछ जकाँ भऽ गेल। माने, सौरभलालक मनक सभ सपना मटियामेट भऽ गेल। ओना, सपना मटियामेट भेने सौरभलालक मनमे नव विचारक उदय सेहो भेल। नव विचारक उदय भेने अखन तक जे पुष्पलाल मास्टर सहाएबक प्रति

सौरभलालक धारणा छल ओ बदैल गेल। आब, पुष्पलाल मास्टर सहाएबक अस्सल रूप, माने वास्तविकता, सौरभलालक मनमे जगैत-जगैत एतेक जगि गेल जे घृणाक जगह आदर लऽ लेलक।

समय अपना गतिये चलिते अछि। दिन-व-दिन कहियौ आकि क्षण-व-क्षण, जहिना मनुक्खक शरीरक रूप-रंग बदलैए तहिना विचार-बेवहार सेहो बदैलिते अछि। ओना, पुष्पलाल मास्टर सहाएब पैछला साल सेवा निवृत्त भऽ गेला। अप्पन दुनू बेटा, माने सोहनो आ मनोजो कौलेजक प्रोफेसर बनि कार्यरत छैन। अपने पुष्पलाल मास्टर सहाएब परिवारक सेवा जहिना अखन तक करैत आबि रहल छला तहिना अखनो कइये रहल छैथ। जीवनो तँ जीवन छी, जेहेन जीवन बना चलब तेहने जीवनमे सुख-आनन्द सेहो भेटिते अछि। एक तँ पुष्पलाल मास्टर सहाएबक जीवन ओहन रहलैन जे परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिमे एकरूपता बनल रहलैन जइसँ हुनका मनमे ई कहियो ने उठलैन जे अशिक्षित समाजमे अपने शिक्षित छी तँए दुनूक बीच दूरी अछि। ओना, पुष्पलाल अप्पन जीवनकेँ ओहन बनाइये नेने छैथ जेहेन एक साधारण मनुक्खक होइए। तहूमे, जीवनक आदि-अन्तकेँ सेहो नीक जकाँ बुझि रहला अछि। बुझि रहला अछि जे दुनियाँक रंग-मंचपर केहेन रौल हेबा चाही। तँए, हुनकर जीवन शान्त पोखरिक पानि जकाँ सदिकाल शान्त रहै छैन।

दिनक पाँच बजेक समय। रबि दिन छुट्टी रहने सौरभलाल सेहो घरेपर छल। एकाएक मनमे उठलै जे अखन तक जे पुष्पलाल मास्टर सहाएबक प्रति अपना मनमे घृणाक वृक्ष रोपा गेल अछि ओकरा आब जड़िमूलसँ मेटा लेब अछि। ओना, सौरभलाल अखन तक जीवनक तीत-मीठ भलेँ नीक जकाँ नहि बुझैत हुअए मुदा बीज रूपमे तँ जरूर बुझए लगल अछि। अप्पन जीवनक तीत-मीठक संग समाजक तीत-मीठ सेहो बुझए लगल अछि। एकाएक सौरभलालक मनमे उठलै जे पुष्पलाल मास्टर सहाएबक दरबज्जापर जा कऽ अप्पन जे कमजोरी अछि, तइले माफी मांगि ऐगला जीवनक रास्ता बना ली।

एकाएक सौरभलालक मनमे द्वन्द्व युद्ध सेहो चलए लगल। एक दिस अखन तक जे सामन्ती संस्कारमे पलल-बढ़ल सौरभलालक जीवन छल से जोर मारि

रहल छेलै तँ दोसर दिस मानवीय आ सामाजिक जीवन जे अछि ओ उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेलइ। अन्तो-अन्त सौरभलाल सामन्ती संस्कारसँ बाहर निकैल पुष्पलाल मास्टर सहाएब ऐठाम विदा भेल।

अप्पन पोता-पोतीक संग खेलाइत पुष्पलाल मास्टर सहाएब दरबज्जेपर रहैथ। कनी फरिक्केमे सौरभलालकेँ रस्तापर अबैत देखि पुष्पलाल मास्टर सहाएब अप्पन नजैर हटा, माने सौरभलालपर सँ नजैर हटा, अप्पन पोता-पोतीपर दैत फेर ओहिना खेलाए लगला जेना पहिने खेलाइ छला। तैबीच दरबज्जापर आबि सौरभलाल कहलकैन- “काका, गोड़ लगै छी.!”

जहिना, बिनु देखल लोकक आवाज सुनि कियो चौंकि जाइए तहिना पुष्पलाल मास्टर सहाएब चौंकि गेला, तैबीच सौरभलालपर नजैर पड़लैन आ बजला- “नीके रहह सौरभ। की हाल-चाल छह?”

मिरमिराइत सौरभलाल कहलकैन- “सभ बढ़ियेँ अछि।”

पुष्पलाल- “केमहर-केमहर चललह अछि?”

सौरभलाल- “अहीं ऐठाम एलौं अछि, काका?”

पुष्पलाल- “की?”

सौरभलाल-

“काका, अखन धरि अहाँक प्रति जे धारणा हमरा मनमे छल ओ मेटा गेल। आब मनमे होइए, जे गलती भेल तेकरा अपने बिसैर जाइयौ।”

तैबीच पुष्पलाल मास्टर सहाएबक पत्नी दू कप चाह नेने दरबज्जापर पहुँच गेली। चाह देखि पुष्पलाल मास्टर सहाएब बजला-

“सौरभ, पहिने चाह पीबह। पछाइत गप-सप्प हेतइ।”

ओना, सौरभलाल चाह पीबैसँ धकमकाए लगल। सौरभलालक धकमकीकेँ पुष्पलाल मास्टर सहाएब बुझि गेलखिन। अप्पन बेवहारिक जीवन जे पुष्पलाल मास्टर सहाएबक छैन, तइ अनुकूल बजला- “सौरभ, बीतल दिनक सभ बात बिसैर गेल छी मुदा किछु बात एहेन अछि जेकर उपयोग भविष्यमे हएत, बस तेतबे मोन अछि।”

दुनू गोरे चाह पीबए लगला। चाह पीलाक बाद पुष्पलाल मास्टर सहाएबक मनमे उपकलैन जे अनेरे गाड़ल मुर्दाकेँ उखाड़ब नीक नहि, बजला-

"सौरभ, अधिकांश लोकक जीवन दिशाहीन भऽ गेल अछि, तँए मनमे नीक-नीक सपना रहितो भँसिया रहल अछि।"

मने-मन सौरभलाल विचारए लगल जे हमरा मनक विचार पुष्पलाल मास्टर सहाएब केना बुझि गेलैथ? सामंजस करैत सौरभलाल बाजल- "तखन?"

पुष्पलाल मास्टर सहाएब बजला-

"सौरभ, शारीरिक शक्तिकेँ जगाएब अछि। जखने शारीरिक शक्ति जागत तखने मनसिक शक्ति सेहो जागत, आ जखने मानसिक शक्ति जागत तखने संकल्प शक्ति सेहो जागए लगत। जखने संकल्प शक्ति जागत तखने आत्म-शक्ति, माने भावात्मक शक्ति सेहो जागत, जइसँ धियान एकाग्र हएत। फलाफल नव-नव काज जीवनमे अबैत जाएत जे नव जीवनक सृजन करत। जइसँ असंयमित जीवन संयमित बनत आ योजनाबद्ध जीवन बनि आगू बढ़त।"

सौरभलाल किछु बाजल नहि, टकटकी लगा पुष्पलाल मास्टर सहाएबक आँखि दिस तकैक रहल। ❑

बीस बर्खक बाद

अखाढ़ मास। अदरा नक्षत्र। दिनक एगारह बजैत। गरमी अप्पन ऊँच शिखरपर। ओना, पनरह दिन पहिने एकटा मूसलाधार बरखा भेल छल मुदा जरल जमीन बरखाक घन्टे भरि पछाइत धरती ऊपरका सभटा पानि अपना पेटमे समा लेलक। अकासमे छिड़ियाएल बादलक छोट-छोट टुकड़ी रसे-रसे अलोपित भऽ गेल। किसान समाज बरखा खातिर स्वाती नक्षत्रक चिड़ै जकाँ मुँह बौने अकास दिस ताकि रहल छैथ, मुदा बरखाक आगमनक कोनौं लक्षण नहि देखबामे आबि रहल छैन।

रोहनिया आ बम्बैयो-गुलाबखास आम पकिकऽ तुबि गेल। सपेता, कृष्णभोग, जरदालू, सबुजा भरखैर पाकि रहल अछि। गोटि-पङरा कलकतियो पाकब शुरू भऽ गेल अछि। कृष्णभोग सपेता इत्यादि बहुतो आम आब अधियाएल जा रहल अछि।

रहमत अलपुरा-ताजपुरसँ, माने अप्पन बेटीक ऐठामसँ आबि कलपर हाथ-पएर धोइ दरबज्जाक चौकीपर आँखि मुइन जगले पड़ल छला। तही काल अपने गाछीसँ जालीमे आम नेने दरबज्जापर पहुँचलौं कि हिनका सुतल देखलयैन। बगलमे ठाढ़ भऽ विचारए लगलौं जे के छिआ? अपने मन गवाही देलक जे भरिसक आबिकऽ हमर खोज केने हेता आ नहि देखने प्रतीक्षामे सुति रहला अछि। खेबा-पीबाक समय भइये गेल छल तँए उठाएब जरूरी अछिए।

बजलौं- “यौ सुतनिहार, उठू।”

नीनसँ सुतल रहलापर ने उठैमे देरी होइतैन, मुदा जागलमे से किए होइतैन। अप्पन आवाज सुनिते ओ उठिकऽ बैस रहला। यादास्तमे जोर देलौं जे के छिआ? मुदा चीन्हि नहि सकलयैन। आगूमे ठाढ़ भेल ने अपने किछु बाजि रहल छेलौं आ ने चौकीपर बैसल वएह किछु बाजि रहल छला। हुनका मनमे जेना

परिचित उठि रहल छेलैन जे तीस-चालीस बर्खक चिन्हारे छथिये, तँए किछु बजबे करता। मुदा हुनकर चेहराक रूप देखि अपने एकदम्मे नहि चीन्हि सकलयैन। गुमा-गुमीक बीच बजलौं-

“अहाँकेँ चीन्हि नहि सकलौं?”

ओ मुस्कुराइत बाजल- “हम रहमत छी!”

‘रहमत’ सुनि मनकेँ चारू दिस नचेलौं। के रहमत? एक नामक लोक अनेको होइ छैथ। गाम-गाममे होइ छैथ। असमंजसमे पड़ल बजलौं-

“के रहमत?”

हँसैत रहमत बजला-

“हम गोधनपुरक रहमत।”

गामक नाओं सुनिते रहमत मोन पड़ला। बीस बरख पूर्व रहमत अही रस्ते सभ दिन मोथीक बिछान बेचैले जाइ-अबै छला। अपने बिछान कीनी वा नइ कीनी, मुदा रहमत दरबज्जापर आबि साइकिल आगूमे लगा, किछु समय बैस कुशल-छेम करिते छला। अप्पन मौसी गोधनपुरमे छेली, हुनकर घरसँ सटले पच्छिम रहमतक घर। अपनो जखन गोधनपुर जाइ छेलौं तँ रहमतक ऐठाम सेहो भेँट-घाँट करए जाइ छेलौं। आजुक परिवेश बदैल गेल अछि तँए हिन्दू आ मुसलमानक बीच किछु दूरी बनि गेल अछि मुदा अपना से नहि छल। भाए-भैयारी जकाँ सम्बन्ध बनल छेलाएहे। जहियासँ मौसी मरली आ दुनू बेटी सासुर बसए लगलैन तहियासँ गोधनपुर अप्पन आएब-जाएब छुटि गेल। मौसीकेँ बेटा नहि रहने सम्बन्धे प्राय: मेटा गेल।

बजलौं- “रहमत भाय?”

रहमत बाजल- “हँ।”

समयकेँ देखैत आन गप-सप्पकेँ रोकैत बजलौं-

“भाय! नहाइ-खाइ बेर अछि, तँए हमहूँ नहा लइ छी, पछाइत दुनू भाँइ संगे खाएब।”

खेनाइ सुनि रहमत बाजल- “हम खा कऽ आएल छी, भूख नहि अछि,

पियास लगि गेल छल, कलपर जा कऽ पानि पीब लेलौं।”

बजलौं-

“अन्न खाइक छुधा नहि अछि तँ दूटा आमे खा लिअ।”

रहमत बाजल-

“आब कहुना भेल बूढ़ेक हड्डी भेल किने, तँए किछु ने खाएब।”

विचारकेँ रोकैत बजलौं-

“ठीक छै, नइ खाएब ते नइ खाउ। अहाँ अराम करू, हम नहा-खा लइ छी।”

जाली नेने आँगन गेलौं। आँगनमे आमक जाली ओसारपर रखि बाल्टी-लोटा नेने कलपर जा नहेलौं। नहेलाक बाद धोतीकेँ दरबज्जेक ढाठपर पसाइर खाइले आँगन गेलौं।

दरबज्जापर रहमत भाय सुति रहला। अपनो खा कऽ आबि दरबज्जेक दोसर चौकीपर सुतलौं। एक तँ अमरस्साक समय, दोसर पूर्वाक सिहकी आ तैपर सँ दरबज्जाक खुलल ओसार, लगले नीन आबि गेल।

अढ़ाइ बजे रहमत उठिकऽ कलपर जा मुँह-कान धोइ दरबज्जापर आबि चौकीपर बैसैत अपनो उठौलैन। उठिकऽ कलपर जा मुँह-कान धोइ दरबज्जापर आबि विचारलौं जे अखन आँगनमे पत्नीकेँ उठा चाह बनबए कहबैन से नीक नहि हएत। खाइत-पीबैत ओ घन्टा-डेढ़ घन्टा पछुआइये गेल छेली, तँए काँच नीनमे उठा, चाह बनबए कहबैन से नीक नहि हएत। जखन चाहक सभ जोगार अपने दरबज्जापर रखनहि छी तखन अपने बनबैमे कोन हर्ज अछि। केतली-लोटा नेने कलपर गेलौं। केतली धोइ लोटामे पानि नेने दरबज्जापर आबि चाह बना दुनू गोरे पीलौं। अपनो मन हल्लुक भेल आ रहमतो भाइक मन हल्लुक भेलैन। दुनू गोरे पान खा एक्के चौकीपर बैस गप-सप्प शुरू करैत बजलौं-

“रहमत भाय, अहाँक देखल चेहराक रूप एहेन किए भऽ गेल?”

बीस बरख पूर्व रहमत ने टोपी पहिरै छला आ ने लूँगी। घरपर भलेँ लूँगी पहीरैत होथि मुदा गामसँ बाहर धोती-कुरता आ कान्हपर गमछा रखै छला। नवाज

पढ़ैत काल गमछेक मुरेठा बान्हि नवाज पढ़ै छला। मुदा परिवेश बदलने रहमत भाय लूँगी पहीरि सेहो गाम-गमाइत करए लगला आ टोपी सेहो पहीरए लगला तँए चिन्हैमे धोखा भेल। ओना, जुआनीक चेहरा आ बुढ़ाड़ीक चेहरामे सेहो अन्तर आबिये गेल छैन। बजलौं- "रहमत भाय, बहुत दिनक पछाइत अहाँसँ भेँट भेल अछि।"

जहिना अपने बजलौं तहिना विचारकेँ स्वीकारैत रहमत भाय बजला-

"बीस बर्ख ऊपरेसँ गाम-गाम घुमब छोड़ि देलौं। किए तँ लोक आब प्लास्टिकेक बिछान उपयोग करए लगल अछि, मोथीक बिछान छोड़ि देलैन।"

रहमत भाइक विचार मनमे जँचल, मुहसँ किछु ने बजलौं, खाली मुड़ी डोला स्वीकारि लेलौं।

रहमत भाय पुन: बजला- "अल्ला मियाँ दूटा बेटा आ एकटा बेटी देने छैथ, ओहो सभ आब जवान भऽ गेल।"

बजलौं- "तीनूक बिआह-दान भेल अछि किने?"

रहमत भाय बजला-

"तीनूकेँ धियो-पुतो भेल अछि।"

बजलौं- "तखन तँ परिवार नमहर अछि।"

'परिवार' सुनि रहमत भाइक मनमे खुशीक हिलोर उठलैन जइसँ ठोरपर हँसी एलैन। बजला- "बौआ, अपना जनैत जिनगीमे ने केकरो अधला सोचलौं आ ने अधला केलौं हेन। बिनु बुझलमे जँ केकरो अधला भऽ गेल होइ तँ भऽ गेल होइ।"

बजलौं- "बेटासभ कमाइ यऽ किने?"

अपने ऐ दुआरे पुछलयैन जे परिवेश एहेन बनियोँ गेल अछि आ बनियोँ रहल अछि जे अधिकांश नवयुवक श्रमेसँ देह चोरा रहल छैथ जइसँ श्रम-संस्कृति सेहो धीरे-धीरे नष्ट भऽ रहल अछि।

रहमत भाय बजला- "जहिना अप्पन दुनू बेटा परदेश खटैए तहिना जमाइयो खटै छैथ, जइसँ दुनू परिवारमे गुजर-वात चलैमे कोनो दिक्कत नइ

होइए। परसुए बेटी ऐठाम गेल छेलौं। चारिटा नाति-नातिन अछि। काल्हि बेटी नइ आबए देलक तँए आइ घुमलौं हेन।”

विचारकेँ मोड़ैत बजलौं- “अप्पन कारोबार केना मरि गेल?”

किछु समय रहमत भाय मने-मन स्मरण केलैन, पछाइत बजला- “बौआ! एकबेर नहि, जीवनमे दू बेर एहेन भेल अछि। पहिल बेर भेल छल कपड़ा बुनैमे। ओइ समय गाम-गाममे लोक चरखा चलबै छल जइसँ एकटा रोजगार चलै छेलैन। सभ गाममे तँ नहि मुदा जगह-जगह खादी-भण्डार छल। अपने झंझारपुरो आ तमुरियो खादी-भण्डारसँ सूत कीनै छेलौं आ घरपर दुनू परानी मिलि कपड़ा बुनै छेलौं आ खादी-भण्डारमे बेचै छेलौं। ओहीसँ गुजरो चलै छल।”

खादी-भण्डारक सम्बन्धमे बुझल छेलाएहे तँए मुड़ी डोला स्वीकारैत बजलौं- “बहुत नीक रोजगार छल।”

हमरा विचारसँ जेना रहमत भायकेँ सह भेटलैन तहिना मनमे खुशी एलैन। मुदा लगले मुँहक खुशीक रेख जेना बिला गेलैन तहिना एकाएक मुँहपर उदासी आबि गेलैन। किछु समय चुप रहलाक बाद रहमत भाय बजला- “बौआ, जखन कपड़ाक कारोबार बन्न भऽ गेल तखन खादी-भण्डार सभ सेहो बन्न भऽ गेल। कपड़ो बुनकर आ चरखो चलौनिहार सभ निकम्मा भऽ गेला। अपनो दुनू परानी जखन निकम्मा भऽ गेलौं तखन दिनक दिन आ रातिक राति चुल्हिमे पजार नइ पड़ै छल। अन्तमे घरवालीकेँ कहलयैन जे आब तँ प्राण बाँचब कठिन भऽ गेल अछि।”

रहमत भाइक जीवनमे अन्हारे-अन्हार देखि अप्पन भीतरक आत्मा जेना डोलि रहल छल। बजलौं- “हँ, जीवन जीब तँ कठिन भइये गेल छल.!”

रास्ताक हेराएल बटोहीकेँ जहिना नव रास्ता भेटने मनमे खुशी आबि जाइए, तहिना रहमत भायकेँ भेलैन। मुस्कुराइत बजला- “बौआ, घरवाली कहलैन जे कपड़ाक कारोबार ने बन्न भऽ गेल मुदा दुनियाँमे कि वएह टा करोबार अछि। अल्ला मियाँ जखन दूटा हाथ आ दूटा पएर देने छैथ तखन दोसर कारोबार करब।”

बजलौं- “से तँ ठीके कहलैन।”

रहमत भाय बजला- “घरवालीकेँ पुछलयैन, दोसर कोन करोबार करब? घरवाली कहली, मोथीक बिछान बना गामे-गाम बेचब। विचार अपनो मनमे जँचल आ सएह करए लगलौं। बिछान बीनि गामे-गाम बेचबो करए लगलौं आ गाम-गामसँ मोथियो कीनि-कीनि आनए लगलौं। मुदा अल्ला मियाँकेँ सेहो नइ देखल गेलैन। ओहो कारोबार बन्न भऽ गेल। गाम-गाममे घरे-घर लोक आब प्लास्टिक बला बिछान उपयोग करै छैथ।”

रहमत भाइक मनक पीड़ाकेँ मेटबैक खियालसँ बजलौं- “जाए दियौ, आब अपनो बुढ़ भेलौं किने। भने धिया-पुता परदेश खटैए। गाममे की आब किछु राखल अछि। बैसल-बैसाल खाउ आ अल्ला मियाँक सुमिरन करू।”

रहमत भाय बजला- “बौआ! कहै तँ छी अहाँ एक लाखक बात, मुदा गाम-गामक आ घर-घरक जे बेटा-पुतोहुक लीला देखै छी तइसँ अपनो चिन्ता बढ़िये रहल अछि।”

रहमत भायकेँ सान्त्वना दैत बजलौं- “रहमत भाय, दुनियाँमे ने सबहक बेटा-पुतोहु एक्के रंग अछि आ ने एक्के बेवहार अछि। किछु अधलो अछि तँ किछु नीको अछिए। तँए, दुनियाँक लीला देखि मनमे चिन्ता नइ करू। अप्पन बेटा-पुतोहु सुधरल-सम्हरल रहए, बस तेतबेसँ मतलब राखू।”

अप्पन बेटा-पुतोहुक बेवहारसँ आकि हम्मर विचार सुनि, रहमत भाइक मनमे खुशी एलैन जइसँ मुँह मुस्कियेलैन। तैबीच बेरो खसल। रौदक तीख सेहो कमल। रहमत भाय बजला- “बौआ, आब जाइ छी। जाबे जीबै छी ताबे तक तँ आशा बनले अछि। अहूँ तँ हमरा गाम आएब-जाएब छोड़िये देलिऐ।”

अनका जकाँ झूठ-फूस किए किछु बजितौं, स्पष्टे कहलयैन-

“रहमत भाय, जाबे मौसी जीबै छेली ताबे अपनो आ माइयो जाइ-अबै छेलौं, मुदा जखन ओ मरि गेली आ दुनू मसियौत बहिन सासुर बसए लगल तखन केतए जाएब।”

मौसीक नाओं सुनिते रहमत भायकेँ जेना किछु मोन पड़लैन तहिना माथपर हाथ लैत, अपसोच करैत बजला- “बौआ, की ओ परिवार छल! माने तोहर मौसीक परिवार, आ देखले दिनमे अखन केतए चलि गेल.!”

रहमत भाइक विचारमे सह नहि देलिऐन, किएक तँ मौसीक परिवारक घटना बहुत दुखद रहल अछि। विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

“रहमत भाय, खेबाकाल किछु खेलौं नहि, आमक मास छिऐ, दूटा आमो तँ खा लिअ।”

अप्पन पेटपर हाथ ससारैत रहमत भाय बजला- “बौआ, कलौ बेरमे किछु बेसी खा नेने छेलौं, बेटी मुर्गा बनौने छल, तँए खेबाक किछु इच्छा नहि अछि। चाह तँ पीबे केलौं हेन। भऽ गेलइ, अहिना दुनू गोरेक बीच प्रेम बनल रहए। दुनियाँमे किछु अछि।”

रहमत भाइक विचार सुनि अपनो सिनेह (प्रेम) उमैड़ पड़ल। बजलौं- “रहमत भाय, आमो नइ खाएब तँ नइ खाउ। जखन गामे जा रहल छी तखन एक जाली आम घरेपर नेने जाउ। पत्नियोँ खेती आ अपनो चारि-दिन-पाँच-दिन खाएब।”

रहमत भाय चुप्पे रहि गेला। गाछीसँ जे आम जालीमे अनने छेलौं ओ जालीए मे छल। आँगनसँ जाली उठेने एलौं आ रहमत भाइक आगूमे रखि देलिऐन।

जालीक आमकेँ निङ्गहारैत रहमत भाय बजला- “सभटा आम कलमीए बुझि पड़ैए।”

मुस्कुराइत रहमत भाय आमक जाली हाथमे लटका कऽ विदा भेला। कनी दूर तक रहमत भायकेँ अरियाति अपने घुमिकऽ आबि गेलौं। ❑

हकार

कोजगराक औझुके रातिक इजोरियाकेँ लोक शारदीय पूर्णिमा सेहो कहैए, कोजगराक मखान आ पानक संग मधुरो खाइए आ चित्ती-कौड़ी भाँजि पचीसियो खेलाइए।

आने दिन जकाँ अपन समैपर लाल काका लग पहुँचलौं। लालो काका अपन नित्यकर्मसँ निवृत भऽ चुकल छला। दुनू गोरेक जिनगीक शुरूआत, जिनगीक शुरूआत भेल- एक-सँ-दूक बीचक सम्बन्ध। माने भेल जे जहिना लाल काका परिवारक आशा छोड़ि, अपन आशापर चाह-पानक ओरियान अपने रखै छैथ, तहिना अपनो मन मानिते अछि जे चाह सन वौस-ले अनेरे-मौगी-मेहैरिक खुशामदसँ नीक जे अपन हाथ-पएर लाइर-चाइर कऽ ने किए अपन जोगार अपने कए लेब। तँए चाह पीबोक आ ओरियानोक सम्बन्ध लाल कक्काक संग अछि। चाहक सभ समान लाल कक्काक रहै छैन आ बनबैक भार अपने उठौने छी, दरबज्जेपर चाहो बनबै छी आ दुनू बापूत गपो-सप्प करै छी। ओना, अखन गप-सप्प शुरू नइ भेल छल। तेकर कारण अछि, कारण ई अछि जे जहिना रोगीक रोगकेँ देखैसँ पहिने डॉक्टर जाँच-पड़ताल करै छैथ वा नाड़ीक गति देखि रोग दिस तकै छैथ तहिना लाल काका हमरो परेख रहल छला आ हमहूँ हुनका परेख रहल छेलिऐन, तँए बीचमे गप-सप्प बन्न रहल। हमरा प्रति लाल काका जे बुझने होथि, मुदा अपना बुझि पड़ल जे चेहराक रंग जेना लाल कक्काक मलिन छैन। मुदा से तँ बुझि पाएब गपे-सप्पक क्रममे।

केटलीक चाह सेहो पहिल उधिआन उधिया चुकल छल तँए दुनू गोरेक मनक आशा बढ़िये रहल छल। जहिना चुल्हिपर चढ़ल चाउर (भातक) वा दालिक पहिल उधियान देखि आशा जगैए तहिना।

मनक उधियान सेहो कनी उधिया गेल। उधियाइते विचार उठल जे एक तँ

कोजगरा दिन छी माने जगरनाक दिन। दोसर, शारदीय पूर्णिमा, माने आत्मचिन्तक चानक अबल-धबल रूप दर्शनक दिन सेहो छी। तेसर दिन- बेरागन जे हुअए मुदा छी तँ भोरुका वसन्ते बेला किने, तैठाम जँ ई कहिऐन जे लाल काका अहाँक चेहरा कनी खसल सन बुझि पड़ैए, सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। भाय जिनगी छी कि ठट्ठा, जे सदिकाल हँसिते रहब। जिनगी तँ असल ओ छी जे हास-परिहासक बीच चलैए...।

मुदा लगले ईहो भेल जे भोजन करैसँ पहिने–माने चाह-जलखै, कलौ आदिसँ पूर्व–जँ मन पर्पित नइ रहल तँ ओ भोजन अर्पित केना हएत? तँए जरूरत अछिए जे चाह पीबैसँ पहिने लाल कक्काक मन चाह दिस लटका दिऐन, नइ तँ ईहो भइये सकैए जे पहिल घोँट चाह पीबिते दुइस देता जे चाह नहि बनलह।

'चाह नइ बनलह' तँ साधारण काज भेल, फेर दोहरा कऽ बना भरि मन पीब लेब। मुदा, एक तँ औझुका शुभ मुहूर्तक दिन छी, अपन जिनगीक शुरूआत समैयक अवस्था, माने पहिल काजक अवस्था, से जँ सएह भोरे दुसा जाएत, तखन भरि दिन केहेन बीतत.!

कोनो गर सुझिये ने रहल छल जे लाल काकाकेँ की पुछिऐन। अपन जे भाव बनि गेल अछि 'लाल कक्काक चेहरा उदास छैन' तैठाम जँ कोनो हँसी-चौलक बात उठाबी सेहो नीक नहियेँ हएत। आन भलेँ नीको कहए मुदा अपन मन की कहत?

गर भेटल, तैबीच चाहोक दोसर उधियान उठि चुकल छल। चाहक उधियान देखि बलजोरी मनकेँ चौंकैबैत बजलौं- "लाल काका।"

बलजोरियो जँ मुँहकेँ बजेलौं तँ मुँह एते रच्छ रखबे केलक जे मात्र 'लालेकाका'टा बाजल। लाल कक्काक नजैर सेहो चाहेक केटलीपर छेलैन। चाहकेँ उधियाइते अपने केटलीक झँपनाकेँ खोलि देलिऐ। यएह शंका लाल कक्काक मनमे जगि गेलैन जे भरिसक हाथक आँगुर पकि गेलइ। लाल काका बजला- "आँगुरमे बेसी.?"

ओहो अधेपर अपन विचार अँटका लेलैन। भलेँ ओ अपन विचार अधेपर किए ने अँटका लेलैन मुदा अपना बुझैमे तँ आबिये गेल जे लाल कक्काक विचार

दहिन अछि। बजलौं-

"एते ताउ बरदास करैक गुण आँगुर पकैड़िये नेने अछि, तँए जेते सोभाविक छल तेतबे भेल।"

तैबीच चाहो बनि गेल। दुनू गिलास दुनू बापूत अपन-अपन लेलौं। जहिना घूसक संग कागज असानीसँ बढ़ि, सुवचनक बीच अपन काज ससाइर लइए, तेना तँ नहि भेल मुदा जहिना लाल काका अपन पिता-पित्तीक धर्मक पालन सभ दिनसँ करैत एला अछि तहिना अपनो बेटा-भातीजक धर्मक पालन करैत एलौं हेन। एकर मतलब ई नहि जे दुनू गोरेक बीच हँसी-चौल आकि हँसी-ठट्ठी नइ होइए, सेहो होइए। मुदा से होइए अपन हूसल करनी आ दुनियाँ-लोकक किरदानी देख।

चाह पीबिते प्रसन्न मुहेँ लाल काका बजला- "सुशील, आइये ने कोजगरा हएत?"

'कोजगरा' सुनिते मनमे खौंझ उठि गेल। खौंझक कारण अछि जे 'जे भोज नइ खाइ ओइ भोजक चर्चे की!' यएह तँ मिथिला छी, कोजगराक ओकाति केते छै, से विचार तँ प्रेमविवाह बलासँ ने लेब। अनेरे ने लोक अनका भोजक अँचार-चटनीक प्रशंसा सुनि अपन जीहक पानि खसबैए...। बजलौं-

"काका! कोजगरा जैठाम हएत तैठाम ने, तइसँ अपना सभकेँ की?"

विचारक प्रवाहमे आकि अपन मनक प्रवाहमे लाल काका बजला- "सातमे दिन एक गोरे कोजगराक हकार देलैन।"

लाल कक्काक बात सुनि मनकेँ मड़ुओ भरि समय उत्तर तैयार करैमे नइ लागल। उठि कऽ बैस मन विचार देलक जे जे पाबैन अपना नइ होइए तइ पावनिक हकार किए लेब। मुदा मनमे ई उठबे ने कएल जे पावनिक चलैन दू रंगक अछि, एक अछि सालक नियमित पाबैन जे साले-सालक महिना-तिथिक हिसाबसँ होइत अछि। तैठाम किछु पाबैन किछु खास परिवारमे हेबो करैए आ नहियोँ होइए। तैठामक सम्बन्धक महत् दोसर अछि, मुदा पाबैन अपने उट्ठा अछि, माने सालक मास तारीख तँ नियमित छै, मुदा होइए बिआहले टा केँ। माने सालक बीच जेकर बिआह भेल रहल। मुदा तेकर साल चैत-बैशाखसँ शुरू नइ होइए आ

ने जनवरी-फरवरीसँ। ओकर सालक शुरू आ अन्तक दुनू सीमा शारदीय पूर्णिमाक कोजगरा छी...। ओना, मुँह छीपिये कऽ लाल काका बजला, मुदा बजला तँ। बजलौं- "कोजगराक हकार तँ भार एला पछाइत पड़ै छै, अहाँकेँ केना सात दिन पहिनहि पड़ि गेल। आ जँ कोनो कारणे भार नइ आएल तखन अहाँक हकार की भेल?"

ओना, हम बुझैक खियाल (माने हकार कर्ताक) सँ बाजल छेलौं मुदा लाल काका दोसरे बात उठबैत बजला-

"सुशील, अपना गाममे सोनेलालक ऐठाम कोजगरा छी। देखिते छहक जे पड़ोसी छैथ।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ, से तँ अपनो बुझल अछि मुदा...।"

'मुदा'क माने लाल काका बुझि गेला जे सोनेलालसँ कोनो तरहक सम्बन्ध नइ अछि तखन कोजगराक हकार केना भेटल।

लाल काका बजला- "सोनेलालक ससुर काजे अपना ऐठाम आएल छला, गौंआँक कुटुम सामाजिक कुटुम भेबे केला, काजक बीच दुनू गोरेमे गप-सप्प भेल। तही क्रममे ओ अपनाकेँ सोनेलालक घरबैया बनि हकार देलैन। सात दिन पहिलुका हकार छल तँए बिसैर गेल छेलौं। ओना, एकटा गिरह हकारमे बान्हिये देने छेलिऐ जे जहिया सोनेलाल-ऐठाम कोजगरा हेतैन तइ दिन तँ चहल-पहल हेबे करत किने, मोन पड़ि जाएत। रातिमे ने कोजगरा हएत। तही सोचमे पड़ल छी।"

लाल काका सन सोचनिहार लोक जखन सोचमे पड़ि गेल छैथ तखन अपने कोन खेतक सीम-भँट्टा छी जे हुनकर सोचमे सोंगर लगा सकब। मुदा ईहो तँ होइते अछि जे समुद्र हुअ कि पोखैर, जँ कियो जीवनी थाहे-थाह गहींर पानिमे थेहैत-थेहैत जाइ छैथ तखन अनाड़ियो-धुनाड़ी तँ थ-थैया करैत आगूमुहेँ ससरबे करैए। ओना, ओकरा मनमे एहेन बिसवास जागिये गेल चुकल रहै छै जे जखन फल्लाँ एते दूर तक अथाहमे थाह लैत पहुँच गेला तखन हमरो किए ने पहुँचल हएत। लाल कक्काक सोचकेँ एक सिरासँ खारिज करैत बजलौं- "ईहो कोनो

मुद्दा भेल जे अनेरे अहाँ सोचमे पड़ल छी.!”

बजैक क्रममे तँ बजा गेल मुदा लगले मन घुमल जे वैज्ञानिक सभ ओहनो-ओहनो वस्तुकेँ पकैड़, जे आँखिसँ देखलो नहि जा सकैए, उपयोगमे आनि बड़का-बड़का जीवनोपयोगी वस्तु बना रहला अछि। लाल कक्काक सोच तँ समाजसँ जुड़ल छैन, जैपर गाम-समाजसँ लऽ कऽ दुनियाँ ठाढ़ अछि। मुस्की दैत लाल काका बजला- “अखनो तक बसिया भात खाइते छह सुशील, जे सौंझुका बात भोरमे आ भोरुका बात साँझमे बिसैर जाइ छह।”

लाल कक्काक चनगर बात सुनि जेना अपनो चान जागि गेल तहिना चेतैत पुछलयैन- “से की काका?”

लाल कक्काक तँ ई खुबी छैन जे कोनो समस्याकेँ पहिने अतीतमे बेतीत भेल दृश्यपर नजैर दैत बजै छैथ। अतीत दिस बढ़ैत लाल काका बजला- “सुशील, तीसे सालक घटना बिसैर गेलह।”

‘तीस सालक घटना बिसैर गेलौं।’ सुनि पाछू उनैट तकलौं तँ अनेको घटना सभ मनमे आबि गेल। लाल काका कोन घटनाक चर्च केलैन अछि से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। मुदा जगह (स्थान) तँ निर्धारित भेल बुझि पड़ल माने ई जे सोनेलालक बेटाक कोजगरा छिऐन, थाहैत-थाहैत सोनेलालक घराड़ीक झंझट मोन पड़ल। एकतीस दिनपर जहलसँ जमानतपर निकलल रही। फेर भेल जे अपन जे जीवन अछि तइमे जँ केकरो हमरासँ नीक भेलै वा कोनो काज भेलै, तँ ओइ दिनक दिनचर्यानुकूल अपन कर्म भेल, तेकरा अनेरे मनमे रखि मनक डायरीकेँ भरने रहब, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। फेर मन घुमल, घुमिते उठल जे जखन अन्हार दुनियाँमे जन्म भेल तखन इजोत तकैले तँ किछु करैये पड़ै छै, वएह इजोत ने दुनियाँकेँ अन्हारकेँ धकलैत बढ़ैए। जेतेक मने-मन विचारी तेतेक ओझरी लागल जाए। अकैछ मन विचार देलक जे जहिना समीक्षक कोनो रचनाकेँ रचैताक गुण-दोष देखबैए आ अपन विचार किछु रखिते ने अछि तहिना बाजी। बजलौं-

“काका, एकटा अधला आदत खाइ-पीबैक लगि गेल अछि। तँए बहुत बात बिसैरियो जाइ छी।”

लाल काका बजला- “सोनेलालकेँ जइमे घर अछि, ओइ घराड़ीक झंझट पूर्वाधिकारीक संग भेल रहैन। पूर्वाधिकारीक माने भेल पैछला पीढ़ीक अधिकारी।”

देखल-बुझल सभ बात–घटनाक सभ बात–छेलए-हे तँए बिच्चेमे बजा गेल- “हँ, से तँ भेले रहए। जँ अपना सभ नइ रहितिऐ तँ ऐ घराड़ीपर सोनेलालक घर थोड़े रहैत।”

हमर बात सुनिते लाल काका जेना बुझि गेला जे गाड़ी पटरीपर आबि गेल। माने विचारमे एकरूपता आबए लगल। लाल काका बजला- “सोनेलालक ससुर जे हकार देलैन, ओ ईहो कहने रहैथ जे कोजगरा दिन भिनसुरके उखड़ाहामे परिवारक संग एबो करब आ भरि कोजगरा रहबो करब।”

बजलौं- “जखन सोनेलालक ससुर एबे करता तखन किए ने सोझा-सोझी सभ विचार करब।”

हमर विचार लाल काकाकेँ जँचलैन, बजला- “अखन जँ अपना दुनू बापूत मुँहमिलानी कऽ लेब जे सोनेलाल-ले की सभ केलौं आ सोनेलाल की सभ केलैन आ आइक तारीखमे हुनका संग की बेवहार अछि, नइ तँ धोखो भऽ सकैए।”

जिनगीक समीक्षा यएह ने भेल जेकरा करैत-चलैत रहक चाही...। नइ तँ मानव कखन दानव आ कखन राक्षस बनि जाइए तेकर कोनो ठेकान छइ।

लाल कक्काक विचार जेना मनमे गड़ि गेल। बजलौं- “काका, ठीके लोक कहै छै जे जेकरा-ले चोरि केलौं सएह कहए चोरा।”

लाल काकाकेँ कहबीक की अर्थ लगलैन से तँ वएह बुझता मुदा गंभीर हुअ लगला। लाल कक्काक गंभीर होइत चेहरा देखि अपनो अपनाकेँ संयमित करए लगलौं। तैबीच लाल काका बजला- “समाजक बीच जाबे बेवहारिक सम्बन्धक बन्धनक डोर नहि लागत ताबत बिनु डोराडोरिक पुरुख जकाँ समाजो रहत।”

लाल कक्काक विचार कनी-मनी बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। मुदा लगले मन विचार देलक जे लाल कक्काक मनमे हजारो रंगक विचार किए ने रहल होनि मुदा जइ काजक विचारमे दुनू बापूत संग रहलौं, तेकरा

किए ने मतिया कऽ गतियबैत चली। बजलौं- “कक्का, की कहलिऐ- मुँह-मिलानी?”

मनक चारू दिसक बहटल विचारकेँ समेट लाल काका बजला- “सुशील, मुँह-मिलानीक माने भेल- बोलीक मिलानी, माने एक स्वर, एक आवाज। मुदा ई चीज बजैमे जेते सोझ अछि ओते पुराएब सोझ नइ अछि। ओना, ओ जीवनपर आधारित अछि तँए केकरो-ले सोझो अछि तँ केकरो-ले गैंचियाह-टेंढ़ सेहो अछिए।”

अपना जनैत लाल काका धुरझार बजैत गेला मुदा अपने लटकल रहि गेलौं- ‘बोलीक मिलानी’पर। जइसँ ऐगला बात सुनबे ने केलौं। बजलौं- “काका, कोनो बात-विचारकेँ दुनू बापूत घन्टा-दू-घन्टाक कोन बात जे छह-छह मास तक नेङ्गरिऐबते रहै छी ई दीगर भेल, मुदा जखन कोनो आड़ि-धूर (बात-विचारक) देखि विचार कऽ लइ छी तखनो कहियो आगू-पाछू बोली भेल अछि।”

हमर बात सुनि लाल कक्काक मन बिहैस कऽ टुसिया गेलैन। बजला- “बौआ सुशील, जखन दुनू बापूत एकठाम बैस समाजक विषयमे सोचि रहल छी तखन तँ एहेन सोच ने सोचल जाए, जइमे सबहक नीक होइ। जखने सबहक नीकक विचार वा काज हएत, सएह ने भेल कल्याणकारी विचारो आ काजो।”

कमलाधारमे हेलनिहार जहिना सनमुँह धारमे बहैत, भँसैत, हेलैत रहैए तहिना अपनो विचारक धारमे हेलैत बजलौं- “काका, तीस बर्ख पूर्वक जे काज दुनू बापूत सोनेलालकेँ संगी बना संगे चलैत सपना देखने रही ओ रसे-रसे धुमिल होइत गेल। तँए आजुक तारीकमे जँ होशियारी नइ राखब तँ कखनो आसीन मासक खेतक धान जकाँ ऊपरेसँ छोपा जाएब।”

हमर बात लाल काकाकेँ नीक लगलैन तहिना मन खुशी हुअ लगलैन। बजला- “बौआ, तूँ की सभ अनुभव सोनेलालक सम्बन्धमे केलह अछि?”

बजलौं- “काका, हमरा कि कखनो अप्पन काज छुट्टी दइए जे अनेरे लोकक पाछू पड़ल रहब। तखन तँ समाजोक अपन गति-विधि छै, जैबीच सभ बसै छी, तँए ओहूपर धियान नइ राखब तँ समाजमे अराजकताक स्थिति बनियेँ जाएत।”

बिच्चेमे लाल काका बजला- “सुनैमे आएल अछि जे जे सभ सोनेलालकेँ घराड़ीपर सँ भगा देलकै सएह सभ अखन हुनकर विचारको सभ छिऐन आ कार्यकर्तो सभ।”

बजलौं- “ठीके सुनलिऐ काका, हाट-बजारसँ लऽ कऽ घर-अँगना धरि वएह सभ तीन दिनसँ लागल रहैत एला हेन, तैठाम अहाँक हकार पुरब केते उचित हएत!”

बहसक क्रममे जहिना न्यायालयक न्यायाधीशकेँ कोनो एहेन विचार भेट गेलापर न्याय देब असान भऽ जाइए तहिना लाल काका बजला-

“भने हकार देनिहार अपनो हकार-बिझो केनहि छैथ, तँए हुनकासँ भेँट भेला पछातियेे ने किछु करब नीक हएत।”

बजलौं- “से तँ हेबे करत। मुदा अपन बात ओतबे बिसरैक धियान राखब जेते बिसरै-जोकर हएत।” ❑

पनचैती पनपना गेल

जेठ मास अन्त होइ-होइपर छल मुदा पूरनिमा नइ भेने सम्पन्न नहि भेल छल। ओना परसुए आद्रा चढ़ि गेल मुदा छी जेठे। पूरनिमो काल्हिये छी। जनतंत्र शासन छी तँए बहुमतसँ जेठकेँ समाप्ते बुझल जेबाक चाही। मुदा सेहो जँ मानि लेब तखन पतरा-पुराण तँ मारल जाएत किने, तँए जेठे मानब बेसी नीक।

दिनक एके बजेमे पता चलल जे उचितलाल भायकेँ तीनू भाँइ–अर्जुन, नकुल आ सहदेव मारबो केलकैन, गलहत्थो देलकैन आ गरदेन पकैड़ मोकबो केलकैन, तेकरे पनचैती हएत। ऐठाम एकटा बात जे अस्पष्ट अछि ओकरा स्पष्ट कऽ दइ छी। तीनू भाँइ–अर्जुन, नकुल आ सहदेवकेँ महाभारतक पात्र नहि बुझबैन, ओ सिंहेश्वर कक्काक अपन देन छिऐन। देनक कारण छैन जे जहिना रामायण पढ़निहार अपन धिया-पुताक नाओं रामायणिक पात्रानुसार रखै छैथ आ हनुमत भक्तिभावसँ जीवन यात्रा करै छैथ तहिना सिंहेश्वर काका महाभारत पढ़निहार छैथ, तँए दुनू परानी मिलि अपन धिया-पुताक नाओं महाभारतक पात्रानुकूल रखने छैथ आ व्यास भक्तिक रसपान करैत जीवन यात्रा करै छैथ। अनेरे किए ओ वीणा एकतारा लऽ कऽ नारदजी जकाँ अकास-पताल घुमता, तँए नारदीय भक्ति-भावसँ सिंहेश्वर काका अपनाकेँ परहेज केने छैथ।

सिंहेश्वर काका दू भाँइ छैथ, दुनू भाँइमे बीस सालसँ भिनौजी छैन। जोतसीम खेत बाँटि नेने छैथ मुदा गाछियो-कलम आ फुलबाड़ियो शामिले रखने छैथ। तइ पाछू दुनू भैयारीक अपन सोच-विचार छैन। सोच ई छैन जे खेती तँ सभदिना काज छी तँए अपन-अपन करबो करब अछि आ अपन-अपन भोगबो करब अछि, मुदा गाछी-कलम तँ भलेँ अपन रोपल किए ने छी मुदा ओकरा फड़ाएब तँ अपना हाथमे अछि नहि, सालमे एकबेर फड़त कि नइ फड़त, तहूमे जँ एक दियादक गाछ फड़ि जाए आ दोसर दियादक गाछ फड़बे ने करए, तखन तँ खाइ-पीबैमे दू रंग भऽ जाएत, तँए ओकरा एकरंग रखैक नीक रस्ता यएह

अछि जे गाछीकेँ शामिले राखू, फले बाँटि लेब। तीनटा गाछ मालदहक छैन, आद्रा पाबैन दुआरे वएह आम दुनू भैयारी मिलि तोड़ने छला, ओही आमक हिस्साक बँटवारामे उचितलाल भाय पंच छैथ।

एक तँ सिंहेश्वर कक्काक गलती भेलैन जे जखन अपन घरक चीज (आम) छेलैन तखन किए ने अपने दुनू भैयारी मिलि एक भैयारी आमक जोड़ा लगा-लगा दोसर भैयारीक हाथमे देने जइतैथ आ जिनका हाथमे आम जइतैन ओ दुनू दिस केने जइतैथ। मुदा से भेल नहि। नइ होइक कारण बुझले अछि, एकटा मौगीक खातिर महाभारत भऽ गेल, एकटा मौगीक खातिर अयोधियासँ लंका तक उजाड़ भऽ गेल, तखन जँ गामक भैयारीमे पंच नहि आबैथ सेहो मौगुपने हएत किने।

दुनू भैयारी सिंहेश्वर काका उचितलाल भायकेँ आमक बँटबाराक पंच मानलैन। मानियेँ नहि लेलैन, जा कऽ कहबो केलखिन जे तीन गाछ मालदह आम आद्रा पाबैन-ले तोड़लौं हेन से अपने पंच बनि बाँटि दियौ।

उचितलाल भाय ओना सामाजिको पनचैतीमे सेहो जाइते छैथ मुदा आम-कटहरक पनचैतीक तँ विशेषज्ञे छैथ। तँए बेसी लोक हिनके पंच मानै छैन। पंचोक तँ अपन ट्रेनिंग उचितलाल भायकेँ भेटले छैन जे नइ लड्डू तँ लड्डूक झड़ुओ जँ भेटल तैयो बहुत भेल। आद्रा पाबैन छीहे, समयपर बरखा भेने आमक सुआदो बनियेँ गेल छै, जँ लाबो-दुआ भेटल तैयो पावनिक कोन बात जे पाँच दिन आगुओ तक दुनू साँझ चलबे करत। अपन मजबूरी देखबैत, पुन: विचारकेँ संशोधित करैत उचितलाल भाय आमक बँटबाराक मान मानि गछैत बजला- “जखने गाछसँ आम उतैर जाए, जानकारी देब, पीठेपर पहुँच दुनू भाँइक बीच आम फुटा देब।”

सएह भेल, आमक ढेरीसँ आम निकालि-निकालि उचितलाल भाय दुनू दिस बाँटए लगला। दहिना हाथसँ गोलगर आ बामा हाथसँ चेपगर आम उठा-उठा दुनू दिस बाँटए लगला। गोलगर-चेपगरक माने भेल पैघ-छोट। कुरुक्षेत्रक रणभूमि जकाँ एक दिस सिंहेश्वर कक्काक तीनू बेटा आ दोसर दिस बघेश्वर कक्काक तीनू बेटा पतियानीमे ठाढ़ छल।

उचितलाल भाइक पंचनामा हाथपर अर्जुनक नजैर अँटकल रहइ, ओ

बामा-दहिना हाथक गोलगर-चेपगर आम देखि नकुलकेँ आँखिक इशारा केलक। नकुलो तँ पकिया उल्था बुझू, सहदेवक, आँगुर पकैड़ जहिना पछबरिया बेपारी, माने माड़वारी अपन धोतीक फाँड़मे घोंसिया दोसर बेपारीकेँ आँगुरपर हिसाब जोड़ि बुझा दइ छैथ तहिना नकुलक हिसाब सहदेव बुझि गेल। एके बेर तीनू भाँइ अरजैत-गरजैत अर्जुनक संग नकुलो आ सहदेवो उचित भायकेँ गोलिया लेलकैन। तेकरे पनचैती हएत।

पाँच बजे बेरुका उखड़ाहा पनचैतीक समय आ पंचायत भवन स्थान निर्धारित भेल छल। ओना, धरमागती बात ईहो छल जे उचिललालपर अपनो आक्रोश छल, मुदा ऐठाम तँ ने तीनमे छेलौं आ ने तेरहमे, तँए सुनिये कऽ ने संतोख करए पड़त। ओना, संतोखो तँ सेतोखे छी, केतो धारक ऊपर देने चलैए आ केतौ धरती छुबैत तरो देने चलिते अछि। मुदा जे अछि ओ तँ ओइठाम अछि, ऐठाम तँ उचित भाय गामक सभदिनो आ सभठीमोक पंच छथिऐ तँए अपन पनचैती केहेन भेलैन सएह बुझैक जिज्ञासा मनमे रहए।

अपन घरसँ पंचायत भवन उत्तर आधा किलोमीटरपर अछि। बीचमे एकटा चौक छइ। चौकक माने दुनू अछि, जँ पाँच-दसटा दोकान खुजि गेल तँ ओहो चौक भेल आ जैठाम चारू दिससँ रस्ताक मिलानी भेल सेहो चौक भेल। मुदा से नहि, ऐठाम दुनू अछि।

कनसोह लइले पाँचे बजे चौकक चाहक दोकानपर जा कऽ बैस गेलौं आ बिना कारण जनौने 1974 इस्वीक इमरजेंसीपर भाषण दिअ लगलौं। मनमे छल जे किए ने सभ बच्चाक सिलेबसमे ऐ प्रश्नकेँ राखल जाए। एकसूरे दस मिनट बाजि गेलौं। तही बीच रंगलाल भाय पनचैतीसँ घुमल मुँह लटकौने पहुँचला। ओना, रंगलाल भाय ने गामक जितुआ पंच छैथ आ ने मनौआ पंच छैथ मुदा तैयो पनचैतीमे ऐ दुआरे गेल छला जे अर्जुन तीनू भाँइ आबि कऽ कहलकैन। भाय, समाज छी! समाजमे रहै छी तखन जँ समाजक बात नहियोँ मानब सेहो केते नीक हएत। ओना, रंगलाल भाय अपना गामक समाजकेँ बिनु डोराडोरिक समाज बुझै छैथ, तँए पनचैतीमे नहियेँ जाइ छैथ, मुदा अर्जुन तीनू भाँइपर बेकतीगत बिसवास रहैन तँए गेल छला। ओना, अर्जुनकेँ पनचैतीसँ पहिनहि कहि देने छेलखिन- “बौआ, बिना अर्जने ने मर्जन होइए आ ने बिना मर्जने तर्जन

होइए, तँए पंच बनब तँ भारी नइ भेल मुदा हँसेरी बनब तँ भारी भइये जाएत किने।”

रंगलाल भाइक बात सुनि अर्जुन तँ चुपे रहल, किए तँ ओकरा दुनू हाथमे मुंगबा रहइ, मुदा सहदेव बाजि चुकल छल- “भाय साहैब, अर्जुनक पनचैती छिऐ।”

रंगलाल भाइक लटकल मुँह देखि बजलौं- “भाय साहैब, बड़ तबाही बुझि पड़ैए! केतौ बाहरसँ अबै छी?”

रंगलाल भाय चुप्पे रहला तँए फेर बजलौं- “अच्छा पहिने चाह पीबू पछाइत कुशल-छेम करब।”

बिना किछु बजने रंगलाल भाय लगमे आबि बैसला। बैसते दोकानदार चाह नेने आबि हाथमे धरा देलकैन। ओना, गुलाबक फूल वा कोनो आनो फूलक जँ ऊपरका रूप कुरूपो भऽ जाइ छै, मुदा जहिना पानिक रस पबिते, माने धोला, भिजौला वा सींचलासँ, ओ अपन रंगमे रंगि जाइए तहिना रंगलाल भाय रंगि गेला। ताबे चाहो पीब लेलैन। बजलौं- “भाय साहैब, पंचायत भवनपर पनचैती छी से किछु बुझबो केलिऐ?”

निछोह दौगल आएल कोनो धिया-पुताकेँ एकाएक कोनो बात पुछबै तँ ओ जहिना हकैम-हकैम बजैए तहिना रंगलाल भाय बजला- “ओही पनचैतीसँ अबै छी।”

जिज्ञासा जगल। पुछलयैन- “की भेल?”

रंगलाल भाय बजला- “हएत की कपार! अर्जुन तेहेन अपन पक्ष रखलक जे कोनो पंचकेँ उठबे ने केलैन।”

आरो जिज्ञासा बढ़ल। बजलौं- “से की भाय साहैब?”

रंगलाल भाय बजला- “अर्जुन उचितलालकेँ पुछलकैन जे आम सन अदना वस्तुपर जखन अहाँक धीर्त नइ रहल तखन समाजक उचित-कल्याणमे धीर्त रहत?” ❑

लेहाज

ठक्कन आ वरस्पैत दुनू एके गौंआँ, एके कौलेजसँ बी.ए. पास सेहो केने अछि। हारि-थाकि दुनू गाम आएल। गाम आएल नहि, रहबे करए, मुदा ठौर नइ भेटने माने नोकरी नइ भेने दुनू गामेमे रहि किछु करैक विचार केलक। ओना, ठक्कनो आ वरस्पैतो दू जातिक सेहो आ दू टोलोक। ओना, कहैले दू टोलक अछि, मुदा से प्राकृतिक नहि, एके टोलमे दू जातिक सीमा रहने दू टोल भेल अछि। मुदा तैयो दुनू गौंआँ, पढ़ै-लिखैक संगी आ दोसो तँ रहबे करए, एकरा के नकारत।

मुदा सभ किछु रहितो दुनू सदिकाल अपने विचारमे ओझराएल रहए। मुदा तैयो कखनो संगी बनि फगुओ गाबए तँ कखनो दुनू एक-दोसरकेँ देखि निमग्न भऽ जाए जे फुटैयो पाएब कठिन भऽ जाइत। जे जनमौटीक समदौन छी कि मरौटीक। मुदा जहिना बकलेलो-ढहलेल बेटा किए ने होउ मुदा बापक तँ सोने छी, तहिना ने दोस्तियो अछि...। ऐठाम आबि दुनू गोरेक मनमे दोस्तीक मर्म बढ़ि जाइ, तँए एक-दोसर छाती-मे-छाती मिला किछु निर्णय कऽ दुनू गोरे ओही रस्ते चलैक कोशिश करऽ लगए। मुदा लाख मिलानक पछाइतो गरमिलान भइये जाइ, आ जेतेकाल गरमिलानक झोंक मनमे चढ़ल रहै तेतेकाल टोका-टोकी बन्न, मुदा सौंझुका कौआक पनचैती (भरल पेट) आ भोरुका पनचैती जँ एके रंग करत तखन तँ भेल वंश-वृद्धि। सभ काग-भुसुण्डीए भऽ जाएत। काग भुसुण्डी हुअ कि नइ हुअ मुदा दुनू कि कोनो औझके दोस छी आकि जहिएसँ गामक स्कूलमे नाओं लिखौलक तहिएसँ अछि। धिया-पुतामे जे गुल्ली-डण्टा आकि चीका-चीका खेलाइमे झगड़े भेलै तेकरा पुरनाएल कागज जकाँ फाड़ि कऽ फेक देत आकि अनेरे मनक अलमारीमे भरने रहत। अपने दुनू अपने मने पनचैती कऽ फरिया लिअए जे जखन झगड़े ने दन भेल, तखन अनेरे जे चुन-तमाकुल बन्न राखब ई बुड़िपना छोड़ि किछु ने भेल। मन मानिते दुनू एकठाम तमाकुलो खाए लगए आ

गपो-सप्प करए लगए...।

..तहिना मिलान भेल रहइ। ठक्कनक हाथमे तमाकुल-चुन आ वरस्पैतक हाथो खाली आ मुहोँ खाली, आ तैपर जँ बोलो खाली तखन तँ भेल बराबरीक दोस्ती...। ई बात मनमे ऐबते वरस्पैत बाजल-

"ठक्कन दोस, एकटा बात बुझै छिऐ जे दुनू गोरे जे एकठाम तमाकुल खाइ छी तइसँ केते नीक होइए?"

हाथमे तमाकुल-चुन तैपर औंठासँ तरहत्थीपर मैलब, ठक्कनकेँ जेना आरो झोंक चढि गेल होइ तहिना मुँह फाड़ि बाजल–

"नहि।"

जहिना भनसिया लग बैस मसल्ला सबहक चर्च केलासँ सुआदिष्ट तरकारी भेटै छै तहिना वरस्पैतकेँ भेटल। बाजल-

"दोस, अपना दुनू गोरे गौँआँ छी, काजमे घटी-बढ़ी होइते अछि से हेबे करत। तहूमे जे नमहर काज रहल तइमे आरो नमहर होइ छै मुदा अहूकेँ तँ नहियेँ नकारल जाएत जे जैठाम दू गोरेक काज एक गोरे करत आ बीचमे काजक विचारक जे आदान-प्रदान दोसरक हाथे हएत अहीसँ ने समाजक सम्बन्ध सूत्र सेहो सक्कत हएत।"

वरस्पैतक बात जेना ठक्कनकेँ नचा देलक। बाजल-

"दोस! मोन पाड़ू अपन ओ दिन जइ दिन दुनू गोरे कौलेजसँ विदा होइत घर अबैत रही आ विचार केने रही जे घूस दऽ कऽ नोकरी नइ करब। तेकरे ने साफल भेल जे पाँच बर्खक जिनगियो गेल, खरचो भेल आ नोकरियो ने भेल?"

चारक ओलतीक पानिक धारकेँ अपन अँगनाक पानिक धारमे मिलबैत वरस्पैत बाजल-

"सएह ने! बुझै के अछि, जे तेकरे साफल दुनू गोरे भोगै छी। मुदा साँझे मुइला तँ केते कानब। तहूमे असगरूआ छी। कब्र खुनए जाएब आकि बजारसँ कपड़ा आनए जाएब आकि कानि-कानि लोककेँ बुझाएब...। छोड़ू पैछलाकेँ, आब किछु करैक विचार करू।"

'किछु करब' सुनि ठक्कन सकपका गेल। सकपका ई गेल जे किछु करब। करैले तँ ऐ दुनियाँमे बहुत अछि तखन किछु की करब। सभटा ने किए करब। माथक मोटरी सम्हारैत ठक्कन बाजल-

"भाय, जखन नान्हिटा संकल्प नेने एतेटा जिनगीक नोकरी गेल तखन जँ अपनो किछु ने करब तँ जीब केना? जीबैले तँ किछु करए पड़ै छै किने?"

सोझराएल ठक्कनकेँ देखि वरस्पैत बाजल-

"अनेरे केतए वौआइले जाएब दोस, जेतए छी, जेतबे अछि तेकरे अपन बुझि काज शुरू करब।"

धारक चौरस पेट जकाँ सहटि ठक्कन बाजल-

"दोस, एना किए बुझै छिऐ जे गाम हमर नइ छी आकि समाज हमर नइ छी। जहिना गामक भीतर अनेको गाम अछि तहिना समाजोक भीतर अनेको समाज अछि। अपन समाज अपने ने गढ़ि-मढ़ि, जोड़ैत आगू नम्हरो आ नीको बनै छइ।"

सहीटमे सहटैत ठक्कनकेँ देखि पाछूसँ ठेलैत वरस्पैत जिगेसु बनैत बाजल– "दोस, की कहलिऐ समाजोमे समाज छै?"

तैबीच दुनू गोरे तमाकुलक पहिल पीत फेक लेलक। मनो हल्लुक भेलै जइसँ बजैक वीणाक तार मनमे दुनूक झनझनाएल। ठक्कनकेँ जेना ठोँठिमे बैसल रहै तहिना बाजल-

"हँ मीत, एकटा अछि अपन समाज आ दोसर अछि आन समाज।"

बुझनुक वरस्पैत, मुदा अपनाकेँ अनाड़ी बनि जिज्ञासा करैत। जिज्ञासा ई करैत जे केते दूर तक हमर बात ठक्कन पकैड़ रहल अछि। जेतऽ पकड़त तेतऽ बुझि जाएब आ ओतै डेरा दुनू गोरे खसा धरमशाला बनबैत सीता-राम सीता-राम मरैबेर तक करैत रहब। देखनिहार-बुझनिहार बूझत जे राम-राम करै छी कि मरा मरा...। बाजल– "भाय, एकटा बात हमरा मनमे हूलि-मालि करैए, से कनी फरिछा कऽ बुझा दिअ।"

वरस्पैतक विचारक गुरु-गंभीरत्वकेँ पकैड़ ठक्कन धुर-झार ओ बात

बाजल जे कक्काक मुहेँ सुनने छल- “भाय, अपना दुनू गोरे स्कूलमे विद्यार्थी समाज बनि, जे सक लागल केलौं, तहिना आनो-आन समाज अछि। शिक्षक समाज, प्रोफेसर समाज, डॉक्टर समाज, इंजीनियर समाज, जाइतिक समाज, सम्प्रदायिक समाज ने जानि केते समाज अछि।”

वरस्पैत बुझि गेल जे बहैत कमला धार जहिना अपन बास स्थलसँ जल बोझि अनवरत बैशाख-जेठक रौद बरदास करितो माने रौदचट्टा समय गमबितो चलैत रहैए तहिना जँ ठक्कनकेँ सह देब तँ आगूए-आगू घोड़ा जकाँ दौड़ऽ लगत। बाजल- “ठक्कन भाय, तूँ ते तेते नमहर ओझरीक बात कहऽ लगलह जे हमर मने वौआ गेल।”

जहिना कोनो हरेलहा-भुतिएलहा बच्चाकेँ लोक पकैड़, बुझबए लगैए जे बौआ तूँ हरेलह हेन कहाँ, परिवारबलासँ कनी छुटि गेलह हेन, तोरा माए-बाप लग पहुँचा देबह, कानह नहि। तहिना वरस्पैतकेँ बुझि ठक्कन बाजल–

“भाय, अपना दुनू गोरे आब कि ऐ समाजमे छह-पाँच करब, जखन सभ किछु रहितो, समाजमे किछु ने अछि तखन तँ अपन ओझरी केना सोझराएब, सएह ने जरूरी अछि। अनेरे जे उड़ल कौआ गनैत रहब, तइसँ की अपने भेटत आ की समाजकेँ भेटतै।”

जे बात वरस्पैत ठक्कनसँ बजबए चाहै छल तइ बातसँ ठक्कन बहैक गेल छल। मुदा धारक पानि तँ आड़ि बन्हने नइ रोकाएत, ओकर तँ मुँह ओरिया कऽ घुमबए पड़त। बाजल- “भाय, समाजक चर्च करै छेलिऐ?”

वरस्पैतक इशारा पबिते ठक्कन बाजल-

“अपना दुनू गोरे दोसो छी, संगियो छी, गौओं छी, पड़ोसियो छी आ पुरुखो छीहे। मुदा जतियाक तेहेन पतिया अछि जे अहाँ दोसर जाइतिक समाज भेलौं आ हम दोसर जाइतिक। देखैले एके टोलमे, कनी हटि कऽ दुनू गोरेक घरो अछि, हम तीनियेँ घर अपना जाइतिक छी, टोलक नाउओं दछिनवारिये टोल अछि, मुदा तैबीचमे हमरा तीन टोलिया किए लोक कहैए?”

ठक्कनकेँ जेना मनमे कोनो कचोट जरूर अछि, जँ से नइ अछि तँ किए अपनाकेँ तीनटोलिया परिवार बुझैए? समाजक परिवार छी, एक तँ टोलक टुकड़ी

किछु प्राकृतिक बनाबटिक खियालसँ आ किछु जातिक सेहो तँ बनले अछि। जेना रस्तापर छोटका बच्चा सभ हाथसँ बहारि चिक्कन करैत घर-अँगना बनबैत खेलाइत, अन्तिम रूप दैत-दैत खेलक समैये खेलैत खेलमे बीता हाँइ-हाँइ कऽ उसारि घर-अँगना उजाड़ि-पुजाड़ि आँगन अबैए, तहिना ठक्कनक विचारसँ वरस्पैतकेँ आभास भेल। मुदा आभासो बूझब असान नहि। वरस्पैत बाजल–

"दोस, चारि बजेक समय रहल। दुनू गोरे एकठाम बैस गाममे किछु करैक संकल्प काइए लेब।"

ठक्कन किछु ने बाजल। अवाक बनि वरस्पैतक मुँह देखए लगल...।

चारि बजे वरस्पैत ठक्कन ऐठाम पहुँच बाजल-

"दोसतिनी हाथक चाह अपनेटा पीब आकि दोसो-महिम, गौओं-घरूआकेँ पीआएब?"

ओना, बच्चेसँ दुनू गोरे- वरस्पैतो आ ठक्कनो- एकेठाम खेलबो-धुपबो कएल आ एके स्कूलमे नाउओं लिखा पढ़बो-लिखबो केलक, मुदा दिन-तारीख मासक हिसाब दुनूक जन्मक हेरा गेल। जइसँ अखनो तक दुनू नइ बुझि पाबि रहल अछि जे उमेरक हिसाबसँ के जेठ आ के छोट अछि, जेकर चलैत जहिना वरस्पैत ठक्कन-दुनू-बेकतीसँ गप करैत तहिना ठक्कनो वरस्पैत-दुनू-परानीसँ। ओना, लोको दुनूकेँ दुनूसँ गप-सप्प करैत देखैत मुदा दुनूक दू जगह रहने, बिच्चेमे हेरा जाए। ओना, हेरा जाएत से नीके हएत, जँ आइयो अहिना हुअए जे भैंसुर मोटर साइकिलमे चुरम-चुर भेल छैथ आ भावो डॉक्टर केना देहमे भीर पट्टी बन्हती। ओना, दुनूक खतियान बनैएमे गजपट भऽ गेल रहइ। गजपट ई जे दुनू दू जातिक रहने छठिहारिक राति दुनूक दू विधि विधातो, देवगणो आ दाय-माइक देवीगण सेहो दू दुनियाँक। तँए दू रंगक खतियानी-बोहीमे नाओं दगा गेल। तहिना स्कूलोक खतियान गजपट भेल। एके दिन दुनू गोरे गामक स्कूलमे नाओं लिखबए गेल, शिक्षक अपन प्रवेश-तिथि देखि एके दिन एके तारीख ठीकि देलैन। मुदा तेतबे वरस्पैत आ ठक्कनक संग नहि छल, दुनूक सासुर सेहो एके गाम, तँए दुनूक सम्बन्धोमे बढ़ोत्तरी भइये गेल छेलइ। बढ़ोत्तरी भेल सढ़ूआरे। नैहरेसँ दुनू सुआसिन बहीना लगौने, तँए समाज बाजियो ने सकैए। बहिनसँ जहिना बहीना,

तहिना बहीनासँ बहिनोइयो ने। अखन धरिक जे वरस्पैत आ ठक्कनक बीच गप-सप्प भेल, ओ वातावरणकेँ मोहक बना देलक। चाह पीब दुनू दोस बैस विचारऽ लगल जे आगू की कएल जाए, केना कएल जाए...।

पहिने ठक्कने बाजल-

"भाय वरस्पैत, सभ दिन अहाँ किछु ने किछु नव काज दिस बढ़ैले कहै छी मुदा तेहेन जालमे ओझरा जाइ छी, से केम्हरो तकबो करब से आँखिए जलिया जाइए।"

ठक्कनक बात सुनि वरस्पैत मने-मन विचार करए लगल जे सोल्होअना काजक भार ठक्कन सुमझा रहल अछि, एहेन स्थितिमे अन्ध-भक्तकेँ अन्हरा भगता बनाएब उचित नहि। मुदा लगले मनमे उठलै जे असगरे जे मने-मन चेथारब तइसँ नीक जे मूर्त्त रूपमे काजकेँ निरमौलासँ आगूए-आगू सभ किछु आबए लगत...।

वरस्पैत बाजल-

"भाय ठक्कन, जहिना दुनियाँमे काजक कमी नइ अछि तहिना गामो-समाज, परो-परिवार आ बेकतियो-बेकतीक बीच नहियेँ अछि।"

बिच्चेमे ठक्कन बाजल-

"हँ से तँ नहियेँ अछि।"

"तखन?"

"तखन तँ यएह ने जे नीक होइ?"

ठक्कनक विचार पबिते वरस्पैतक मन जेना फुला गेला। बाजल– "रंग-रंगक काजो समाजमे पसरले अछि। चाहे ओ अर्थ सम्बन्धी होइ कि सामाजिक होइ आकि शैक्षणिक। मुदा अखन तँ अपने दुइए गोरे छी, तँए समाजकेँ अँकैत ओहन काजमे हाथ लगबए पड़त जइमे समाज मनसँ संग देत। जखने मनसँ संग देत तखने काजक सफल साफल हेबे करत।"

वरस्पैतक बात ठक्कनकेँ जँचल। समर्थनक भाव जगबैत बाजल-

"भाय, जिनगीमे पहिले काजक नीक-बेजाएपर विचार करब, हमरा ओते

नीक नइ बुझि पड़ैए, किए तँ जे सुतल अछि ओ पहिने नीनक भक्क तोड़त तखन ने मन फरीच हेतइ। जखने फरीच हेतइ, तखने नीक-बेजाए बेड़ा लेत। तँए पहिने ओहन काजक जड़ि रोपह जेहेन जगह अछि।"

संगे-संग दुनू गोरे सभ दिन रहल तँए एक-दोसराक बात बुझैमे बेसी तरतम्य नइ होइ। वरस्पैतक विचार जेना ठक्कनक मनकेँ धक्का मारलक। धक्का लगिते बाजल-

"भाय, जखन किछु करैक विचारसँ दुनू गोरे एकठाम भेलौं तखन आइ काजक गोड़ा रोपिए देब।"

ठक्कनक विचारसँ जेना वरस्पैतोक मनमे शक्तिक आभास भेल। शक्तिक आभासो तँ सोभाविक अछि, जखने चारिटा हाथ, चारिटा पएर, चारिटा आँखि आ चारिटा कानक संग दूटा मन एकठाम हएत तखने शक्तिक संचार होइ छइ। बाजल-

"भाय ठक्कन, सभ गाममे सभ रंगक पूजो होइए आ मेलो लगैए, तहिना अपनो दुनू गोरे एकटा मेला करैक विचार करह।"

पूजाक मेला सुनि ठक्कनक मन नाचि उठल। बाजल– "बढ़ियाँ विचार, मुदा एकरंगाह मेलामे गाम-गामक बीच प्रतियोगिता भऽ जाइ छै जइसँ एक-दोसरकेँ ने देखि पबैए आ ने चीन्ह पबैए। तँए किछु नव होइ।"

जेना वरस्पैतक मनमे विचारले छेलै तहिना बाजल-

"नव काजमे नीक हएत जे अपना सभ लछमी पूजो आ चारि दिनक मेलो लगाएब।"

चारि मास आगू लछमी पूजाक समय देखि ठक्कन बाजल-

"भाय, लछमी पूजाक समैयक अखन बहू-दिन अछि, लग-पासक दोसर करह।"

ठक्कनक जिज्ञासा देखि वरस्पैत बाजल-

"लछमी पूजा सबदिना छी, जहिया गर लागए, तहिये कऽ ली। आसीनमे दुर्गाजीक संग आ कातिकमे कालीजीक संग, तहूमे सालमे चारि बेर दुर्गो पूजा

होइते अछि।”

महिनाक अन्तिम पूर्णिमा दिन तँइ करैत विचारकेँ आगू बढ़ौलक। एक तँ गाममे पहिल सार्वजनिक उत्सव तैसंग नव रूपमे लछमीक पूजा, समाजोक नीक सहयोग भेटल। तीस दिनक काजक दौरमे दुनूक विचारो आ बेवहारोमे दूरी बनि गेल। ओना, पूजो आ मेलोक प्रशंसा एते भेल जे समाज लछमीजीक स्थायी स्थान बनेबाक विचार सेहो कऽ लेलैन। समाजक सहयोग पाबि वरस्पैत आगूक काज समाजकेँ सुमझा देलकैन, मुदा ठक्कन चन्दाक उगाही देखि अपनाकेँ ओइमे साटि लेलक...।

..जहिना वरस्पैत अपन लेहाज बँचा काज केलैन तहिना ठक्कन अपन लेहाज उठा काज केलक, जइसँ समाजमे बदनामियोँ भेलइ।

ऐगला सालक पूजो आ मेलोक सम्बन्धमे अपन विचार दैत वरस्पैत बाजल-

“समाजक काजक संग छी, जे जेकर छी ओते सहयोग ताधैर दैत रहब, जाधैर अहाँ सभ अपन संकल्पक संग आगू बढ़ैत रहब।” ❑

पटियाबला

जेठ मास, दिनक तीन बजैत। देखैमे रातिसँ बहुत नमहर दिन बनैत मुदा जहिना कायाक संग माया आ रौदक संग छाया चलिते रहैत तहिना नमहर दिनक संग धूपो एते बढ़ि-चढ़ि जाइत जे श्रमशक्तिक दौड़मे मझोलको दिनसँ छोट बनि जाइत। सुरूजक शक्तिवाण एतेक उग्र रूप पकैड़ लइत जे धरतियो ताबा जकाँ तबैध आगि उगलैपर उताहुल भऽ जाइत। धरती-अकासक बीचक लुलुआएल लू एकताले नाचए लगैत। जहिना राम-रावणक बीच वा महाभारतक सत्तरहम दिन भेल, तहिना। तेहने तीरसँ बेधित सुलेमान ओही चिड़ै जकाँ बेहोश भेल श्यामसुनरक दरबज्जापर आबि दाबामे साइकिल ओंगठा ओसारक भुइयेँपर चारूनाल चीत खसि पड़ल। खसिते आँखि मुना गेलइ। जहिना बन्न आँखि साँस चलैत अधमरूक होइत तहिना सुलेमानक छल।

श्यामसुनरकेँ बेरूका तीन बजेक चाह पीबैक अभ्यास छैन। बगलक घरक ओसारपर चाह बनबैत रहैथ तँए साइकिलक खड़खड़ाएबसँ नै परेख सकला जे वाण लगल बाझ जकाँ कियो छैथ। साइकिलक बात समान्य तँए समुद्र उपछबसँ नीक जे जइ काजमे हाथ लागल अछि, ओकरा पूरा ली। सएह केलैन। चाह पीबैत श्यामसुनर दरबज्जापर अबिते देखलैन जे ई अधमरू भेल के छिआ? मुँह निहारलैन तँ चिन्हल चेहरा सुलेमानक!

आँखि बन्न, कुहरैत मनबलाक तँ बोलियो अ-स्पष्टे जकाँ भऽ जाइ छै, तँए बाल-बोध वा पशु जकाँ दुख बुझब कठिन भऽ जाइत, तथापि छाती थीर करैत श्यामसुनर टोकलखिन-

"सुलेमान भाय, सुलेमान भाय?"

पानिक तहक आवाज जहिना ऊपर नइ अबैत, मुदा पानिक ऊपरक आवाज कम्पित होइत, लहैरिक अनुकूल तेतए धरि जाइत जेतए ओ पूर्ण थिर नै

भऽ जाइत। मुदा कोनो उत्तर अबैसँ पहिनहि श्यामसुनरकेँ मोन पड़ि गेलैन भिनसुरका आवाज- ‘पटिया लेब पटिया, पटिया लेब पटिया।’

लगले मनकेँ नअ घन्टा उचैट कहलकैन- ‘भरिसक रौदक चोट आ मेहनतक मारिसँ सुलेमान एते बेथा गेल अछि जे आँखि खोलैक साहस नहि भऽ रहल छइ!

तैबीच चिन्हल दरबज्जा आ चिन्हार बोली अकाइन करोट फेरैत अधखिल्लू आँखि उठा सुलेमान बाजल- “श्याम भाय, केकर मुँह देखि घरसँ निकललौं जे एको पाइक बोहैन नै भेल। उधार-पुधार ऐ उमेरमे खाएब नीक नै बुझै छी, कखन छी कखन नहि, केकरो खा कऽ मरब तँ कोसत। जलखै खा कऽ जे निकललौं, सएह छी। खाली पेटमे पानियोँ भोंकबे करै छै किने। पेटमे बगहा लगैए!”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरकेँ भेलैन जे भरिसक एकरे बिलाइ कुदब कहै छइ। भुखाएल बिलाइ जहिना छटपटाइत अपनो बच्चाकेँ कण्ठ चभैले तैयार हुअ लगैत तहिना भरिसक होइत हेतइ! मुदा रोगो तँ असान नहि, एक संग केते तीर लागल छैन। कोनो घुट्ठीमे तँ कोनो बाँहिमे, कोनो छातीमे तँ कोनो माथमे। भूख-पियास, थकान इत्यादिसँ बेधल छैथ! तोसैत श्यामसुनर कहलखिन-

“सुलेमान भाय, आँखि नीक नहाँति खोलू। एक्के कप चाह बनौने छेलौं जे आँइठ भऽ गेल अछि। बाजू पहिने चाह पीब आकि खेनाइ खाएब?”

पाश भरल बातमे आस लगबैत सुलेमान बाजल-

“भाय, ऐ घरकेँ कहियो दोसराक बुझलौं जे कोनो बात बजैमे संकोच हएत। देहमे तेते दर्द भऽ रहल अछि जे कनी पीठपर चढ़ि खुनि दिअ पहिने, तखन बुझल जेतइ।”

साए घरक जुलाहा परिवार गोधनपुरमे। झंझारपुरसँ पूब सुखेत पंचायतक गाम गोधनपुर। जैठाम मरदे-मौगीए मिलि बिछानक कारोबार करैए। गाम-गामसँ मोथी कीनि, अपनेसँ सोनक डोरी बाँटि बिछान बीनि, उत्तरमे अंधरा ठाढ़ी, दच्छिन घनश्यामपुर, पूब घोघरडीहा आ पच्छिममे मेंहथ-कोठिया-रैमा धरिक बाजार बना कारोबार करैए। ओना जुलाहा खाली गोधनपुरेटा मे नहि आनो-आनो गाममे अछि मुदा बिछानक कारोबार गोधनपुरेटा मे होइत। शहर-बाजरमे जहिना रंग-बिरंगक

वस्तु-जात बिकाइत तहिना गामो-समाजक बाजारमे चलैए। जइमे रंग-बिरंगक वस्तु-जातक बिकरी-बट्टा होइए। किछु वस्तुगत अछि आ किछु भावगत।

साइयो परिवार अपन-अपन क्षेत्र बनौने अछि। सभ दिन सभकियो भिनसरे जेर बना-बना निकैल जाइए। ओना कहियोकाल सुलेमानो जेरेमे निकलैत रहए मुदा आइ असगरे निकलल छल। अपनामे सीमाक अतिक्रमण करबो करैत आ नहियोँ करैत। खुल्ला बाजार तँ वएह ने टिकाउ होइत जे बिसवासू वस्तुक बिकरी करए। नइ तँ घटिया माल आ बेसी दाममे वस्तुक बिकरी हएत। मुदा गोधनपुरक पटियाबलामे से नहि, एकरंगाह वस्तु एकरंगाहे दाममे बेचैत।

पीठसँ घुट्ठी धरि जखन श्यामसुनर दस बेर बुलला तखन सुलेमान पड़ले-पड़ल बाजल- “भाय, आब उतैर जाउ। एह, अरे बाप रे! ओइ जिनगीसँ घुरलौं। मन हल्लुक भेल।”

कहि फुरफुरा कऽ उठि बैसैत बाजल-

“भाय, अचेत जकाँ भऽ गेल छेलौं। आँखि चोन्हिया गेल छेलए। सौंसे अन्हारे बुझि पड़ए लगल छेलए। ई तँ रच्छ रहल जे दरबज्जाक पैछला देबालक ठेकान रहल, नहि तँ केतए वौआ कऽ मरितौं तेकर ठीक नहि।”

श्यामसुनर सुलेमानक बातो सुनैत आ मने-मन विचारबो करैत जे हो-न-हो दरबज्जापर मरि जाइत तँ मुँहदुस्सी चिड़ै जकाँ लोक केना मुँह दुसैत तेकर कोनो ठीक नहि। जैठाम घरपर चिड़ै बैसने घरक सभ किछु चलि जाइत अछि तैठाम आइ हमरा संगे की होइत! मुदा जइ दुर्गतिक दुर्गपर सुलेमान पहुँच गेल छल ओइठाम मनुक्खक मनुक्खपना केहेन होइ, ईहो तँ एक प्रश्न अछि।

सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक सुलेमान सभ दिन पचास किलो मीटर बिछानक बोझ लऽ कऽ टहैल बेचि जीविकोपार्जन करैत अछि, ओहनकेँ की कहल जाए। जे खून-पसीना एकबट्ट कऽ जीब रहल अछि ओकर अन्तिम बोलो कियो परिवारक सुनि पबितै.?

श्यामसुनरक मन ठमैक गेलैन। ठमैकते बजला- “सुलेमान भाय, आब

केहेन मन लगैए, किछु खाइ-पीबैक इच्छा होइए?”

मुस्की दैत सुलेमान बाजल- “भाय, आब जीब गेलौं। आब खेबे करब किने। किछु दिन औरो दुनियाँक खेल-बेल देखि लेब।”

जहिना गुड़ घाक टनक जेते बहैसँ पहिने रहैत अछि आ मुँह बनि निकैलते किछु बेसिया जाइत मुदा खिल–मूल–निकलला पछाइत जहिना सुआस पड़ए लगै छै, जइसँ रूप बदैल जाइ छै, पाशा आस लगबए लगै छै, तहिना सुलेमान बाजल- “भाय, सरेलहा भात-रोटी खाइक मन नै होइए।”

“तखन?”

“टटका जँ गहुमक चारिटा रोटी भऽ जाइत तँ मन तिरपित भऽ जइत। ताबे नहा सेहो लेब।”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर बजला-

“कल देखल अछि? बाल्टीन-लोटा आनि दइ छी, नीक नहाँति नहा लेब।”

श्यामसुनरक बात सुनि हँसैत सुलेमान बाजल-

“भाय, एना किए बजै छी। पचासो दिन पानि पीने हएब आ केतेको दिन नहेने हएब, तखन कल देखल नै रहत। लोटा-बाल्टीन कथीले आनब, आँगनमे काज हएत। हम सभ तरहक लूरि रखने छी ठाढ़े-ठाढ़ वा बैस कऽ सेहो नहा लइ छी आ जँ सासुर-समधियौर गेलौं तँ लोटो-बाल्टीन लऽ कऽ नहा लेलौं। ओना, भाय की कहूँ लोको सभ अजीब-अजीब अछि। ने माल-जाल जकाँ नाँगैर छै आ ने मनुक्खपना छइ। एक दिन अहिना रौदमे मन तबैध गेल रहए। एक गोरेक दरबज्जापर कल देखलिऐ, साइकिल अड़का नहाइले गेलौं। मन भेल पहिने चारि घोँट पानि पीब ली। तही बीच एकटा झोंटहा आबि झटहा फेकलक जे कल छुबा जाएत!”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनरक मनमे वाल्मीकि आबि गेलैन। तमसा नदीक तटपर वाण लगल क्रोंच पक्षीपर नजैर गेलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला- “अहूँ सुलेमान भाय कोन खिस्सा भुखाएलमे पसारै छी। झब-दे नहाउ, आँगनमे ताबे रोटी बनबबै छी।”

सुलेमान कल दिस आ श्यामसुनर आँगन दिस बढ़ला। जहिना भोजनक पूर्व स्नानसँ खुशी होइत तहिना खुशी होइत सुलेमान कल दिस बढ़ला। मुदा श्यामसुनरक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलैन। पहिल प्रश्न उठलैन जे मृत्यु-सज्जापर पड़ल यात्रीकेँ वा फाँसीपर चढ़ैत यात्रीकेँ पुछि भोजन देल जाइत अछि। अपना मुहेँ सुलेमान कहलक जे गहुमक रोटी खाएब। बिनु मेजनक गहुमक रोटी ओहने होइत जेहेन डम्हाएल मालदह आम। जँ सोझहे रोटी कहैत तँ मरूआ रोटीक मेजन अचार, पिआजु, नून-मिरचाय, तेल सेहो होइत, मुदा टटका गहुमक रोटी केहेन हएत? सभकेँ अपन-अपन प्रेमी होइ छइ। जँ से नइ होइ छै तँ जुड़शीतलमे अरबा चाउरक बसिया भात-ले पहिने लोक तरूआ-भुजुआ किए बना लइए? मुदा तँए कि मोटका चाउरक बसिया भातक प्रेमी नून-पिआजु-अँचार नै हेतइ। मुदा जेते जल्दिबाजीक जरूरत अछि–जल्दिवाजी ई जे भुखाएल पेट, स्नानक पछाइत दोसर रूप पकड़ैत–तइमे रसदार तरकारी बनाएब सम्भव नहि, तँए दूटा घेरा पका चटनी आ रोटीसँ काज चलि सकैए। सएह केलैन।

स्नान कएल नोतहारी जकाँ दरबज्जापर अबिते सुलेमानक भुखाएल मन प्रेमी भोजनक बाट ताकए लगल। आगूमे थारी देखिते सुलेमानक मन सौनक सुहावन जकाँ हरइष उठल। रोटीक पहिल टुक चटनीक संग मुँहमे अबिते दँतिया कऽ दाँत पकैड़ जीह रस चूसए लगल। रस पबिते बिहुसैत सुलेमान बाजल-

“भाय, दुनियाँमे केतौ किछु ने छइ। छै सबटा अपना मनमे। जाबे आँखि तकै छी ताबे बड़ बढ़ियाँ, आँखि मुनिते दुनियाँ धिया-पुताक खेल जकाँ उसैर जाइ छइ। अपने मुइने सृष्टिक लोप भऽ जाइ छइ।”

सुलेमानक गम्भीर विचार सुनि श्यामसुनरक मनमे उठलैन जे भोजैत जँ भोजहैरिक रसगर बात सुनै छै तँ ओ आरो बेसी आनन्दित होइ छइ। मुदा अपन बात तँ बिनु प्रश्न पुछने नै हएत। द्वैतमे दुनियाँ हेराएल छइ। बाढ़ि आएल धार जकाँ केतए-सँ-केतए भँसिया जाएत तेकर ठेकान रहत...। श्यामसुनर बजला-

“सुलेमान भाय, ऐ उमेरमे एते भारी काज किए करै छी?”

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जिनगीक हारल सिपाही जकाँ तरसैत बाजल- “भाय, जखन अहाँ घरक बात पुछिये देलौं तखन किए ने

सभ बात कहिये दी।”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर बुझि गेला जे बरियातीक भोज हुअ चाहैत अछि, से नहि तँ चरिया दिऐन-

“सुलेमान भाय, कहने छेलौं जे गरम-गरम रोटी खाएब, सराएल नै खाएब आ अपने गपक पाछू सरबै छी?”

श्यामसुनरक बात सुनि हाँइ-हाँइ दूटा रोटी आ अदहा चटनी खा एक घोंट पानि पीब सुलेमान बाजल-

“भाय, माए-बापक बड़ दुलारू बेटा छेलिऐ। खाइ-पीबैक कोनो दुख-तकलीफ परिवारमे नै रहए। कपड़ाक कारोबार छल। चरखा चलबैसँ लऽ कऽ खादी भण्डारसँ हाट धरिक कारोबार छल।”

श्यामसुनरक मनमे उठलैन- मोबाइल, टी.बी, कम्प्यूटर, कपड़ा, जूतासँ घर भरल रहै छै मुदा सबुरक केतौ ठेकान नहि। भरि पेट अन्न नहि, फटलो वस्त्र नहि, मुदा छुच्छहो घरमे सबुर केना फड़ि जाइ छै! सुलेमानक पारिवारिक जिनगीक ललिचगर गप सुनि श्यामसुनर जिज्ञासा केलैन- “ओ कारोबार किए छोड़ि देलिऐ। मेहनतो आ आमदोक खियालसँ तँ नीके छेलए?”

अपन बामा हाथसँ चानि ठोकैत सुलेमान बाजल-

“गाम-गामक बाबू-भैया सभ गरीबक कारखाना उजाड़ि देलक। खादी भण्डारकेँ लूटि लेलक। छुच्छे हाथे की करितौं।”

फेर जिज्ञासा करैत श्यामसुनर पुछलखिन-

“कोन-कोन तरहक कपड़ा बनबै छेलिऐ?”

सुलेमान-

“पहिरन वस्त्रसँ लऽ कऽ ओढ़ैक सलगा धरि बनबै छेलिऐ।”

डुमैत नाव देखि जहिना नैया निराश भऽ जाइत जे जँ जिनगी बँचियो जाएत तँ जीब केना, तहिना सुलेमानक तरसैत मन काँपए लगल।

बातकेँ समटैत श्यामसुनर बजला- “ई तँ धिया-पुताक खेल भेल, जाए दियौ।”

श्यामसुनर सुलेमानकेँ तँ कहि देलखिन 'जाए दियौ' मुदा अपन मन ठमकलैन। काजक रूपमे समाज बँटल अछि। ओइ काजक लूरि तँ ओकरा-ले सुरक्षित छइ। जँ कागजी ज्ञानक अभावो रहतै आ विकसित बेवहारिक ज्ञान देल जाइत तँ की घर-घर पाठशाला नै बनैत? जरूरत छल समयानुकूल ओकरा बनबैक। से नै भेल।

तेसर रोटी खाइत सुलेमान बाजल-

"भेल तँ सएह, मुदा परिवार बिलैट गेल।"

परिवारक बिलटब सुनि श्यामसुनर आगू बढ़ि पुछलखिन-

"अपन परिवारक कारोबार मरि गेला पछाइत की केलिऐ?"

श्यामसुनरक प्रश्न सुनि उत्साहित होइत सुलेमान बाजल-

"की केलिऐ! हमरो जुआनीक उठाइन रहए। मनमे अरोपि लेलौं जे दुनियाँमे केतौसँ कमा कऽ परिवार जीवित रखबे करब।"

सुलेमानक संकल्पित बात सुनि वाह-वाही दैत श्यामसुनर पुछलखिन- "दोसर कोन काज केलिऐ?"

"गाम-गामक कपड़ा बुननिहार बम्बइ चलि गेलिऐ।"

"बम्बइमे केतए?"

"भिवंडी। भिवंडीमे लूम चलै छइ। ओइमे कपड़ा बुनाइ होइ छइ। गमैया लूरि तँ रहबे करए, लगले नोकरी भऽ गेल। ओना मजदूरी रेट कम रहइ मुदा काजक माप सेहो रहइ। जेते करब तेते हएत। जुआन-जहान रहबे करी दिनकेँ ने दिन आ ने रातिकेँ राति बुझिऐ। खूब कमेलौं।"

श्यामसुनर-

"तखन ओकरा किए छोड़ि देलिऐ?"

श्यामसुनरक बात सुनि सुलेमानकेँ ओहिना भेलैन जहिना चोटेपर दोहरा-तेहरा कऽ चोट लगलासँ होइत। कुम्हलाएल फूल जकाँ मुँह मलिन आ ठोरमे फुरफुरी आबए लगलैन नमहर साँस छोड़ैत बाजल- "भाय, चारि साल खूब कमेलौं, पाँचम साल बिहारी-मराठीक हल्ला उठल। हल्ले नै उठल केतेकेँ जानो

गेल, केतेकेँ बहु-बेटी छिनाएल, केतेकेँ कमाइ लुटाएल। सभ किछु छोड़ि जान बँचा गाम आबि गेलौं।"

तैपर श्यामसुनर फेर पुछलखिन- "गाममे आबि फेर की केलिऐ?"

सुलेमान- "तेही दिनसँ पटियाक ई कारोबार शुरू केलौं। सभ परानी लागल रहै छी, घीचि-तीड़ि कऽ कहुना दिन बीतबै छी।"

श्यामसुनर- "सुलेमान भाय, हम ई नै कहब जे अहाँ नै काज करू, मुदा काजक ओकाति तँ देखए पड़त किने। कहुना-कहुना तँ चालीस-पचास किलोमीटर साइकिल चलैबते हेबइ?"

"हँ से ने किए चलबैत हएब। आब की ओ कोस रहल जे घन्टामे कोस चलैमे लगै छल।"

मुड़ी डोलबैत श्यामसुनर बजला- "एक तँ ओहिना शरीर ढील भऽ रहल अछि तैपर साइकिल चलबै छी। तेतबे नहि, हो-न-हो केतौ रस्ता-पेरामे खसिये-तसिये पड़ब आ हाथ-पएर टुटि जाएत तँ के देखत?"

एक तँ सुलेमानक जरल मन ठंढाएल तैपर सँ परिवार-ले हाथ-पएर टुटब सुनि बाजल- "भाय, केतबो अन्हारमे अनचिन्हार लोक ढेरिया किए ने गेल, मुदा हमहूँ तँ कोनो समाजक लोक छी तँए सभ समाज अपन-अपन धर्मक पालन करैए। तहूमे हम तँ चिन्हार छी, गोटे-गोटे अनठा कऽ आगू बढ़ि जाएत मुदा सभ तेहने तँ नहियेँ अछि। तहूमे जागल लोककेँ थोड़े विनाश होइ छइ।"

सुलेमानक जागल बात सुनि श्यामसुनर ठमकला। मन कहलकैन- बात तँ बड़ सुन्दर अछि मुदा जागलक की अर्थ सुलेमान बुझैए, से बिनु जनने बात नै बुझि सकब। एक्के चीजक नाओं-शब्द ढेर अछि, नाओंक संग काज जुड़ल अछि। तैठाम बिनु पुछने काज नै चलत। पुछलखिन- "भाय, जागल केकरा कहै छिऐ?"

जेना सुलेमानकेँ रटले रहै तहिना धाँइ-दे बाजल- "भाय, जखन आँखि मूनल देखै छिऐ तँ बुझि जाइ छिऐ जे सुतल अछि आ आँखि तकैत रहैए तँ बुझि जाइ छिऐ जे जागल अछि।"

फेर 'ताकब' आ 'मुनब'क ओझरी श्यामसुनरकेँ लगलैन। मुदा ओझरीमे नै पड़ि आगू बढ़ैत पुछलखिन- "केते गोरेक परिवार अछि?"

सुलेमान कहलकैन- “अछि तँ बहुत मुदा चारू बेटीकेँ सासुर बसने अखन तीनियेँ गोरेक अछि।”

श्यामसुनर पुछलखिन- “बेटासँ ने किए ई काज करबै छी, ओ तँ जुआन हएत?”

बेटाक नाओं सुनि सुलेमान विह्वल भऽ गेल। जेना केतौ सुख-दुख दुनू बहिन गाड़ा-जोड़ी कऽ सामाक गीत गबैत होइ तहिना सुलेमान बाजल-

“भाय, उमेरक ढलानेमे बेटा भेल। सभसँ छोट अछि। ओकरो दू अक्षर नै पढ़ा देबै, तँ लोक की कहत?”

‘लोक लाज’ सुनि श्यामसुनर हेरा गेला। एहनो जिनगीमे लोक-लाज जीवित अछि! बिहुसैत पुछलखिन- “मन लगा कऽ पढ़ैए किने?”

केकरा मनक बात ऐ युगमे के कहत। सभ अपने बेथे बेथाएल अछि। सुलेमान बाजल-

“भाय, से तँ ओकरे मन कहतै जे मन लगा कऽ पढ़ै छी आकि मन उड़ा कऽ पढ़ै छी।”

“अहाँ की देखै छिऐ?”

“हम तँ अपना धंधामे लगल रहै छी। तखन केना देखबै?”

“संगी-साथी सभ कहैत हएत किने?”

“हँ, से तँ कहैए जे जाइए पढ़ैले आ चलि जाइए सिनेमा देखए, मैच देखए।”

“परीछामे पास करैए किने?”

“हँ से तँ ढौऔ-कौड़ी लगने पास कइए जाइए।”

“तब तँ आशा अछि?”

“हँ, से तँ ओकरेपर टक लगौने छी। जँ कहीं नोकरी भेलै तँ दिने बदैल जाएत।”

बेटाक बात छोड़ि श्यामसुनर पत्नी-दे पुछलखिन- “घरवाली की सभ करै

छैथ?”

पत्नीक नाओं सुनि सुलेमान पसिज गेल। मनमे उठलै- आब कि पत्नी ओ पत्नी रहल। संगे-संग चलबैवाली, काँट-कुशक परवाह केने बिना कखनो गुरुक काज करैवाली, तँ कखनो संगीक, कखनो प्रेमीक! जिनगीक अन्तिम क्षण धरि रहैक प्रतिज्ञा.! बाजल- “भाय, कहुना कऽ बुढ़िया भानस भात कऽ लइए। बेचारी दम्मासँ पीड़ित अछि!”

“इलाज किए ने करा दइ छिऐन?”

“गरीब घरक लोकक इलाज की हेतइ। जेते पथ होइ छै तइसँ बेसी कुपथे भऽ जाइ छइ। तखन तँ चाहै छी जे बेचारी पहिने मरए।”

‘पहिने मरए’ सुनि श्यामसुनर पुछलखिन-

“से किए?”

“एतेटा जिनगीक सभ कमाइ लूटा जाएत, जखन हम मरि जेबै आ ओइ बेचारीक भीखक कलंक लागत।”

सुलेमानक बात सुनि श्यामसुनर गुम भऽ गेला। किछु फुरबे ने करैन। सुलेमानक चेहरा दिस तकैत रहला। जेना आश्चर्यमे श्यामसुनर पड़ि गेला तहिना। किछुकालक पछाइत कहलखिन-

“आइ रहि जाउ। काल्हि एम्हरेसँ बेचैत-बिकनैत चलि जाएब।”

तैपर हँसैत सुलेमान बाजल-

“भाय, जेना आइ एको पाइ बोहैन नै भेल तेना नीके हएत। मुदा, बिमरयाह घरवालीकेँ एक नजैर नै देखि लेब से केहेन हएत।” ❑

पछुआ गेलौं

पूर्णिमाक हिसाबसँ जेठ काल्हिये सम्पन्न भऽ गेल मुदा संक्रान्तिक हिसाबसँ दू दिन बाँकी अछि। माने परसू संक्रान्ति छी। सूर्यास्त भऽ गेल छल मुदा अन्हार नहि पसरल अछि। बाध दिससँ घुमि-फिर माने खेत-पथारकेँ देखि घरपर घुमल अबैत रही कि दरबज्जेपर दयाराम काकाकेँ बैसल देखलयैन। ओना, दिन आठम भेँट भेले रहैथ मुदा तैबीच, माने ऐ आठ दिनक बीच, भेँट नहि भेल छला तँए मनमे भेल जे जखन सोझामे दयाराम काका पड़ि गेला तखन मुँह घुमाकऽ रास्ता काटब, माने आगू बढ़ब उचित नहि। तहूमे जँ कहीं पाछूसँ टोकि कहैथ जे राधेश्याम किए मुँह चोरौने जा रहल छह, तखन तँ आरो केनादन, माने लाज हेबे करत। तँए मुँह उठौने दयाराम कक्काक दरबज्जा दिस बढ़लौं।

दयाराम काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर मुड़ी निच्चाँ केने असगरे बैसल छला। सड़कसँ निच्चाँ होइत जखन हुनका दरबज्जा दिस बढ़लौं तखन कनी फरिक्केसँ बजलौं-

“काका, गोड़ लगै छी।”

हम्मर आवाज सुनि दयाराम काका मिरमिराकऽ बजला- “नीके रहह। केम्हर गेल छेलह?”

दयाराम कक्काक बोलीसँ बुझि पड़ल जे कोनो चिन्तामे घेराएल छैथ, मुदा बिनु बुझने केना कहितिऐन जे कोनो सोगमे पड़ल छी। एतबे बजलौं- “बाध दिससँ अबै छी।”

सभ दिन अपने भोरूपहरमे उत्तरबरिया बाध दिस टहलबो करै छी आ खेत-पथारक आड़िपर जा देखबो करै छी। तहिना बेरूपहर-के दछिनबरिया बाध जाइ छी। पूर्वज सभक कहब छैन जे ‘नित: खेती दू संझी गाय, जे नइ देखए तेकरे जाय’। माने ई जे प्रतिदिन खेतो देखी आ दुनू साँझ गाइयो दूही। अनका जकाँ,

माने गामक आन-आन सभ जकाँ, अप्पन विचार नहि अछि जे दू घन्टा समय टहलैयेमे लगाएब। जँ टहलब आवश्यक अछि तँ किए ने अप्पन खेते-पथारक आड़िपर जा खेत-पथारक तर्कक़ेँ देखब जे कोन खेतमे की करक अछि। अही खियालसँ सड़क धऽ कऽ घन्टा-दू-घन्टा नइ टहलै छी, अप्पन खेते-पथार देखैमे घन्टा-दू-घन्टा लगि जाइए। तइसँ दुनू काज ओहिना होइए जहिना वृन्दावनमे गुआलिन सभकेँ होइ छेलैन। माने ई जे 'चलो सखी वहाँ चलें जहाँ बसें बृज राज, गौ-रस बेचत हरि मिलें एक पंथ दो काज'।

अखन तक दयाराम काका अप्पन मनक पीड़ाकेँ मनेमे दबने रहैथ, तइसँ अपने अनुमान केलौं जे काका भरिसक अपने दुविधामे पड़ल छैथ तँए किछु मुँह खोलिकऽ नहि बाजि रहल छैथ। पहिल दुविधा ई जे अनका लग जँ अप्पन दुख बजबो करब तँ ओ थोड़े बाँटि लेत, आ दोसर ई जे अप्पन कएल गलती लोक लग मुँह उठाकऽ केना बाजब।

अपने ऐ ताकमे रही जे दयाराम काका अप्पन चिन्ताक सम्बन्धमे किछु बजता तखन ने अप्पन बुइधिक शक्तिसँ किछु जवाब देबैन वा चिन्ताक निराकरणक कोनो रास्ता कहबैन। जँ से नहि बाजि रहल छैथ तखन अनेरे अन्हार घर साँपे-साँप कहनौं तँ काज नहि चलत। तँए ऊपर-झाँपर सँ आन-आन गप करी आ मनकेँ एकाग्र केने ओइठाम रखने रही जे दयाराम काकाकेँ उदासीक की कारण छैन। तही बीच सुमित्रा, माने दयाराम कक्काक पोती, चाह नेने पहुँचल। सुमित्राक हाथसँ चाहक गिलास लैत ओकर चेहरापर नजैर देलौं कि चेहरासँ बुझि पड़ल जे सिर्फ दयारामे काका टा सोगाएल नहि छैथ, परिवारक आनो-आन सोगाएल छैन। ओना, रहीम कवि कहने छैथ जे 'खैर, खून, खाँसी, खुसी, बैर, प्रीति, मदपान। रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान।' मुदा से दयाराम कक्काक संग नहि भऽ रहल छैन। फेर अपने मनमे आशा बान्हि विचार केलौं जे जखन गप-सप्पक क्रम चलत तखन कोनो-ने-कोनो रूपमे सोगक कारण सेहो सोझामे एबे करत। चाह पीब गिलास रखि बजलौं- "बड़ सुन्दर चाह बनल छल।"

दयाराम काका बजला-

"बेसी काल चाह पीना भऽ गेल छेलह तँए बेसी नीक लगलह।"

जहिना फड़ल आमक गाछपर अनठेकानियोँ गोला फेंकलापर गोटे आम टुटिकऽ निच्चाँ खसैए तहिना अनठेकानीए बजलौं-

“काका, समय बड़ दुरकाल भऽ गेल अछि.!”

दयाराम काका हमरा विचारकेँ बिना दोहरौने बजला- “हँ! से तँ भइये गेल अछि, राधेश्याम। अनकर बात की कहबह, हम तँ अपने समयक एहेन कुचक्रमे पड़ि गेल छी जे किछु करैत किछु ने बनैए।”

दयाराम कक्काक विचार सुनि अपना मनमे आश जागल जे आब सभ बात, माने चिन्ताक बात, अपने मुहेँ दयाराम काकाकेँ निकैल जेतैन। अही आशासँ बजलौं-

“से की, काका?”

दयाराम काका बजला-

“राधेश्याम, बाबाकेँ मुइना बीस बर्खसँ ऊपरे भऽ गेल हेतैन मुदा हुनकर विचार अखनो मनमे ओहिना जीवित अछि जेना ओ कहलैन।”

दयाराम काकाकेँ विचारक पाहिपर आनै दुआरे बजलौं-

“पहिलुका लोकक विचारक परतर आजुक लोक करत।”

हमर विचार सुनि दयाराम काकाकेँ जेना शतरंजक गोटी जकाँ सह भेटलैन तहिना बजला-

“राधेश्याम, सदिकाल बाबा कहैत रहै छला जे अपना सन लोकक लेल भीतघर धनिक लोकक कोठोसँ बेसी नीक होइए।”

विचारकेँ आरो स्पष्ट करै दुआरे बिच्चेमे बजलौं-

“से केना, काका?”

दयाराम काका बजला- “बाबा कहै छला जे जँ माइटिक भीतघर रहए, मुदा ओइमे मूस सभपर नजैर राखी जे केतौ बिल ने करए आ नार वा खढ़सँ मोटगरसँ ऊपर छाड़ि दिऐ तँ कोठो घरसँ आरामदेह होइए। जहिना जाड़क मासमे जाड़सँ रक्षा करैए तहिना गरमी मासमे गरमी आ बरसातक मासमे बरखासँ सेहो रक्षा करिते अछि।”

दयाराम कक्काक विचारक प्रवाहमे प्रवाहित होइत अपने बजलौं- “हँ, से तँ होइते अछि।”

ओना, अपना जनैत दयाराम कक्काक विचारमे सह दैत बाजल छेलौं मुदा से दयाराम काकाकेँ नीक नहि लगलैन तँए मनमे खुशीक विपरीत तकलीफ भेलैन। बजला-

“राधेश्याम, कखनोकाल असगरेमे, माने एकाग्र भऽ जखन सोचै-विचारै छी तखन बुझि पड़ैए जे बाबाक अमलदारीक समयमे हुनकर विचार जेतेक उपयोगी, नीक रहल होनि, मुदा आजुक परिवेशमे ओ अनुपयोगी भइये गेल अछि।”

बजलौं- “से केना, काका?”

दयाराम काका बजला- “बहुत दिन पहिलुका गप नहि कहै छिअ, ‘ऐ बेर जे अपना संग बीतल’ अछि सएह कहै छिअ।”

दयाराम कक्काक मुहसँ निकलल, ‘ऐबेर अपना संग जे बीतल’ सुनि बिना किछु बजने अपने दयाराम कक्काक मुँह दिस देखए लगलौं। मुहसँ निकलैसँ पहिने दयाराम कक्काक मन जेना विषादसँ भरए लगलैन, तहिना मुँहक रंग माने चेहराक रंग, हुअ लगलैन। हुनकर बदलैत चेहराक रंग देखि अपनो मन मानए लगल जे भरिसक दयाराम काका कोनो गरुगर स्थितिमे फँसि गेल छैथ। मुदा अपना किछु बजैक साहस मनमे हेबे ने करए जे किछु बजितौं। तँए, मुँहकेँ बन्ने केने रहलौं। हमरा चुप देखि आकि अपना मनक उद्वेग तेज भेने दयाराम काका बजला- “राधेश्याम, कालक फेरमे पड़ि गेल छी।”

‘काल’ सुनि एकाएक जेना मनमे धमकल जे जहिना काल कपारपर सवार भेला पछाइत कृष्ण अर्जुनकेँ गीताक उपदेश देलैन तहिना भरिसक दयाराम कक्काक मनमे सवार भऽ गेलैन अछि।

बजलौं-

“से केना, काका?”

दयाराम काका बजला- “राधेश्याम, अपना तीनियेँ टा घर अछि से तँ

देखिते छह। अँगनाक दूटा घरमे भानस-भातसँ लऽ कऽ सुतै-बैसै आ अन्न-पानि रखै छी। एक भाग, माने अँगनाक एक भागमे टाट लगौने छी आ एक भागमे मालो आ दरबज्जोक एकटा घर बनौने छी।"

बजलौं- "से तँ देखिते छी।"

दयाराम काका बजला- "दरबज्जा आ मालक घर एकमे देखि केते गोरे दुसबो करै छैथ जे जइ घरमे अपने सुतै-बैसै छी तइमे गाए-बड़द किए बान्है छी, मुदा की करब।"

सह दैत बजलौं-

"लोककेँ बजैमे किछु लगै छै, किछु-सँ-किछु अनेरो बाजि दइए। बजैसँ पहिने विचारि लेबा चाही जे जिनका कहै छिऐ हुनका घराड़ी केते छैन। घराड़ी देखने बिना किछु बाजब उचित नइ ने भेल।"

दयाराम काका बजला- "अनका जे हौ, मुदा अपना तँ से बात नहि अछि। अपना तँ घर बनबै-जोकर घराड़ी अछिए, मुदा छोट परिवार अछि तँए जरूरते भरि बनौने छी।"

दयाराम कक्काक विचार सुनि मनमे भेल जे अनेरे फाजिल बात बजा गेल। मुदा धनुषसँ छुटल वाण आ मुहसँ निकलल बोल पुन: थोड़े वापस भऽ सकैए। तँए विचारकेँ बदलैत बजलौं-

"काका, समाजमे सभरंगक लोक होइए। केकरो घर बनबैक उपाय रहै छै तँ घराड़ी नइ रहै छै आ केकरो घराड़ी रहै छै तँ घर बनबैक उपाय नइ रहै छइ। मुदा मूल प्रश्न अछि जे परिवारक हिसाबसँ लोककेँ घरो होइ आ घराड़ियो होइ।"

विचारकेँ आगू बढ़बैत दयाराम काका बजला- "राधेश्याम, आन गामक तँ सभ बात नहि जनै छी मुदा अपना गामक बात तँ जनिते छी।"

दयाराम कक्काक विचारमे सह दैत बजलौं-

"किए ने जानब। जखन गाममे छी, तखन गामक बात नहि जानी सेहो उचित नइ ने हएत।"

दयाराम काका बजला- "आन गाममे जे हौ, मुदा अपना गामक की स्थिति

अछि से कि तोरोसँ छिपल थोड़े अछि।”

दयाराम काका की बाजए चाहै छैथ से अपने नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, तँए बुझै दुआरे बजलौं-

“काका, हम तँ कौल्हुका छी तँए गामक सभ बात नइ बुझै छी मुदा अहाँ तँ से नहि छी। कहुना-कहुना साठि बर्खसँ ऊपरे उमेरक छी, तँए जेते बात गामक अहाँ बुझै छी तेते हम थोड़े बुझै छी।”

दयाराम काका बजला-

“राधेश्याम, चौबगली गामक लोकसँ भिन्न अपना गामक लोक अछि। आन गाममे बेसी लोक पढ़लो-लिखल अछि आ सुभ्यस्तो अछि, माने खेत-पथारबला सेहो अछि। तँए अपना गामसँ बेसी कोठो-सोफा अछिए। मुदा अपना गाममे से नहि अछि।”

दयाराम कक्काक किछु बात बुझबो केलौं आ किछु बात नहियोँ बुझलौं, तँए बजलौं- “से की, काका?”

दयाराम काका बजला-

“अपना गाममे कम पढ़ल-लिखल रहने गोटि-पङ्गरा लोअर प्राइमरीसँ मिडिल स्कूल तकक शिक्षक आ ऑफिसक किरानी अछि, जखन कि आन गाममे हाकिम-हुक्कामसँ लऽ कऽ डॉक्टर-वकील-प्रोफेसर सभ छैथ तँए आमदनी बेसी रहने घरो-दुआर नीक बनौने छैथ। अपना गाममे ओहन चारिअना लोक अछि जे पजेबाक घर बनौने अछि। बाँकी लोक ओहने अछि जे कियो निच्चाँ काँच ईंटा वा भीतक देबालपर चदरा वा खपड़ा देने अछि आ किछु एहेन लोक सेहो अछिए जे अखनो खढ़े-नारसँ घर छाड़ने अछि। अपनो तेहीमे छी।”

बजलौं- “काका, जएह अपना रहए तेहीसँ संतोष करक चाही।”

हीय खोलि दयाराम काका बजला- “राधेश्याम, अपना बुझि पड़ैए जे अपने पछुआ गेल छी।”

बजलौं- “से केना, काका?”

दयाराम काका बजला- “पौरुकाँ एकोटा घर छाड़निहार दुआरे नइ

छड़ाएल। आठम दिन जे जेठुआ बरखा भेल, तइमे एकोटा घर चुबैसँ अबंच नइ रहल। गाममे ने खढ़-नार अँटियेनिहार अछि आ ने छाड़निहार। पुरना जे छल ओ मरिये गेल, नबका लोक काजे छोड़ि देलक। ईंटाक घर तँ बनबैए मुदा खढ़क घर छाड़निहारे ने अछि। तँए, बुझि पड़ैए जे अपने पछुआ गेल छी।” ❑

बाबी

दुर्गापूजा शुरू होइसँ एक दिन पूर्व घर छछारै आ दियारी बनबैले सिरखरियावाली बुढ़िया-गाछीक मटि-खोभसँ मनही छिट्टामे चिक्कनि माटि नेने अँगना अबै छेली। रस्ते कातक चौमासक टाटपर बाबी करैला तोड़ैत रहैथ कि सिरखरियावालीक नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते सिरखरियावाली एक हाथे छिट्टा पकड़ने आ दोसर हाथे चाइनिक घाम आँगुरसँ काछि कऽ फेकैत बाबीसँ पुछलक- "बाबी, छठिकेँ केते दिन छइ?"

बाबीक नजैर जुआएल आ सड़ल करैलापर छेलैन। किएक तँ अजोह करैला तीतो बेसी आ सुअदगरो कम होइए। तेतबे नहि, पकैयोक डर रहै छइ। सड़ल करैला सभकेँ ऐ दुआरे लत्तीकेँ बिहिया-बिहिया ताकैथ जे जँ ओकरा तोड़ि नै लेती तँ दोसरोकेँ सड़ौत।

सिरखरियावालीक आवाज सुनि बाबी रस्ता दिस देखि पुनः करैला ताकए लगली। किएक तँ माथपर भारी देखि गप-सप्प करब उचित नइ बुझलैन। एक तँ भरल छिट्टा माटि आ तैपर खुरपी गाड़ल देखलखिन। मने-मन सोचए लगली- छठिक अखन मासोसँ बेसीए हेतै तहन एहेन कोन हलतलबी-बेगरता भऽ गेलइ। जँ महिना- परिव-तिथिकेँ जोड़ि कऽ कहए लगब तँ अनेरे देरी हेतइ। जेते देरी हेतै तेते भारियो लगतै। तँए बाबी आँखि उठा कऽ देखि बिनु किछु कहनहि नजैर निच्चाँ कऽ लेलैन। मुदा सिरखरियोवाली रगड़ी। मनमे होइ जे अखने जँ नै बुझि लेब तँ फेर बिसैर जाएब। जँ बिसैर जाएब तँ किछु-ने-किछु छुटिए जाएत। संजोगसँ मटिखोभमे मोन पड़ल जे पौरुका दशमीए-मेलामे तीनटा कोनियाँ एकटा सूप आ एकटा छिट्टा कीनि नेने रही। जइसँ छठि पाबैन केलौं। बाबीक नजैर निच्चाँ केने देखि सिरखरियावाली दोहरा कऽ टोकलकैन- "गरीब-दुखियाक बात आब थोड़े बाबी सुनै छथिन जे सुनतीहिन।"

सिरखरियावालीक बात बाबीक करेजकेँ छुबि देलकैन। मुदा क्रोध नइ

भेलैन सिनेह उमैड़ गेलैन। एकाएक बाबी अपन बोली बदैल चौअन्नियाँ मुस्की दैत बजली- “कनियाँ, मनमे आएल जे चारिटा करैला तोरो तरकारी-ले दिअ। तँए हाँइ-हाँइ करैला ताकए लगलौं। कनीए ठाढ़े रहह?”

सिरखरियावाली- “जे पुछलयैन से कहबे ने करै छैथ आ करैला दऽ कऽ फुसलबए चाहै छैथ।”

विचित्र अन्तर्द्वन्द बाबीक मनकेँ घोर-मट्ठा करए लगलैन। एक दिस माथपर भारी देखथिन आ दोसर दिस आइसँ छठि धरि जोड़ैक समय। तहूसँ उकड़ू बुझि पड़ैन जे सोझ मासक सवाल नै अछि। दू मास बीचक बात छी। सेहो तेहेन मास जइमे लुंगीयाँ मिरचाइक घौंदा जकाँ पावनिक घौंदा अछि! जाधैर सभ सोझरा कऽ नै कहबै ताधैर अपनो मन नै मानत आ ओहो नै बुझत।

..ताल-मेल बैसबैत बाबी बजली-

“कनियाँ, अखन जाउ। हमहूँ तीमनक ओरियानमे लगल छी, अहूँक माथपर भारी अछि।”

सिरखरियावालीक मनमे होइ जे छठि सन पाबैन छी, जँ हिसाबसँ ओरियान नै करैत जाएब तँ कएटा चीज छुटिए जाएत। आन पाबैन जकाँ तँ छठि हल्लुक नइ अछि। बड़ ओरियान, बड़ खर्च छै ऐमे। बजली- “दशमी मेलामे जे कोनियाँ, सूप, छिट्टा कीनि नेने रहै छी तँ बुझै छिऐ जे एते काज अगुआएल रहैए।”

बाबी- “कनियाँ, एकटा काज करू। छिट्टाकेँ निच्चाँमे रखि दियौ अहूँक देह हल्लुक भऽ जाएत आ हमरो हिसाब जोड़ि-जोड़ि बुझबैमे नीक हएत।”

“बाबी, भारी उठबैत-उठबैत तँ माथ सुन्न भऽ गेल अछि। ई माटि केते भारी अछि।”

“कनियाँ, बहुत हिसाब जोड़ि कऽ बुझबए पड़त।”

“ओते अखन नै कहौथु। खाली छठिए-टा कहि दौथ। गोटे दिन निचेनसँ आबि कऽ सभ बुझि लेब।”

आँगुरपर बाबी हिसाबो जोड़ैथ आ ठोर पटपटा कऽ बजबो करैथ- “आइ

आसिनक अमावसिये छी। आइए भगवतीकेँ हकारो पड़तैन आ बघा-सँपहाक निमिते खैयोले देल जेतइ। काल्हि कलश-स्थापनसँ दुर्गा पूजा शुरू हएत जे नअ-दस दिन धरि चलत। दशमी तिथिकेँ यात्रा हएत। तेकर पाँचे दिनक पछाइत कोजगरा हएत। कोजगराक परातसँ कातिक चढ़त। कातिक अमावसियाकेँ दियाबाती.., लक्ष्मी पूजा.., कालीपूजा हएत। परात भेने गोधन पूजा, दोसर दिन भरदुतिया आ चित्रगुप्तो पूजा हएत। भरदुतियाक परातसँ छठिक विधि शुरू भऽ जाएत। पहिल दिन माछ-मड़ुआ बाड़ल जाएत... दोसर दिन नहा कऽ खाएल जाएत... तेसर दिन खरना... चारिम दिन छठिक सौंझुका अर्घ आ पाँचम दिन भिनसुरका अर्घ भेलापर उसैर जाएत...।"

आँगुरपर गनैत-गनैत बाबी बजली- "कनियाँ, सबा मास करीब छठिक अछि।"

"सबा मास केते भेलै बाबी?"

"दू बीसमे तीन दिन कम।"

"हम तँ सभ बेर दशमीए मेलामे कोनियाँ, सूप, छिट्टा कीनि लइ छी। तेकरा कए दिन छइ?"

"सात पूजाकेँ भगवतीकेँ डिम्हा पड़लापर मेला शुरू भऽ जाइए। जेकरा आठ दिन छइ। मुदा एकटा बात पुछै छिअ जे एते अगता किए किनै छह? ताबे ऐ पाइसँ दोसर-तेसर काज करबह से नहि। जहन पाबैन लगिचा जेतै तहन कीनि लेबह?"

"पहिने कीनलासँ दू-पाइ सस्तो होइए आ एकटा चीजोसँ निचेन भऽ जाइ छी। एक बेर अहिना नै कीनलौं तँ भेबे ने कएल। आब की करितौं तहन पुरने कोनियोँ-सूपो आ छिट्टोकेँ चिक्कनिसँ धोइ देलिऐ आ ओहीसँ पाबैन कऽ लेलौं।"

सिरखरियावालीक बात सुनि बाबीक नजैर बेवहार दिस बढ़लैन। मनेमे उठलैन- छठि पावनिक महात्म्य बहुत बेसी अछि। खास कऽ किसान लेल। एक दिस पूर्वजक मिठाइ-पकवान तँ दोसर दिस डोमक बनौल कोनियाँ, सूप, छिट्टा। तेसर दिस कुम्हारक बनौल कूड़, ढकना, सरबा इत्यादि। तँ चारिम दिस अपन

उपजौल फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक संग मसल्लोक वस्तु, तैसंग आरो बहुतो अछि। तैपर सँ डुमैत सुरुजक पहिल अर्घ...।

मने-मन विचारैत बाबी चुप्पे रहली। मनमे भेलैन जे ई तँ ओइ इलाकाक छी जइ इलाकाक स्त्रीगण रौद-बसातकेँ गुदानिते ने अछि, खेतक काज करैमे भूते। भगवानोकेँ हारि मनबैवाली। ..बाबीक मनमे होइन जे चुप भऽ गेलौं तँ वेचारी चलि जाएत।

मुदा ले-बलैया! ई तँ काग-भुसुण्डी जकाँ डुमि गेल। भानसकेँ अबेर होइत जाइत देखि बाबीकेँ अकच्छ लगैन। जखन कि हेजाक मरीज जकाँ, सिरखरियावालीकेँ पियास बढ़ले जाइत। अचता-पचता कऽ बाबी पुछलखिन-

"कनियाँ, बेटी सबहक हालत की छह?"

बेटीक नाओं सुनिते सिरखरियावाली किछु मोन पाड़ि बाजल- "बाबी, हिनकासँ लाथ कोन। तीनूक हालत हमरासँ नीक छइ। भगवान गरदेन-कट्टी केलैन तँए ने, ने तँ की हमहीं अहिना रहितौं।"

बाबी- "भगवान केकरो अधला थोड़े करै छथिन जे तोरा केलखुन?"

मुड़ी डोलबैत सिरखरियावाली- "तँ केलैन नहि! हमरा पँच-पँच बरिसपर बच्चा देलैन। पाँच बरिसपर देलैन से नीके केलैन जे जहन एकटा छँटि जाइ छल तहन दोसर होइ छल। मुदा अगता तीनू बेटीए जे देलैन से गरदेन-कट्टी नै केलैन। जँ अगता तीनू बेटा रहैत, नहि तँ मेलो-पाँच करि कऽ तँ.., अखन ई भारी काज अपने करितौं की पुतोहु करितए। पचता बेटा भेल, जे अखन लिधुरिये अछि।

बाबी- "जेठकी बेटीक सासुर केतए छह?"

"उत्तरभर। खुटौना टीशन लग। वेचारीकेँ खेत तँ कम्मे छै मुदा सभ तूर मेहनतिया अछि। एक जोड़ा बरद रखने अछि। दूटा लगहैर महींस खुट्टापर छै आ तीनटा पोंसियोँ लगौने अछि। अनो-पानि तेते उपजा लइए जे साल-माल लगिए जाइ छइ।"

बाबी- "नाति-नातिन छह किने?

"हँ, तीनटा अछि। तीनू लिधुरिये अछि। तंग-तंग बेटी रहैए। तीनूक नेकरम

करैत-करैत तबाह रहैए। तैपर सँ घर-गिरहस्तीक काज।”

“दोसर बेटीक सासुर केतए छह?”

“पूभर। कोसी कात।”

“कोसी कात किए केलह?”

“बाबी, जानि कऽ कहाँ केलिऐ। गाम तँ नीके रहइ मुदा केतए-सँ-ने-केतएसँ कोसी चलि एलइ। कोसियो एलै तँ अन-पानिक कोनो दुख नै होइ छइ। मुदा अपना सभ जकाँ चिष्टा नहि। गाममे महींस बेसी छै, जइसँ रस्ता-पेरा हैंक-हैंक भेल रहै छइ।

बाबी- “छोटकी?”

“पच्छिम भर, पाही। ई हम्मर रानी बेटी छी। जेते दिन ऐठाम रहैए रंग-बिरंगक तीमन-तरकारी खुअबैए। भानस करैक एहेन लूरि दुनूमे केकरो नइ छइ। जहिना भानस-भात करैमे, तहिना बोली वाणी। गीतो-नाद जे गबैए से होइत रहतैन जे सुनिते रही, तहिना चिष्टो-चर्या आ ओढ़बो-पहिरब।”

बाबी-

“बड़ बेर उठलै। आब तहूँ जा।”

“आइ हमरा गंजन लिखल अछि। विचारने छेलौं जे माटि आनि कऽ धान काटि आनब। गरमा धान नहियेँ भेल। काल्हि फेर घरे-अँगना नीपैमे लागि जाएब।”

गामक सभ बाबीकेँ मेह बुझैत। छैथो। जँ केकरो मन खराब वा कोनो आफत-असमानी होइत तँ बाबी सभसँ पहिने आबि सेवा-टहलमे लागि जाइत। तहिना जँ कहियो बाबीक मन खराब होइत तँ गामक लोक जी-जानसँ लगि जाइत। किएक तँ सबहक मनमे ई अंदेशा बनल जे बाबीक मुइने गामक बहुत विधि-बेवहार समाप्त भऽ जाएत। ओना, बाबी पढ़ल-लिखल नहि, चिट्ठियो-पुरजी ने पढ़ल होइ छैन। जरूरतो नहि। किएक तँ सालो भरिक पाबैन आ ओकर विधि, संग-संग मांगलिक काज उपनयन, बिआह इत्यादिक विधि कण्ठस्थ छैन। कोन गीत कोन अवसरपर गौल जाएत, सभ जीपर राखल छैन। तहिना पूजाक

आराधनासँ लऽ कऽ आरती धरि...।

सभ किछु रहितो बाबीक मनमे एकटा कचोट समरथाइयेसँ लगल रहि गेलैन। ओ ई जे एकटा बेटा भेला पछाइत दोसर सन्तान नइ भेलैन। अपन इच्छा रहैन जे एकटा बेटा, एकटा बेटी हुअए। मुदा बेटा तँ भेलैन मुदा बेटी नहि। जे कचोट सभकेँ कहबो करथिन। कहथिन जे सृष्टिक विकास-ले पुरुख, नारी दुनूक जरूरत अछि। नहि तँ विकास रूकि जाएत। ने एकछाहा पुरुखेसँ काज चलत आ ने एकछाहा नारीएसँ।

भरदुतियाक परात बाबी माछ-मड़ुआ बाड़लैन। काल्हि नहा कऽ खेती। परसू खरना करती। खरना पाबैन-ले बाबी सतरिया धानक अरबा चाउर सभ साल रखै छैथ। किएक तँ टोलक खरनासँ लऽ कऽ घाटपर हाथ उठबै धरिक काज बाबियेक जिम्मा। मुदा खरना दिन गज-पट भऽ जाइ छैन। किएक तँ कियो महिक्का धानक अरबा चाउर आ गुड़ दइ छैन तँ कियो मोटका धानक अरबा चाउर आ गुड़। अरबा तँ अरबे छी। मोटका-महिक्काक भेद नहि। तँए बाबीकेँ खीर रन्हैमे पहपैट भऽ जाइ छैन। फुटा-फुटा कऽ केना करती। तँए सबहक अरबा चाउरकेँ खाइले रखि लइ छैथ आ अपन सतरिया चाउरसँ खीर रान्हि खरना करै छैथ। खाली खरने नै करै छैथ, मनमे ईहो रहै छैन जे परिवारक हिसाबसँ एते खीर घुमा दिऐ जे घरमे चुल्हि नै चढ़इ।

आइ खष्ठी छी, आइए सौंझका अर्घ हएत। तरगरे बाबी सुति उठि कऽ पावनिक ओरियानमे लगि गेली। बहुत चीज भेबो कएल आ बहुत बाँकियो अछि। मुदा भरि दिन तँ ओरियबैक समय अछि। तैबीच डेढ़ियापर सँ 'बाबी, बाबी' सुनलैन। मुदा टाटक अढ़ रहने बोली नै चीन्हि सकली। मनमे भेलैन जे आइ पाबैन छी तँए कियो किछु पुछैले आएल हएत। ओसारेपर सँ कहलखिन- "के छी। अँगने आउ।"

पथियामे दूटा नारियल, पान छीमी केरा, दूटा टाभ नेबो, दूटा दारीम, दूटा ओल, दूटा अड़ुआ, दूटा टौकुना, दूटा सजमैन, गाछ लागल एक मुट्ठी हरदी, एक मुट्ठी आदी नेने रहमतक माए आँगन पहुँच बाबीक आगूमे रखैत कहलकैन-

"बाबी, अपनो डाली-ले आ हिनको-ले नेने एलिऐन हेन।"

पथियासँ सभ वस्तु निकालि ओसारपर रखि निंगहारि-निंगहारि बाबी देखए लगली।

बच्चेमे रहमत बिमार पड़ल, ओकरे कबुला माए केने रहथिन। तँए पान सालसँ ओहो छठि पाबैन करै छैथ। जे बात बाबियोकेँ बुझल। ओना, बाबी अपने आँगनमे भुसबा, ठकुआ बनबैथ। मुदा तेकर दाम रहमतक माए दऽ दन्हि।

..पथिया लऽ रहमतक माए विदा हुअ लगली की बाबी कहलखिन- “कनियाँ, कनी ठाढ़ रहू। रौतुका खरनाक नबेद नेने जाउ।”

घरसँ केरा पातपर खीर आनि रहमतक माएकेँ दऽ देलखिन। हाथमे नबेद अबिते रहमतक माइक मन खुशीसँ नाचि उठल। बेटाकेँ निरोग जिनगी जीबैक आशा सेहो भऽ गेलैन। मने-मन दिनकरकेँ गोड़ लागि विदा भेल। अँगनासँ निकैलिते छेली कि एक पाँज कुसियारक टोनी नेने परीछन पहुँच गेल। एक टोनी बाबीकेँ आ एक टोनी रहमतक माएकेँ दैत सुरसुराएले आगू बढ़ि गेल। किएक तँ अँगनेमे सभ ले टोनी बना नेने छल। बाबीकेँ कुसियारक टोनी दैत रहमतक माए कहलकैन- “हमरा आइ हाट छी बाबी, तँए कनी देरीसँ घाटपर आएब।”

बाबी- “हम तँ छीहे कनियाँ, तइले तोरा किए चिन्ता होइ छह। दिनकर-दीनानाथ केकरो अधला करै छथिन जे तोरा करथुन? अपना भरि निअम-निष्ठा रखैक चाही।”

रहमतक माए विदा भेली।

बाबी फुटा-फुटा सभ वस्तु रखए लगली। तखने दछिनबरिया अँगनामे हल्ला सुनलखिन। ओसारपर सँ उठि डेढ़ियापर ऐली की सुनलखिन जे खुशियाक बेटा केराक घौरसँ एकटा छीमी तोड़ि कऽ खा गेलै तइले माए चारि-पाँच खोरना मरलकै। बेटाकेँ कनैत देखि खुशिया घरवालीपर बिगड़ए लगल। तेकरे हल्ला छेलइ। अपने डेढ़ियापर सँ बाबी कहलखिन- “पावनिक दिन छिऐ तहन तूँ सभ भोरे-भोर हल्ला करै छह। दुधमुहाँ बच्चा जँ एक छीमी केरा तोड़ि कऽ खाइए गेलै तइले एते हल्ला किए करै छह।”

बाबीक बात सुनि दुनू बेकती खुशिया तँ चुप भेल मुदा छौड़ा हुचैक-हुचैक कनिते रहल। तही बीच सोनरेवाली आबि बाबीकेँ कहलकैन- “बाबी, नीक की

अधला तँ हिनके कहबैन किने। देखथुन जे पाइ दुआरे ने छिट्टा भेल आ ने कोनियाँ।”

सोनरेवालीक बात सुनि बाबी गुम्म भऽ गेली। कनी काल गुम्म रहि बजली-

“नइ पान तँ पानक डण्टियोसँ काज चलैए। जेकरा छै ओ सोना-चानीक कोनियाँमे हाथ उठबैए आ जेकरा नइ छै ओ तँ बाँसोक सुपतीसँ काज चलबैए। तइले मन किए ओछ केने छह। सभकेँ की सभ किछु होइते छइ। जेकरा जेते विभव होइए ओ ओते लऽ कऽ पाबैन करैए, तँए की दिनकर केकरो कुभेला करै छथिन।”

तैबीच दीपवाली पाँच बर्खक बेटाकेँ हाथ पकड़ने घिसियबैत पहुँच कहलकैन-

“बाबी, देखथुन जे ई छौड़ा तेहेन अगिलह अछि जे हाथीकेँ पटैक देलकै। ई तँ गुण भेल जे एक्केटा टाँग टुटलै, नहि तँ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ जाइत।”

मुस्कियाइत बाबी कहलखिन-

“देखहक कनियाँ, ई सभ देखाबटी छिऐ। मनुक्खक मनमे श्रद्धा हेबा चाही। अइले बच्चाकेँ किए दमसबै छहक। छोड़ि दहक।”

सुरुज उगले सभ घाटपर पहुँच डाली पसारए लगली। नवयुवती सभ गीत गाबए लगली। हाथ उठौनिहारि पानिमे दुनू हाथ जोड़ि ठाढ़ भेली। एक्के तालमे ढोलिया ढोल बजबए लगल। पोखरिक चारू महार दीपसँ जगमगा गेल। परदेशियो सभ छठि पाबैन करए गाम आएल। एक गोरेकेँ नाच कबुला रहै ओ नाच करबए लगल। ताबे दूटा छौड़ा दारू पीब फटाका फोड़ए लगलै। दुनू बेमत। एक गोरेक फटाकामे कम आवाज भेलै की दोसर पिहकारी मारि देलक। अपन डुमैत प्रतिष्ठाकेँ जाइत देखि ओ पिहकारी देनिहारक कालर पकड़लक। दुनू अपन-अपन परदेशिया भाषामे गारि-गरौवैल शुरू केलक। गारि-गरौवैलसँ मारि फँसि गेल। दुनू एक-दोसरकेँ खूब मारलक।

दोसर दिन भिनसुरका अर्घ। खूब अन्हरगरे सभ घाटपर पहुँचल। हाथ उठौनिहारि पानिमे पैसली। चौमुखी दीपसँ सौंसे प्रकाश पसैर गेल। सूर्योदय होइते

दीपक ज्योति मलिन हुअ लगल। हाथ उठए लगल।

बच्चा-बुच्चीक संग रहमतक माए पोखरिक महारपर आँचर नेने दुनू हाथ जोड़ि बाबीपर आँखि गड़ौने। तखने मुसबा गिलासमे दूध नेने पहुँचल। किनछैरमे पैस एक ठोप, दू ठोप दूध सभ कोनियाँमे छिटए लगल।

हाथ उठा बाबी पानिसँ निकैल, साड़ी बदैल, छठिक कथा कहए लगलखिन। कथा कहि औंकरी छीटि पावनिक विसर्जन केलैन।

अखन धरि जे ढोलिया एक तालमे ढोल बजबै छल ओ समदाउनिक ताल धेलक। नटुओ समदाउन गाबए लगल।

सभ अपन-अपन कोनियाँ समेट छिट्टामे रखि, ढोलियाकेँ एक-एकटा ठकुआ आ एक-एक छीमी केरा दऽ दऽ विदा भेल। ❑

केकरा-ले केलौं

सात-आठ दिनसँ संगी काकासँ भेँट नहि भेने अप्पन मन उबिया रहल अछि, मुदा जमीनक सर्वे-काजक ओझरीमे तेना पड़ि गेल छी जे भेँट करैक गरे ने लागि रहल अछि। अप्पन घर दछिनवारि टोलमे अछि आ संगी कक्काक घर उतरवारि टोलमे छैन। अप्पन गामोक बुनाबट आन गामसँ बिलकुले भिन्न अछि। आन गाममे जेना बहुजतिया टोल बेसी अछि तेना अपना गाममे नहि अछि। बहुजतिया टोलक माने भेल जे एक्के टोलमे केतेको रंगक जाइतिक बास, से अपना गाममे नहि अछि। अपना गाममे सभ जाइतिक टोल अलग-अलग अछि।

दू माससँ गाममे जमीनक सर्वेक काज चलि रहल अछि। जमीनक सर्वेमे गामक लोक तेना ओझरा गेल छैथ जे कियो कर्मचारीक पाछू, तँ कियो अमीनक पाछू भरि-भरि दिन लागल रहै छैथ। ओना, अप्पन स्पष्ट विचार अछि जे अनका जकाँ बेसी खेत-पथारबला तँ छी नहि, तँए जखन सर्वे ऑफिसमे काज पतरा जाएत तखन एक दिन निचेनमे जाएब आ सभ काज सम्हाइर लेब। मुदा जखन गाममे रहै छी तखन अपने मनक विचार थोड़े चलत। किछु-ने-किछु पुछैले कियो-ने-कियो हरिदम अबिते रहै छैथ। कियो कहै छैथ जे जमीनक खतिआन नइ अछि, तँ कियो कहै छैथ जे दस्तावेज नहि अछि, कियो कहै छैथ जे बहुत दिनसँ जमीनक रसीद नहि कटेने छी, तँ कियो कहै छैथ बाढ़िमे घर खसल तहीमे सभ कागज सड़ि-गलि गेल। ओना, अपनो दशा सएह अछि, 1987 इस्वीक बाढ़िमे जे घर खसल तहीमे जमीनोक कागज सभ सड़ि-गलिकऽ नष्ट भऽ गेल।

पुन: संगी काका मोन पड़िते मनमे उठए लगल जे, जे संगी काका प्रतिदिन कम-सँ-कम एकबेर भेँट होइ छला, सभ रंगक गप-सप्प होइ छल, से आइ सात-आठ दिनसँ भेँट नहि भेला अछि। बहुत रंगक गप-सप्प पछुआएल अछि मुदा की करब, सर्वे-काजक धुमसाहीमे तेना फँसि गेल छी जे संगी काकासँ भेँट करैक

गरे ने लागि रहल अछि। दरबज्जापर असगरे बैसल मने-मन यएह विचार तँइ केलौं जे आइ संगी काकासँ भेँट करबे करबैन।

संयोग बनल, तही काल अम्मारूपी गामवाली भौजी रस्ता धेने बाजार जा रहल छेली कि हुनकापर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते बजलौं- “भौजी, कनी सुनि लिअ।”

जहिना बजलौं तहिना भौजी लगमे आबि अपने फुरने बड़बड़ाइत बजली-

“बजार जाइ छी, अबेर भऽ गेल। तेना ने खेती-पथारीक काजमे ओझरा गेल छी जे एको क्षण छुट्टी नइ होइए.!”

बजलौं- “जखन बजार विदा भऽ गेल छी तखन जेबे करब। काज तँ अपनो बजारक अछि, मुदा एकोटा पाइये हाथमे नइ अछि, तँए पहिने पाइयक जोगार करब, पछाइत काल्हि-परसू तक बजार जाएब।”

असथिर होइत भौजी बजली- “किए शोर पाड़लौं?”

कहलयैन- “भौजी, सात-आठ दिनसँ संगी काका भेँट नहि भेला अछि, सएह हुनकर हाल-चाल बुझैले शोर पाड़लौं।”

अम्मारूपी गामवाली भौजी बजली-

“ओना, अपने आँखिये नइ देखलयैन हेन, मुदा सुनलौं हेन जे बड़ जोर अस्सक छैथ।”

संगी काका अस्सक छैथ! ई सुनिते हुनकासँ भेँट करैक जिज्ञासा आरो बढ़ि गेल। बजलौं- “सएह बुझैक छल। अहूँकेँ बजार जाइमे अबेर हएत, जाउ।”

भौजी बाजार दिस बढ़ली आ अपने मने-मन विचारि लेलौं जे कोनो कि आन गाम जेबाक अछि जे नियार-भार करब, अखने जा कऽ संगी काकासँ भेँट करबैन।

जलखइ केनहि रही। उठिकऽ विदा भेलौं। रस्तामे केतेको रंगक विचार मनमे उठैत रहए मुदा तइ सभकेँ मनसँ हटबैत संगी कक्काक दरबज्जापर पहुँचलौं। दरबज्जेक चौकीपर संगी काका बैसल रहैथ। हुनका देखिते अपना मनमे भेल जे अम्मारूपी गामवाली भौजीक विचार बाजी, मुदा लगले मन बदैल

गेल। बदैल ई गेल जे जखन ऐठाम आबिये गेलौं आ अपने सोझहेमे छैथ, तखन भौजीक विचार अनेरे किए बाजब। बजलौं-

“काका, गोड़ लगै छी.! तेना सर्वे काजमे ओझरा गेल छी जे खेलहो अन्न नहि पचैए। भरि-भरि दिन ओही पाछू बेहाल रहै छी।”

जहिना अपने बजलौं तहिना संगी काका सेहो बजला-

“रूपलाल, जोरू जमीन जोरकेँ, नहि तँ केकरो औरकेँ।”

संगी कक्काक विचार सुनि हँसियो लागल आ छगुन्तो भेल जे जखन जोरेसँ जमीनक अधिकार होइए तखन अनेरे लोक किए भरि-भरि दिन अमीन, कर्मचारी आ सर्वे ऑफिसक चक्करमे पड़ल अछि? मुदा बजलौं किछु नहि। बजलौं एतबे-

“काका, सात-आठ दिनसँ भेँट नहि भेल छेलौं तँए भेँट करैले मन उबियाइ छल।”

जहिना अपने बजलौं तहिना संगी काका सेहो बजला-

“रूपलाल, हमरा होइ छल जे भरिसक तूँ बिमार-तिमार पड़ि गेलह, तँए एम्हर, ऐ टोल दिस नहि अबै छह। शरीरसँ ठीक छह किने?”

ओना, संगी काकासँ गपो-सप्प करैत रही आ आँखि दाबि हियासियो रहल रही जे भौजी जे बाजल छेली जे काका बिमार छैथ? मुदा मनमे ईहो हुअए जे केना आगू भऽ कऽ पुछबैन जे काका पता लगल जे अहाँ बिमार छी। जँ बिमार हेता तँ अपने ने कहता जे रूपलाल अखन मन खराव रहैए। तही काल सुगिया काकी, माने संगी कक्काक पत्नी, आँगनसँ दरबज्जापर आबि हमर बोली अकानैत बजली-

“बौआ रूप, आब नइ जीब.!”

जहिना सुगिया काकी बजली तहिना अपनो जवाब दैत कहलयैन- “काकी, एना अशुभ बात किए बजै छी, शुभ बात बजने शुभ होइए आ अशुभ बात बजने, माने मुहसँ अशुभ बात निकालने अशुभ होइए।”

अप्पन विचारकेँ छीनैत बिच्चेमे संगी काका बजला- “रूपलाल, तोहूँ पुरने

लोक जकाँ बजबो करै छह आ बुझबो करै छहक.!”

अपना-दे पुरान लोक सुनिते अकचकाइत बजलौं- “से की काका?”

संगी काका बजला- “पुरना लोक सभ, माने पहिलुका लोक सभ, बुझबो करै छला आ बजितो छला जे मुहसँ अधला विचार निकालने अधला होइए आ नीक विचार निकालने नीक होइए।”

संगी कक्काक विचार सुनि मन भेल किछु बाजी, मुदा बजैक उपक्रम करैत-करैत चुप्पे रहलौं। जे संगी काका बुझि गेला। बुझि गेला जे रूपलाल किछु बाजए चाहि रहल अछि, मुदा बाजि नहि रहल अछि। अप्पन विचारकेँ स्पष्ट करैत संगी काका बजला-

“रूपलाल, सोझे बजने, माने सिर्फ बजने, किछु ने होइए। होइए केने। जे करत आ नहियोँ बाजत, तेकरा सिद्धि भेटबे करत, माने सफलता प्राप्त हेबे करत आ जे करत किछु ने आ बाजत ढाकीक-ढाकी तेकरा की भेटत।”

संगी कक्काक विचार अपना मनमे जँचल तँए मुड़ी डोलबैत समर्थन केलिऐन। विचारकेँ आगू बढ़बैत अम्मारूपी गामवाली भौजी जे कहने छेली तइ विचारकेँ मोड़ैत माने मुँह बनबैत बजलौं-

“काका, अहाँक चेहराक रूप चिन्तित जकाँ बुझि पड़ैए?”

संगी काकाकेँ गामक केकरोपर विश्वास छैन तँ तइसँ बेसी हमरापर छैन्हे, तेकर कारण ईहो अछि जे बेर-बेगरतामे आन चीजसँ भलेँ मदैत करिऐन वा नहि मुदा साढ़े तीन हाथक शरीर लऽ कऽ जरूर तैयार भऽ जाइ छिऐन, तँए मनमे विश्वास राखब सोभाविके छैन।

संगी काका बजला-

“रूपलाल, समय बेठेकान भऽ गेल अछि।”

समय की बेठेकान भऽ गेल अछि.? संगी कक्काक ई विचार बुझबे ने केलौं। बुझबो केना करितौं, राति-दिन तँ ओहिना-क-ओहिना चलि रहल अछि। तखन बेठेकान की भेल? पुछलयैन- “से की काका?”

संगी काका बजला- “रूपलाल, अनकर बात तँ नहि बुझै छी, किएक तँ

केतौ बाप बेटाक संग दुर्बेवहार करैए आ केतौ बेटा बापक संग, मुदा अप्पन जीवनक जे घटित घटना अछि ओ तँ भोगल भेल, तँए अप्पन बात कहै छिअ।”

‘अप्पन बात कहै छिअ’ संगी कक्काक मुहसँ सुनि कान ठाढ़ करैत बजलौं- “की अप्पन बात काका?”

संगी काका बजला- “दूटा बेटा अछि, से तँ देखिते छह।”

बिच्चेमे बजलौं- “हमहीं टा थोड़े देखै छी, दुनियाँ देखैए।”

संगी काका बजला- “दुनू भाँइ दिल्लीमे रहैए, सुनै छी जे कमेबो खूब करैए।”

बजलौं- “से तँ हमहूँ सुनै छी जे दुनू भाँइ अप्पन-अप्पन फ्लैटो बना नेने अछि, चरिचक्किया गाड़ी सेहो रखने अछि आ धिया-पुताकेँ कन्वेन्ट स्कूलमे पढ़ेबो करैए।”

जहिना अपने बजलौं तहिना विचारमे अप्पन विचार जोड़ैत संगी काका बजला- “जेठका बेटाक ससुरकेँ कैंसर भऽ गेल छेलैन, तिनका सोल्होअना खर्च दऽ मुम्बैमे इलाज करौलकैन से तोरा बुझल छह कि नहि?”

अपना तँ बुझल नहि छल, मुदा एते तँ विचारमे अछिए जे जहाँ धरि सम्भव हुअए तहाँ धरि अनको उपकार करिऐ। तहूमे ससुरक इलाज जँ करौलखिन तँ अधले की भेल। बजलौं- “काका, मनुक्ख भऽ कऽ जँ मनुक्खक उपकार केलौं तँ ओ नीके भेल किने?”

विचारकेँ मोड़ैत संगी काका बजला- “रूपलाल, तोरो बुझब अधला नहियेँ भेल, मुदा..?”

बजलौं- “की मुदा?”

संगी काका बजला- “आइ तीन माससँ अपने दर्दक बिमारीसँ परेशान छी, दिनो-दिन बिमारी बढ़िये रहल अछि, ऑपरेशन करबए पड़त। केत्ता दिन दुनू भाँइकेँ अपनो कहलिऐ मोबाइलसँ आ माइयो कहलकै मुदा दुनूमे सँ कियो कान-बात नहि दइए।”

बजलौं- “जँ कान-बात नहि दइ छैथ तँ अप्पन जमीन-जायदाद अछि किने,

बेचिकऽ ऑपरेशन करा लिअ।”

संगी काका बजला-

“कहलह तँ बेस बात, अपने पेटक बिमारीसँ ग्रसित छी आ पत्नीक दुनू आँखि खराव भऽ गेल छैन, गाममे तँ अन्दाजोसँ चलियो-बुलि लइ छैथ आ कोनो-कोनो काजो कऽ लइ छैथ, मुदा जैठाम ऑपरेशन कराएब तैठाम हुनका बुत्ते किछु कएल हेतैन?”

बजलौं-

“हँ, से तँ नहियेँ हेतैन।”

संगी काका बजला- “जइ बेटा ले की-की ने केलौं से बेटा आइ बेटा रहल?”

बजलौं-

“हँ से तँ नहियेँ रहल।”

संगी काका बजला-

“तोहीं कहह जे एते केकरा-ले केलौं?”

की बजितौं, चुप्पे रहि गेलौं। ❑

सुखाइत जीवनमे नव कलश

क्लास चलि रहल छल। नौमा क्लासमे पढ़बैत शिक्षककेँ लगमे आबि चपरासी फुसफुसा कऽ कहलकैन-

"हेड मास्टर सहाएब कहलैन अछि जे गणेशीकेँ छुट्टी दऽ दियौ।"

जहिना चपरासी शिक्षककेँ कहलकैन तहिना शिक्षक गणेशीकेँ कहलखिन-

"गणेशी, एम्हर आ।"

लगमे अबिते गणेशीकेँ कहलैन-

"तोरा छुट्टी दइ छियौ।"

विद्यालय कोनो होइ, उच्च विद्यालय होइ कि मध्य विद्यालय आकि प्राथमिक विद्यालय, साधारण छात्रकेँ छुट्टी पेबिते जहिना खुशी होइए तहिना गणेशीकेँ सेहो भेल। अप्पन किताब-कॉपी नेने गणेशी विदा भेल।

अखन तक गणेशी ई नइ बुझने छल जे दुर्घटनामे हम्मर माता-पिताक मृत्यु भऽ गेल अछि।

गणेशीकेँ स्कूल गेलाक बाद अलोधनी (गणेशीक माए) आ यशोधर (पिता) संगे बाजार जा रहल छेलैथ। रास्तामे दुनूकेँ ट्रकसँ चप्पा पड़ि गेलैन। ट्रकक ड्राइवर दारू पीने बेमत्त छल। चप्पा पड़िते ड्राइवर दुनूकेँ छोड़ि पड़ा गेल। दोसर-तेसर कियो ने देखलक आ ने ड्राइवरे गाड़ी रोकलक। बाजारक रास्ता, लोकक आबा-जाही रहबे करइ। थोड़बेकालक बाद एक गोरे बाजारसँ घुमल अबैत रहए, वएह देखलक। देखलक जे सड़कपर दू गोरे गाड़ीसँ चप्पा पड़ि मरि गेल अछि। लहासकेँ चिन्हलक नहि, किएक तँ चक्का तरमे दुनू तेना दबा गेल जे शरीर छत-बिछत भेल पड़ल अछि। लहास लग ठाढ़ भऽ ओ आदमी हल्ला

केलक। हल्ला सुनि चारू दिसक लोक आ बाजार जाइत-अबैत लोकसभ सेहो एका-एकी जमा हुअ लगल। गाड़ी (ट्रक)कैँ कियो देखलक नहि, किएक तँ ड्राइवर अप्पन जान बँचबैक खियालसँ गाड़ी रोकलक नहि, आरो तेज गतिसँ पड़ाएल।

एक्के-दुइये लोक जमा होइत-होइत मेला जकाँ करमान लगि गेल। लहासकैँ उनटा-पुनटा देखलक तखन चिन्हलक जे राघोपुरक दुनू परानी यशोधर छी।

बैशाख-जेठक हवामे लगल आगि जकाँ समाचार चारू दिस पसैर गेल। वएह समाचार राघोपुरसँ कोस भरि हटल हाइ स्कूलक शिक्षक सभक बीच सेहो पहुँचल छेलैन।

ओना, हाइ स्कूलमे एगारह टा शिक्षक छैथ, समाचार तँ सभकियो सुनलैन, मुदा स्कूलक प्रधानाध्यापक बेसी प्रभावित भेला। एतेक प्रभावित भऽ गेला जे हुनका देहमे थरथरी आबि गेलैन। एक तँ अप्पन स्कूलक छात्रक माता-पिता, दोसर अपने नि:सन्तान सेहो छैथ। ओना, एगारहो शिक्षककैँ अप्पन-अप्पन परिवार छैन्हे, आन-आन शिक्षकक आन-आन रूप छैन मुदा हेमन्तबाबूक परिवारक रूप सभसँ भिन्न छैन। एगारहो शिक्षकमे किछु गोरेक परिवार एहेन छैन जे परिवारसँ दिन-राति तंग रहै छैथ मुदा हेमन्तबाबूकैँ परिवारक दोसर चिन्ता छैन। हुनकर चिन्ता छैन नि:सन्तान हेबाक। संयोग एहेन भेल छैन जे भैयारीमे असगरे छैथ।

स्कूलक शिक्षको सभ आ गाम-समाजोक लोक हिनका बहुत कहलकैन जे दोसर बिआह कऽ लिअ, मुदा हेमन्तबाबू किनको विचार नहि मानलैन। आब तँ सहजे पचपन-छप्पन बर्खक उमेर भऽ गेलैन अछि।

दुनू परानी यशोधरक मृत्यु सुनि हेमन्तबाबू जेना संवेदनशून्य भऽ गेला। सकदम्म भेल हेमन्तबाबूक मनमे अनेको रंगक विचार बरखा-पानिक बुलबुला जकाँ अपने उठबो करैन आ अपने फुटबो करैन। गणेशी जेना हिनका हियमे गड़ि गेलैन। माता-पिता जहिना बच्चाक जन्मदाता गुरु होइ छैथ तहिना ज्ञानदाता गुरु शिक्षक सेहो होइते छैथ। मन कहलकैन, गणेशी भलेँ यशोधरक सन्तान छी मुदा

अपनो तँ बेटातुल्य छात्र सेहो छीहे। आब ओइ बच्चाक की दशा हएत? घटनाक गहराइमे जेतेक हेमन्तबाबू पहुँच रहल छला तेतेक हुनकर मन उद्विग्न भेल जा रहल छेलैन। देहमे थरथरी सेहो बढ़ले जा रहल छेलैन। अन्तमे विद्यालयमे छुट्टी दऽ देलखिन। विद्यालयमे छुट्टी भेलाक बाद शिक्षको सभ आ छात्रो सभ तँ अप्पन-अप्पन घर दिसक रास्ता पकड़लैन मुदा हेमन्तबाबू गणेशी ऐठाम विदा भेला। ओना, अप्पन परिवारक कियो कननिहार यशोधरकेँ नहि छेलैन मुदा गाम-समाजक लोक जरूर कानि रहल छल। बाल-बोध गणेशी अदंकसँ चेतनशून्य जकाँ भऽ गेल छल। मुहसँ किछु निकैल नहि रहल छेलइ। समाजो तँ समाज छीहे। आजुक मनुक्खमे केतबो एकाकीपन किए ने आबि गेल अछि मुदा तैयो एतेक सामाजिकता तँ जीवित अछिए जे एहेन-एहेन बेर-बिपैतमे लोक एक-दोसराक आगूमे ठाढ़ होइते छैथ। एक गोरे कफन आ कुर्ताक कपड़ा खातिर रुपिया देलखिन। एक गोरे कपड़ा अनैले बाजार गेला। एक गोरे चचरी बनबैले बाँस देलखिन। एक गोरे लहासकेँ जरबैले जरना गछि लेलखिन। ऐ तरहेँ लहास जरबैक सभ ओरियान देखिते-देखिते भऽ गेल।

लहास जरौलाक बाद कर्ताक सभ ओरियान सेहो समाजेक लोक कऽ देलखिन। विधिवत दुनू परानी यशोधरक श्राद्ध-कर्म भेलैन।

दुनू परानी- यशोधरक मृत्युक आइ पनरहम दिन छी। काल्हि सत्यनारायण भगवानक पूजा सेहो सम्पन्न भऽ गेल। गणेशीक मामा-मामीक आ पिसियौत भाय मात्र अखन तक राधोपुरमे छैथ। अपनामे, माने गणेशीक मामा-मामीक संग पिसियौत भाइक बीच, विचार-विमर्श चलि रहल छल जे आगूक लेल गणेशीकेँ की हेबा चाही.? ओना, आर्थिक दृष्टिसँ दुनू परिवार, माने मामो आ पिसियौत भाइयोक परिवार ओतेक नीक नहि जे गणेशीक खर्च उठा ओकरा आगू पढ़ा सकता। मुदा एते तँ मनमे रहबे करैन जे गणेशी तेरह-चौदह बर्खक भइये गेल अछि, अपनो नोकरी-चाकरी करिकऽ जीवन चला सकैए। जखन भगवान एहेन बिपैत वेचाराकेँ दऽ देलखिन तखन कहुना-ने-कहुना जीवित रहैक तँ छइ। जखन छेँटगर हएत तखन बिआह-दान हेतै, अप्पन परिवार हेतै, अपना गाम-घरमे रहत। दुनूक बीच, माने गणेशीक मामा आ पिसियौत भाइक बीच गप-सप्प चलिये रहल

छल कि तैबीच गोपीनाथ आएल। अबिते गोपीनाथ गणेशक मामाकेँ कहलखिन- "चारिम दिन हम मुम्बइ जाएब, गणेशीकेँ अपना संग नेने जेबइ।"

गोपीनाथ गामक एकटा नवयुवक। जहिना शरीरसँ हट्ठा-कट्ठा तहिना विचारसँ सेहो कर्मठ आ इमानदार अछि। दस बर्खसँ मुम्बइमे रहैए। शुरूमे, माने पहिले-पहिल जखन गोपीनाथ मुम्बइ गेल, तखन बेसी पढ़ल-लिखल नइ रहने लिखा-पढ़ीक नोकरी तँ नइ भेलै मुदा कारखानामे श्रमिकक नोकरी भऽ गेलइ। गोपीनाथ जहिना काज करैमे पीच्छड़ तहिना चरित्रसँ इमानदार सेहो अछिए। तीन साल बीतला पछाइत गोपीनाथकेँ सेठ, माने कारखानादार, कारखानासँ अप्पन कोठीक काजमे लऽ अनलक। कोठीमे अबिते परिवारेजन जकाँ गोपीनाथ सेहो रहए लगल। अपने परिवार जकाँ गोपीनाथ काज करए लगल। सेठक एहेन विश्वासपात्र गोपीनाथ भऽ गेल जे परिवारे जन जकाँ सभ किछु सेठ सुमझा देलखिन। तेसर कियो ई नइ बुझैत जे गोपीनाथ नोकर छी। आन नोकर जकाँ सेठ गोपीनाथकेँ दरमाहाक रूपमे निश्चित रकम नइ दइ छथिन। खाँहिसक हिसाबसँ मुँहमंगा दइ छथिन।

गोपीनाथक विचार सुनि गणेशीक मामा कहलकैन- "हम भलेँ गणेशीक माम छी मुदा अहाँ तँ समाजक भाय-बन्धु छिऐ। जहिना हमरा मनमे अछि जे गणेशीक बिलटैत परिवार कहुना जीवित रहए तहिना तँ अहूँक मनमे अछिए। तँए जँ गणेशीकेँ आगू ठौर भेट जाइ तँ मुम्बइ लऽ जाइमे कोनो हर्ज नहि।"

गणेशीक मामाक विचार सुनि पिसियौत भाय गंगाराम कहलखिन-

"गोपीनाथ, एक गड़ूकेँ बहत्तैर आशा होइ छै। कनियोँ-कनियोँ जँ सभकियो गणेशीकेँ मदैत कऽ देबै तँ बेचाराक जीवन उठिकऽ ठाढ़ भऽ जाएत। भेल तँ तेरह-चौदह बर्खक अछिए, पाँच-सात बरख जँ दोसराक सहारा भेट जाइ तँ गणेशीक परिवार फेर ओहिना बनि जाएत जहिना अखन तक जीवित माता-पिताक बीच छेलइ।"

गोपीनाथ मने-मन विचारि रहल छल जे समाजमे लोक भीखकेँ दान बुझि एक मुट्ठी अन्न वा एक मुट्ठी खाइले दइए तँ ओ होइए दान, मुदा केकरो जीवन सुधारि देब, ओ तँ ओहोसँ पैघ दान भेल किने। जँ हमरा केने गणेशीक जीवन

सुधैर जाएत तँ हमरा लेल ऐसँ बेसी धर्मक काज की भऽ सकैए। गोपीनाथ गणेशीकेँ कहलक- “बौआ, तोरा कोनो चीजक ओरियान नइ करैक छौ, सभ बेवस्था हम करब। परसू गाड़ी पकड़ैले तहूँ तैयार होइहेँ।”

गोपीनाथक विचार सुनि गणेशीक मामा सेहो गणेशीकेँ कहलखिन- “बौआ, आइ हमरा संगे चल, काल्हि भरि रहिहेँ आ परसू चलि अबिहेँ।”

मामाक संग गणेशी मात्रिक चलि गेल।

तेसर दिन गणेशी मात्रिकसँ आबि गोपीनाथक संग मुम्बइ विदा भेल।

समय अपना गतिये चलिये रहल अछि। मुम्बइ पहुँचलापर गोपीनाथ अप्पन सेठकेँ सभ बात कहि गणेशीकेँ अपने संग नोकरी रखा देलक। गणेशी नोकरी करए लगल।

सात दिन तक गोपीनाथ गणेशीकेँ किछु ने कहलक। आठम दिन, साँझू पहरमे जखन दुनू गोरे काजसँ निचेन भेल तखन गोपीनाथ गणेशीकेँ कहलक-

“बौआ गणेश, अखन तूँ बाल-बोध छँह, ई मुम्बै छी, तँए लहक-चहकमे नहि पड़ि अप्पन जीवनकेँ बनबैमे लागि जो।”

गणेशी बाजल- “भैया, अहाँ जे कहब हम सएह करब।”

गोपीनाथ-

“दिन भरि काज कर। राति-के तँ कोनो काज नहि रहतौ। तीन घन्टा, चारि घन्टा पढ़-लिख। एते दिन ने गाममे माता-पिताक भरोसे जीबै छेलँह, आब तँ ओ नहि छथुन तँए अपना भरोसे जीबैक रास्ता पकड़।”

गोपीनाथक विचार गणेशी मानि अप्पन जीवनक पाछू अपनाकेँ लगा देलक।

समय बीतैत गेल। देखिते-देखिते गणेशीकेँ पाँच बरख मुम्बइमे भऽ गेल। अखन तक गणेशी ने एको मासक दरमाहा उठौलक आ ने अपना पाइसँ लता-कपड़ा कीनलक। सभ जोगार गोपीनाथ सेठकेँ कहि करैत रहल। ऐ पाँच सालमे गोपीनाथ तँ तीन-चारि बेर गाम एबो कएल मुदा गणेशी एको बेर गाम नहि आएल।

पाँच बर्खक पछाइत गणेशी जवान भऽ गेल। पाँचो सालक दरमाहाक हिसाब केने बिना गोपीनाथ सेठकेँ कहलखिन-

"मालिक, गणेशीक घर बसा दियौ।"

हँसैत सेठ गोपीनाथकेँ कहलखिन-

"बड़बढ़ियाँ।"

फुटि कऽ जवान भेल गणेशी गोपीनाथक संग गाम आएल। गाममे तीन कोठरीक मकान बनौलक। मकान बनेलाक बाद बिआहक दिन सेहो तय भऽ गेलइ। बरियाती चलैले गणेशी, जइ स्कूल छोड़ि मुम्बइ गेल छल तइ स्कूलक सभ शिक्षककेँ, स्कूलपर जा हेमन्तबाबूक सोझामे आग्रह केलकैन। हँसैत हेमन्त बाबू बजला-

"गणेशी, तोहर सुखाएल जीवनमे नव कलश कलैश रहल छह, तँए दोसर कियो बरियाती जाथि वा नइ जाथि, हम जरूर जेबह।" ❑

पीपरक गाछ

रविकान्त बाबूकेँ जखन डेढ़ बरख सेवा निवृत्तिमे बाँकी रहलैन तखन बाढ़िमे गीरल घर-घराड़ीकेँ चिक्कन-चुनमुन बना दू-मंजिला मकान बनौलैन। निच्चाँ-ऊपर मिला आठ कोठरी रहैबला आ निच्चाँ-ऊपर दूटा दरबज्जा, माने ड्राइंग रूम आ भानसक लेल दूटा कीचैन, नहाइले बाथ रूमक संग दूटा लेटरीन रूम सेहो बनौलैन। रविकान्त बाबूकेँ दू बेटा आ दू बेटी छैन। दुनू बेटीक आ दुनू बेटोक बिआह-दान भऽ चुकल छैन। दुनू बेटी सासुर बसै छथिन आ दुनू बेटा दिल्लीमे, कारखानामे नोकरी करै छैन। ओना, दुनू बेटा अप्पन-अप्पन परिवारक संग दिल्लीएमे रहै छैन, मुदा भविष्यक आशापर बेटोक लेल, गामोमे घर बना रविकान्त बाबू अप्पन दायित्वक निमरजना कऽ लेलैन।

संयोग भेलैन, रविकान्त बाबूकेँ सेवा-निवृत्तिक पछाइत दू सालक एक्सटेन्शन भेलैन। भारतो सरकार आ बिहारो सरकारक सभ विभागमे स्टाफक कमी अछिए जइसँ रिटायरमेन्टक पछातियो दू साल नोकरी बढ़ि गेलैन। नोकरी बढ़ने रविकान्त बाबू अप्पन घरमे ताला लगा सरकारीए क्वार्टरमे रहि रहल छैथ। एक तँ गाम-घरमे भाड़ा-भुड़ी—माने घरकेँ किरायापर लगाएब—क चलैन नहि अछि दोसर, हुनका मनमे ईहो शंका रहैन जे जँ भाड़ापर घर लगाएब आ समयपर भाड़ादार घर नहि छोड़त तखन तँ अनेरे झंझट ठाढ़ हएत, तइसँ नीक ताला लगाकऽ राखबे हएत।

गाममे बनल रविकान्त बाबूक घर ओहिना-क-ओहिना ताला झुलैत खालीए रहलैन। गामक जेतेक अनेरुआ कुत्तासभ अछि तेकरो आ चिड़ै-चुनमुनीक सेहो ओ घर बास स्थल बनि गेल अछि। चिड़ै-चुनमनी सभ बर-पीपर आ कदम-पाखरिक फड़ खा-खा अबैत आ मकानोपर आ अगलो-बगलमे चट करैत। जइसँ अनेको बर-पीपरक गाछ घरक देवालोपर आ निच्चोँ सभमे जनैम

गेल। आन-आन गाछ सभ तँ सुइख गेलै मुदा दरबज्जाक आगूमे जे एकटा गाछ छल ओ बँचि गेल। साल बितैत-बितैत ओ गाछ छँटगर भऽ गेल।

रविकान्त बाबूक आवाजाही गाममे रहलैन नहि आ हिनका छोड़ि कियो देखो-भाल करैबला नहियेँ छला। रविकान्त बाबूकेँ अपनो मनमे विश्वास बनले छेलैन जे जखन घरमे ताला लगले अछि तखन ओ सुरक्षित अछिए।

दू सालक पछाइत, माने घर बनलाक दू सालक बाद, जखन पीपरक गाछ छँटगर भेल तँ गामक स्त्रीगणो सभ आ ढेरबा बच्चियो सभ ओइ पीपरक गाछक जड़िमे पानियो ढारए लगल आ जड़िकेँ छील-बना माइटिक पीरी सेहो बना देलक। नहेला पछाइत स्त्रीगणो सभ आ ढेरबा बच्चियो सभ ओइ ठाम बैस हनुमान चालीस, दुर्गा सप्तशती इत्यादिक पाठ सेहो करए लगल आ गाछक जड़िमे, माटिसँ थोड़ेक ऊपर कियो ललका डोरा, कियो ललका कपड़ा सेहो चारू कात लपेट-लपेट बान्हि देलक। आन दिन तँ कम्मो-सम्म मुदा रबिये-रबि भिनसरू पहरमे मेला जकाँ ओतए लागए लगल।

जैठाम लोक रहैत तहीठाम ने हाटो-बाजार आ मेलो-ठेलो लगैए, सएह भेल। दू-तीनटा मुरही-कचड़ीबला आ एकटा चाहबला अप्पन-अप्पन दोकान सेहो रबिये-रबि ओइठाम लगबए लगल। धीरे-धीरे ओइठामक दृश्य बदैल गेल। आजुक परिवेशो एहेन बनियेँ रहल अछि जे एक्कैसम शदीक तेसर दशक रहितो लोक अन्धविश्वासँ नीक जकाँ जकैड़ रहल अछि। जइसँ पूजा-अर्चनाक बढ़ोत्तरी भइये रहल अछि। गामक केतेको स्त्रीगणसभ ओइ पीपरक गाछक आगूमे एकटंगा दऽ दऽ कबुला-पाती करए लागल। अखन तक रविकान्त बाबूकेँ कोनो जानकारी नहि छेलैन, तँए निश्चिन्त छला।

रविकान्त बाबूक नोकरी समाप्त भऽ गेलैन। नोकरी समाप्त भेला पछाइत गाम एला तँ सभसँ पहिने भकरार भेल ओइ पीपरक गाछपर हुनकर नजैर पड़लैन। गाछ बढ़िकऽ पहिल तल्लासँ ऊपर उठि गेल अछि। गाछक लग आबि जड़िकेँ जखन हियाकऽ देखलैन तखन देखि पड़लैन जे गाछक जड़ि मकानक देवालसँ सटिकऽ अछि जइसँ किछु सिर देवालक भीतरो चलि गेल आ किछु सिर बाहरो अछि। जँ गाछकेँ अहिना छोड़ि देब तँ किछुए दिनक पछाइत तेतेक चतैर

जाएत जे घर-आँगनमे छाँह तँ कइये देत जे तैसंग घर लेल खतरनाक सेहो हएत। तेतबे नहि, जखन गाछ मोटाएत आ मोट-मोट ठाढ़ि हएत तखन हवा-बिहाड़िमे जान-मालक खतराक सम्भावना सेहो अछिए। बिना केकरो किछु कहने गाछ लग ठाढ़ भेल रविकान्त बाबू विचारए लगला जे की करब नीक हएत।

विचार करैत-करैत निर्णय केलैन जे गाछकेँ काटिये देब नीक हएत।

पत्नीकेँ शोर पाड़ि रविकान्त बाबू बजला-

"ऐ पीपरक गाछकेँ अगर छोड़ि देब तँ आगू नमहर खतरा उत्पन्न भऽ सकैए।"

आने स्त्रीगण जकाँ रविकान्त बाबूक पत्नी- अपराजित सेहो छथिये, दुनू हाथ जोड़ि गाछकेँ प्रणाम करैत बजली-

"पीपरक गाछ छी, ऐ गाछपर देवी-देवता रहै छैथ। तँए नीक छोड़ि अधला थोड़े हएत। देखिते छी जे लोक देवी-देवताकेँ अपना घरमे पीरी बना पूजै छैथ, अपनोसभ पूजब।"

रविकान्त बाबूक विचार सेहो थोड़-बहुत ढीलढीलाह छैन्हे, तँए स्पष्ट विचार करैमे हिचकिचा गेलाह। मने-मन जखन गाछक सम्बन्धमे सोचैथ तखन गाछक खतरा स्पष्ट देखि पड़ैन, मुदा जखन पत्नीक विचारपर गौर करए लगैथ कि एकाएक अप्पन विचार झलफला जाइन। किछु करैत किछु बनियेँ ने रहल छेलैन। समस्याक, माने गाछसँ उत्पन्न होइबला समस्याक पन्ना-पन्नापर जखन रविकान्त बाबू विचारैथ तखन आगूक खतरा स्पष्ट रूपमे देखि पड़ैन जे जखन दुइये सालमे गाछ बढ़िकऽ एतेक नमहर भऽ गेल अछि तखन पाँच साल बितैत-बितैत तेतेक नमहरो भऽ जाएत आ डारियोसभ मोटा-मोटा तेहेन भऽ जेतै जे खतरे-खतरा उपस्थित हएत। तँए, अखने गाछकेँ जड़िसँ काटि हटा देब तँ भविष्यक कोनो खतरा नहि रहत। पत्नी लग आबिकऽ रविकान्त बाबू पुन: बजला- "गाछकेँ काटिये देब नीक हएत।"

पतिक विचार सुनि अपराजित बजली- "एहेन गलती नइ करू। जँ कोनो राजादैव भऽ जाएत तँ की करब? लोक लगमे जवाबो देल हएत? सभ तँ कहबे

करत ने जे अपने केलहा ने भोगै छी.!”

पत्नीक विचार सुनि रविकान्त बाबूक अपनो मन डोलि गेलैन जे जँ कहीं पत्नियेक विचार सही होइन। फेर अपने मनमे विचार उठलैन जे गाछ-बिरीछक लेल सरकारक वन विभाग अछिए। तँए किए ने वन विभागक पदाधिकारीसँ सम्पर्क कऽ सभ बात कहिऐ।

दोसर दिन रविकान्त बाबू वन विभागक पदाधिकारीक नामसँ दरखास्त लिखि, वन विभागक अनुमण्डल कार्यालयमे पहुँचला। आवेदन दैत एस.डी.ओ.कैँ अप्पन समस्या मुहौँसँ कहि सुनौलखिन।

रविकान्त बाबूक सभ बात सुनि एस.डी.ओ. आश्वासन दैत कहलकैन-

“उचित कार्रवाइ कएल जाएत।”

एस.डी.ओ.क आश्वासनसँ रविकान्त बाबूक मनेमे खुशी भेलैन जे भने अप्पन जवाबदेही हटल। पनरह दिनक समय एस.डी.ओ. देने रहथिन। रविकान्त बाबू घरपर आबि पत्नीकैँ सभ बात सुना देलखिन।

पनरह दिन बीत गेल। वन विभाग दिससँ कोनो कार्रवाइ नहि भेल। सोल्हम दिन रविकान्त बाबू फेर वन विभागक कार्यालयमे पहुँचला। एस.डी.ओ.कैँ कहलखिन-

“अपने पनरह दिनक समय देने छेलौं, मुदा कोनो कार्रवाइ नहि भेल।”

टाल-मटोल करैत एस.डी.ओ. कहलकैन-

“अखन गाछ-बिरीछक गणना चलि रहल अछि, तँए काजक व्यस्तता तेते अधिक बढ़ि गेल अछि जे अवकाशक दुआरे अहाँक काज पछुआ गेल।”

रविकान्त बाबू बजला- “तखन?”

एस.डी.ओ. बजला-

“पाँच दिनक भीतर अहाँक काज भऽ जाएत।”

चारिम दिन वन विभागक दूटा कर्मचारी रविकान्त बाबू ऐठाम पहुँचला। गाछकैँ देखि बिना किछु बजने गाछक नम्बर, गाछोपर खोदि चढ़ा देलखिन आ

कागजोपर लिखि रविकान्त बाबूकेँ कहलकैन-

“आब ई गाछ सरकारी भऽ गेल, तँए कोनो तरहक उपद्रव नइ होइ।”

गिरगिराइत रविकान्त बाबू बजला-

“हम तँ एस.डी.ओ. साहैबकेँ गाछ काटैक आवेदनो देने छेलिऐन आ मुहोँसँ कहने रहिऐन?”

स्टाफ जवाब दैत कहलकैन-

“जँ गाछ सुखल रहैत तखन तँ सोझेमे कटबा दइतौं, मुदा जखन गाछ हरियर अछि, जीवित अछि तखन काटल केना जाएत।”

स्टाफक बात सुनि रविकान्त बाबू सकदम्म भऽ गेला। स्टाफ दिस टकटकी लगाकऽ तकैत रहि गेला मुदा हुनका मुहसँ किछु ने निकललैन। दुनू स्टाफ विदा भऽ गेल।

रविकान्त बाबू पत्नीकेँ कहलैन-

“आब की करब?”

मुस्कुराइत पत्नी जवाब देलकैन-

“कियो भावीकेँ रोकि सकैए। जे हेबाक हेतै से हेतै, तइले अनेरे ने माथ धुनै छी।”

एक तँ वन विभागक कर्मचारीक किरदानी देखि रविकान्त बाबूक मन भीतरे-भीतर जरिये रहल छेलैन तइपर पत्नीक विचार सुनि आरो मन लहरि गेलैन। मनमे उठलैन जे चारि घरमेचा पत्नीकेँ लगा दिऐन मुदा उम्रक लेहाज करैत लोक लाजक दुआरे ने किछु बजला आ ने किछु केलैन।

समय अपना गतिये चलिये रहल अछि। देखे-देखीमे मास दिन आरो गुजैर गेलैन। मास दिनक पछाइत रविकान्त बाबू विचारलैन जे वन विभाग दिससँ नइ ने गाछ काटल गेल, मुदा जँ गाछकेँ छोड़ि देब तखन तँ जानिकऽ भविष्यक खतरा कपारपर राखब हएत। गुनधुन करैत रविकान्त बाबू विचारलैन जे स्थानीय विधायक जे छैथ हुनकासँ कहिऐन। बुझल रहबे करैन जे विधायकजीक दहिना

हाथ मकशूदन छी। मकशूदन रविकान्त बाबूक पड़ोसिया छथिन। दुनू, माने स्थानीय विधायकजी आ मकशूदन एक्के पार्टीक लोक। एम.एल.ए.क चुनावमे मकशूदनजी जान लगा मदैत करै छैन।

मकशूदनकेँ रविकान्त बाबू सभ बात कहलैन। मकशूदन पटना चलबाक विचार देलकैन। दुनू गोरे पटना गेला। विधायकजीकेँ अप्पन सभ बात कहलखिन। आश्वासन दैत विधायकजी जवाब देलखिन- “मामूली काज ले पटना किए एलौं। अहाँ तँ गामोसँ फोन कऽ दितौं तैयो काज भऽ जाइत। अच्छा! अखन हम अपने तँ गाम नहि जाएब। डी.एम.केँ कहि दइ छिऐ अहाँक काज आठ दिनक भीतर भऽ जाएत।”

विधायकजीक आश्वासन सुनि रविकान्त बाबूक मन प्रसन्न भऽ गेलैन। खुशी-खुशी गाम एला।

आइ आठ दिनक बदला पनरह दिन बित गेल मुदा कोनो कार्रवाइ नहि भेलैन। एक तँ मकानक देवालक भीतर गाछक सिरकेँ मोटाइत देखि, दोसर प्रशासनसँ एम.एल.ए. तकक बेवहार देखि रविकान्त बाबूक मन भीतरे-भीतर जरिये रहल छेलैन, तैपर भविष्यक खतरा देखि आरो मन विचलित भऽ गेलैन। सोच-विचार करैत रविकान्त बाबूक मनमे उठलैन जे चुपचाप बैसियो जाएब उचित नहियेँ हएत। आशा बान्हि विचारलैन जे वन विभागक जिला कार्यालय जाइ।

दोसर दिन रविकान्त बाबू वन विभागक जिला कार्यालयमे पहुँचला। ओना, परिचित एकोटा कर्मचारी रविकान्त बाबूकेँ जिला कार्यालयमे नहि रहैन मुदा जिनगी भरिक अप्पन जे अनुभव छैन, तइ हिसाबसँ एकटा आवेदन लिखि ऑफिस जा जिला पदाधिकारीकेँ देलखिन। आवेदन पढ़ि पदाधिकारी पुछलकैन- “अहाँकेँ समस्या की अछि?”

विस्तारसँ सभ बात कहैत रविकान्त बाबू ईहो कहलखिन जे एस.डी.ओ. साहैब लग सेहो आवेदन देलिऐन। आश्वासन देलाक पछातियो ओ किछु ने केलाह। विधायकजीकेँ सेहो कहलयैन मुदा ओहो समय देलाक बादो किछु ने केलाह। हारि-थाकिकऽ अपनेक लग एलौं हेन।

पदाधिकारी-

“हम की कऽ सकै छी?”

रविकान्त बाबू-

“गाछ कटबा दियौ।”

पदाधिकारी-

“जखन समाजक लोक ओइठाम पूजा-अर्चना कऽ रहला अछि तखन तँ ओइठाम आस्थाक प्रश्न बनि जाइए। जैठाम समाजक आस्थाक प्रश्न अछि तैठाम प्रशासन की कऽ सकैए। तहूमे कहै छी जे वन विभाग दिससँ गाछक नम्बरिंग सेहो भऽ गेल अछि। आब गाछ काटैक कोन बात जे ओकर रक्षाक दायित्व सेहो सरकारक भऽ जाइ छइ।”

पदाधिकारीक विचार सुनि रविकान्त बाबूक मनक विचार मनेमे सुखए लगलैन। मुदा तैयो साहस बटोइर बजला-

“समाजक आस्थाक प्रश्न तँ ओइठाम उठत जैठाम सार्वजनिक स्थलक मुद्दा रहत। हम्मर मुद्दा तँ से नहि अछि, बेकतीगत अछि।”

पदाधिकारी कहलकैन-

“बेकतीगत मुद्दा हुअए कि सामूहिक, जे आस्थासँ जुड़ल अछि तइमे हम की कऽ सकै छी।”

रविकान्त बाबू बजला-

“किए ने किछु कऽ सकै छी, हमरो तँ बेकतीगत अधिकारक हनन भइये रहल अछि। जैठाम बेकतीगत अधिकारक हनन होइत रहत तैठाम सरकार आ प्रशासनक दायित्व नइ बनैए?”

ओना, रविकान्त बाबूक विचार सुनि जिला पदाधिकारीक मनमे ठहकबे केलैन जे शासन आ सत्ताक बीच समन्वय बनल रहक चाही, मुदा जे परिवेश बनि रहल अछि तइमे समन्वय बना राखब कठिन अछिए। असमंजसमे पड़ल पदाधिकारी रविकान्त बाबूकेँ कहलकैन- “अखन अहाँ जाउ, परसू दस बजेक

बाद अहाँक घरपर आबि हम देखब, पछाइत जे उचित हएत से कार्यवाइ करब।"

पदाधिकारीक आश्वासनक पछाइत रविकान्त बाबू घुमिकऽ घरपर एला। मन खसल रहने मुँह लटकल रहबे करैन। तैबीच, घाउपर जहिना नून पड़ैए तहिना पत्नी पुछि देलकैन-

"की भेल?"

रविकान्त बाबूक मन जरिकऽ खकसियाह भइये गेल रहैन। पत्नीक प्रश्न सुनि आँखि उठा पत्नीपर देलैन आ चुपचाप नजैर खसा धरती दिस देखए लगला।

❑

❑❑

❑❑❑

❑❑

❑

Notes